वर्ष 2018-19 का बजट आवंटन एवं प्राप्तियों तथा भुगतान का अनुमान

(राशि लाख रू. में)

क्रमांक	मद	बजट आवंटन
	प्राप्तियां	
1	राज्य शासन का बजट (आयोजना मद)	3715.00
2	विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग भारत सरकार से " Assistance for S&T Secretariat to the Sate Council for Science, Technology and Environment" हेतु प्रस्तावित वित्तीय सहायता **(प्रस्तावित)**	175.00
3	बाह्य प्रायोजित अन्य विभागों से प्राप्त परियोजना धनराशि	535.00
4	आंतरिक स्त्रोतों से प्राप्तियों का अनुमान **(IRGF)**	385.00
	कुल योग	**4810.00**

योजनावार प्रावधान एवं व्यय

क्र.	योजना का नाम	बजट आवंटन
1	अनुसंधान, योजना तथा विकासीय गतिविधियां	550.00
2	सामाजिक आर्थिक विकास के लिए विज्ञान	110.00
3	निर्देशन और प्रशासन	350.00
4	परिषद् की स्थापना तथा विश्वविद्यालय मेडिकल तथा इंजीनियरिंग महाविद्यालय में अधोसंरचना	660.00
5	विज्ञान को लोकप्रिय करना, विज्ञान के प्रसार हेतु सहायता	320.00
6	सुदूर संवेदन केन्द्र	350.00
7	मिशन एक्सीलेंस ऑफ एम.पी. हयूमन रिर्सोस	220.00
8	परिषद् के भवन निर्माण हेतु	150.00
9	विज्ञान पार्क की स्थापना	600.00
10	ग्रामीण तकनीक प्रयोग केन्द्र की स्थापना	100.00
11	एट्लस परियोजना	60.00
12	जलवायु परिवर्तन शोध केन्द्र की स्थापना	60.00
13	जैव प्रौद्योगिकी उपयोग केन्द्र	160.00
14	पेटेंट सूचना केन्द्र	25.00
	योग - अ	**3715.00**
1	परिषद् की प्रोफेशल सेकेट्रीयट मद - विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी भारत सरकार	175.00
2	परियोजनाओं के क्रियान्वयन हेतु व्यय	375.00
	योग - ब	**550.00**

प्रस्तावित अन्य भुगतान

1	Enhancement of Pay & Allowances of 7th Pay Scale	195.00
2	Incentive and awards to Staff	5.00
3	Social Security and Welfare Resources	10.00
4	Infrastructure – Maintenance / Replacement and Addition	50.00
5	Special Main Points – Resource Persons / Experts / Projects / Network Coordination.	20.00
	योग - स	**280.00**
	कुल योग - (अ + ब + स)	**4545.00**

आंतरिक संसाधन सृजन कोष (IRGF)

1. पृष्ठभूमि

राज्य शासन तथा केन्द्र शासन से प्राप्त धनराशि के अतिरिक्त परिषद् द्वारा स्वयं के स्त्रोतों से आंतरिक वित्तीय संसाधनों का प्रबंधन कर राशि अर्जित करने की कार्ययोजना प्रस्तावित है ।

2. समीक्षा/उपलब्धियां (2017-18)

वर्ष 2017-18 के अंतर्गत राशि रू. 266.93 लाख अर्जित की गई है ।

3. बजट प्रावधान

वर्ष 2018-19 में इसके अंतर्गत राशि रू. 385.00 लाख प्राप्त करने का अनुमान है । इसके अंतर्गत निम्न स्त्रोतों से राशि प्राप्त की जाऐगी:-

(राशि लाख रू. में)

क्र.	स्त्रोत	राशि
1	Project Consultancy and Administrative Overhead on Project (20% or above of Actual Receipts)	125.00
2	Training Programme	5.00
3	Service Charges	
A	Auditorium & Guest House	12.00
B	Taramandal Shows	8.00
5	Interest from Deposits	225.00
6	Miscellaneous Receipts	10.00
	Total – A	**385.00**

उपरोक्त अर्जित प्राप्तियों से निम्न मदों में व्यय करने का प्रावधान प्रस्तावित है:-

1	Enhancement of Pay & Allowances of 7th Pay Scale	195.00
2	Incentive and awards to Staff	5.00
3	Social Security and Welfare Resources	10.00
4	Infrastructure – Maintenance / Replacement and Addition	50.00
5	Others – Resource Persons / Experts / Projects / Network Coordination.	20.00
	Total – B	**280.00**

Saving Transfer to Consolated Fund (A-B) 105.00

A–1 सुदूर संवेदन केन्द्र

1. पृष्ठभूमि

प्राकृतिक संसाधनों के सर्वेक्षण, विकास एवं प्रबंधन में सुदूर संवेदन तकनीक की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस तकनीक को पूर्व प्रचलित पद्धति के साथ एकीकृत करने पर किसी भी क्षेत्र के बारे में जानकारी कम समय में एवं कम लागत में प्राप्त की जा सकती है। इसके साथ ही सुदूर संवेदन तकनीक द्वारा किसी भी समय की किसी भी क्षेत्र विशेष की जानकारी एक सुविधाजनक अवस्था में रखी जा सकती है, तथा जरूरत पड़ने पर इसका उपयोग किया जा सकता है। उपग्रह चित्रों की सहायता से किसी भी स्थान पर उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों के बारे में सही एवं अद्यतन जानकारी कम लागत तथा कम समय में प्राप्त की जा सकती है। भारत सरकार के अंतरिक्ष विभाग द्वारा अंतरिक्ष में उपग्रह भेजकर उपग्रह चित्र निरन्तर प्राप्त करने का कार्यक्रम बनाया गया है। राज्य शासन द्वारा प्रदेश के विकास में सहायता देने हेतु तथा प्राकृतिक संसाधनों के वैज्ञानिक प्रबंधन संबंधी गतिविधियों एवं योजना कार्यक्रमों में सुदूर संवेदन चित्रों एवं भौगोलिक सूचना प्रणाली (जी.आई.एस.) तकनीकों का उपयोग करते हुए म. प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् के अंतर्गत वर्ष 1984 में राज्य-स्तरीय सुदूर संवेदन उपयोग केन्द्र की स्थापना की गई। इस केन्द्र ने स्थापना के बाद संक्षिप्त अवधि में उपग्रह चित्रों का उपयोग करते हुए कई राष्ट्रीय महत्व की परियोजनाओं को पूरा किया है। इस केन्द्र द्वारा तैयार किये गये मानचित्रों का मध्यप्रदेश शासन के कई विभागों/संस्थाओं जैसे कृषि, वन, जल संसाधन लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी, आवास एवं पर्यावरण, राजस्व, नर्मदा घाटी विकास विभाग आदि द्वारा अपने विकास कार्यों में उपयोग किया जा रहा है। विगत वर्षों में केन्द्र ने म.प्र. शासन के विभिन्न विभागों को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से संबंधित प्रदेश के संसाधनों की अद्यतन जानकारियाँ प्रदान कर महत्वपूर्ण योगदान किया है। भविष्य में भी यह केन्द्र प्रदेश के प्राकृतिक संसाधनों के सर्वेक्षण एवं प्रबंधन में अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

2. कार्यक्रम विवरण

वित्तीय वर्ष 2018-19 में इस योजना के अंतर्गत प्रस्तावित कार्यों के संबंध में संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत है:

1.1 एडूसेट हब प्रभाग

1. पृष्ठभूमि

इसके अंतर्गत विज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिये उपग्रह तकनीक के माध्यम से अलग-अलग वर्ग कक्षा के छात्र-छात्राओं को आधुनिक विज्ञान, प्रायोगिक विज्ञान को रोचक बनाकर प्रसारित किया जाता है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग भारत शासन भारतीय सुदूर संवेदन संस्थान देहरादून इसरो एवं इग्नू नई दिल्ली के विज्ञान प्रचार प्रसार के समय-समय पर विभिन्न कार्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं।

2. समीक्षा एवं उपलब्धियां (2017-18)

- विज्ञान प्रसार; विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के कार्यक्रमों को आयोजित किया गया।
- विज्ञान प्रसार के समर स्पेशल फेशटीबल' कार्यक्रम को आयोजित किया गया।
- भारतीय सुदूर संवेदन संस्थान देहरादून इसरो के जियोस्पेशीअल तकनीकी के प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों को आयोजित किया गया।

- गॉधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यलाय के एडूसेट कार्यक्रमों को आयोजित किया गया।

3. सहयोगी/सहभागी संस्थायें

परिषद् के एडूसेट नोड़ पर विज्ञान प्रसार विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग भारत शासन भारतीय सुदूर संवेदन संस्थान देहरादून इसरो इग्नू नई दिल्ली एवं के कार्यक्रम एवं प्रशिक्षण को आयोजित करना।

4. उद्देश्य एवं लक्ष्य

- परिषद् एडूसेट हब का प्रशासनीक एवं तकनीकी प्रबंधन करना।
- विज्ञान प्रसार; विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के न्यूनतम 12 कार्यक्रमों को परिषद् एडूसेट नेटवर्क पर आयोजित करना।
- विज्ञान प्रसार के 'समर स्पेशल फेशटीबल' कार्यक्रम का आयोजन परिषद् के एडूसेट नेटवर्क द्वारा करना।
- भारतीय सुदूर संवेदन संस्थान, देहरादून; इसरो के जियोस्पेशीअल तकनीकी के प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों को परिषद् के एडूसेट नेटवर्क पर आयोजित करना।
- इंदिरा गॉधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यलाय के एडूसेट कार्यक्रमों को परिषद् में एडूसेट द्वारा आयोजित करना।

5. कार्यक्रम विवरण

उपग्रह आधारित एडूसेट तकनीक के द्वारा दूरस्थ क्षेत्रों में भी विज्ञान का प्रचार-प्रसार एवं विशेषज्ञों द्वारा गुणवत्तायुक्त विज्ञान शैक्षणिक व्याख्यानों, प्रायोगिक प्रदर्शन, प्रशिक्षण कार्यक्रम को रोचक बनाकर एडूसेट से परिषद् में प्रसारण मध्यस्थ वार्तालाप कर समाधान प्राप्त करना एवं विज्ञान विषयों की विभिन्न प्रयोगिक सामग्रियों का प्रदर्शन एडूसेट से करना।

6. अपेक्षित परिणाम

प्रदेश के विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों में क्षमता निर्माण करना है। विज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिये उपग्रह तकनीक एडूसेट के माध्यम से अलग-अलग वर्ग कक्षा के छात्र-छात्राओं को आधुनिक विज्ञान प्रायोगिक विज्ञान को रोचक बनाकर प्रसारित करना है।

1.2 डाटा लाइब्रेरी एवं विजुअल इन्टरप्रिटेशन

1. पृष्ठभूमि

केन्द्र की डाटा लायब्रेरी में 1:250000 एवं 1:50000 मापक पर विभिन्न वर्षान्तर के पेपर प्रिंट एवं उच्च आवर्धी डिजीटल डेटा उपलब्ध है। इनका उपयोग केन्द्र एवं प्रदेश के अन्य संस्थानों, शिक्षण संस्थाओं के शोधार्थियों द्वारा प्राकृतिक संसाधनों के मानचित्रण एवं सर्वेक्षण में किया जाता है। वर्तमान में इन उपग्रह डेटा पंजीकरण एवं एक्सेसन का कार्य पूर्णतः कम्प्यूटरीकृत किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त डेटा लायब्रेरी में विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों के थिमेटिक मानचित्र, संदर्भ पुस्तिका एवं रिपोर्ट आदि शोध कार्य एवं सहायक डेटा के रूप में उपलब्ध है।

2. समीक्षा एवं उपलब्धियां (2017-18)

- विगत वर्ष उपलब्ध उपग्रह डेटा एवं थिमेटिक मानचित्रों का उपयोग परिषद् के वैज्ञानिकों द्वारा केन्द्र में परिचालित विभिन्न परियोजनाओं के अंतर्गत प्राकृतिक संसाधन मानचित्रण में किया गया।
- उपलब्ध डेटा का रखरखाव एवं परियोजनाओं की आवश्यकतानुसार अद्यतन डेटा का क्रय किया गया।

3. सहयोगी/सहभागी संस्थाएं

सर्वे ऑफ इन्डिया / ऑल इंडिया स्वाइल एण्ड लैंडयूस सर्वे राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केन्द्र आदि।

4. उद्देश्य एवं लक्ष्य

- उपलब्ध डेटा का रखरखाव एवं परियोजनाओं की आवश्यकतानुसार अद्यतन डेटा का क्रय।
- वार्षिक भौतिक सत्यापन करना।

5. कार्यक्रम विवरण

लाईब्रेरी में उपलब्ध उपग्रह डाटा एवं आवश्यकतानुसार क्रय किए गये अद्यतन डाटा वैज्ञानिकों एवं अन्य संस्थाओं के शोधार्थियों को उपलब्ध कराया जायेगा। लाईब्रेरी को पूर्णतः कम्प्यूटरीकृत किया जायेगा।

6. अपेक्षित परिणाम

उत्कृष्ट डाटा लाइब्रेरी का निर्माण करना।

1.3 कौशल विकास योजना

मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद्, भोपाल कौशल विकास योजना के अंतर्गत अपने विभिन्न केन्द्रों एवं लेब जैसे: सुदूर संवेदन उपयोग केन्द्र, ग्रामीण तकनीकी उपयोग केन्द्र, तकनीकी प्रबंधन केन्द्र, प्रो. टी.एस. मूर्ति फील्ड स्टेशन, गुणवत्ता आश्वासन प्रयोगशाला, एडूसेट लेब आदि के माध्यम से विद्यालय/महाविद्यालय के छात्रों, प्राध्यापकों, अनुसंधानकर्ताओं, किसानों को सुदूर संवेदन, बायोटेक्नोलॉजी, चर्म, जैविक कृषि, मशरूम उत्पादन, बॉस उत्पादन, वर्मीकम्पोस्टिंग, पानी की गुणवत्ता जॉच आदि के क्षेत्रों में प्रशिक्षण प्रदान करता है। उपरोक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से विगत वर्ष (2016-17) लगभग 271 प्रतिभागियों को लाभांवित किया गया है, जिसके परिणामस्वरूप उन्होंनें अपने अर्जित ज्ञान को अपनी जीविका, अनुसंधान कार्य एवं अग्रज अध्ययन के क्रियान्वयन में उपयोग किया। इसका मुख्य उद्देश्य प्रतिवर्ष प्रतिभागियों को विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करके एवं भारत के प्रमुख संस्थानों के प्रतिष्ठित वैज्ञानिक/प्रोफेसर के व्याख्यान द्वारा प्रशिक्षण प्रदान करना है। मध्यप्रदेश व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण परिषद् भोपाल की वेबसाइट पर प्रत्येक प्रतिभागी का विवरण प्रविष्ट किया जाता है। समाचार पत्रों में विज्ञापन एवं ऑन-लाइन आवेदन के द्वारा प्रतिभागियों को आमंत्रित किया जाता है। प्राप्त आवेदनों को प्रक्रिया में लिया जाता है, बेच बनाये जाते हैं एवं निर्धारित समय में प्रशिक्षण दिया जाता है।

लक्ष्य वर्ष 2018-19

सुदूर संवेदन उपयोग केन्द्र, ग्रामीण तकनीकी उपयोग केन्द्र, तकनीकी प्रबंधन केन्द्र, प्रो. टी.एस. मूर्ति साइंस स्टेशन, गुणवत्त प्रयोगशाला, एडूसेट लेब आदि के माध्यम से विद्यालय/महाविद्यालय के छात्रों, प्राध्यापकों, अनुसंधानकर्ताओं, किसानों को सुदूर संवेदन, बायोटेक्नोलॉजी, चर्म, जैविक कृषि, मशरूम उत्पादन, बॉस उत्पादन, वर्मीकम्पोस्टिंग, पानी की गुणवत्ता जॉच आदि के क्षेत्रों में प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से 400 प्रतिभागियों को प्रशिक्षित करना।

1.4 वन एवं पर्यावरण प्रभाग

1. पृष्ठभूमि

सुदूर संवेदन उपयोग केंद्र के इस समूह द्वारा वन एवं पर्यावरणसे संबन्धित परियोजनाओं का कार्यान्वयन किया जाता है।ये परियोजनाएं राज्य एवं केंद्र शासन द्वारा प्रायोजित होती है। इनमें मुख्यत: वन संसाधन एवं उत्पादन, वन क्षेत्रफल, वन क्षेत्रों का धनत्व एवं प्रकार, वन्यप्राणियों केरहवास एवं उपयुक्तता की मॉडलिंग, प्रस्तावित एवं घोषित बायोस्फियर्स रिजर्व के भूमि उपयोग/आवरण का मानचित्रण, खनन एवं औधोगिकीकरण के कारणपर्यावरण पर होने वाले प्रभाव का अध्ययन एवं वन अग्नि के प्रभाव तथा मानचित्रण तथा प्रदेश की बायोडायवर्सिटी का आंकलन आदि होते हैं।

• सुदूर संवेदन एवं जी.आई.एस. तकनिकी से रेशम उत्पादन का विकास (द्वितीयचरण) - परियोजना

1. पृष्ठ भूमि

वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रेरित इस परियोजना का मुख्य केंद्र उत्तर पूर्वी अन्तरिक्ष केंद्र (NESAC), मेघालय है। उत्तर पूर्वी अन्तरिक्ष केंद्र (NESAC) की सहायता से वस्त्र मंत्रालय पूरे देश में रेशम उत्पादन की संभावनाओं को खोजने का कार्य कर रहा है। परियोजना का प्रथम चरण वर्ष 2013 में सफलता पूर्वक पूर्ण किया गया एवं इस परियोजना को "18 वीं राष्ट्रीय ई गवर्नेस सम्मेलन" में राष्ट्रीय पुरस्कार,दिनाँक 30-31 जनवरी 2015 को गांधीनगर, गुजरात में प्रदान किया गया।

परियोजना के द्वितीय चरण के लिये केन्द्रीय सिल्कबोर्ड (CSB) द्वारा देश में रेशम पालन हेतु 50 और संभावित जिलों का चयन किया गया है। यह परियोजना मुख्यतः मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र,उत्तरप्रदेश,उत्तराखंड, बिहार,झारखंड,छत्तीसगढ़, केरल, उड़ीसा, पंजाब आदि प्रदेशों में चलायी जा रही है।

2. समीक्षा एवं उपलब्धिया (वर्ष 2017-18)

इस परियोजना के अंतर्गत मध्यप्रदेश में रेशमकीट के खाद्य पौधों के विकास एवं रेशम उत्पादन के लिए चयनित बुरहानपुर, छिंदवाड़ा, मंडला एवं बालाघाट जिलों हेतु ढाल, मृदा एवं पडत भूमि की लेयर तैयार की गई।

3. उद्देश्य एवं लक्ष्य

इस परियोजना का मुख्य लक्ष्य मध्यप्रदेश के शहतूत और गैर-शहतूत पौधों पर में रेशम कीट के विकास के लिये संभावित क्षेत्रों एवं वृक्षों की पहचान कर प्रदेश के रेशम उत्पादन में वृद्धि करना है।

4. सहयोगी एवं सहभागी संस्थाएं

यह परियोजना केन्द्रीय सिल्क बोर्ड (सीएसबी), वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वित्त पोषित है, एवं उत्तर -पूर्वी अंतरिक्ष उपयोग केन्द्र, अंतरिक्ष विभाग, भारत सरकार, उमियम मेघालय तथा रेशम विभाग मध्यप्रदेश शासन के सहयोग से संचालित की जा रही है।

5. कार्यक्रम विवरण

इस परियोजना में चयनित जिलों के परियोजना उद्देश्य के अनुसार आवश्यक विभिन्न विषयवार मानचित्रों एवं मौसम के आकड़ों का डेटाबेस तैयार किया जावेगा। इस डाटा बेस के आधार पर रेशम पालन उपयुक्तता, आकलन का कार्य किया जावेगा, तथा प्राप्त परिणामों को उत्तर पूर्वी अन्तरिक्ष केंद्र (इसरो), मेघालय द्वारा राष्ट्रीय वेब पोर्टल पर डाला जावेगा।

6. कार्य योजना

इस परियोजना में चयनित मंडला एवं बालाघाट जिलों के संभावित वाष्पन-उत्सर्जन (PET) और दीर्घावधि विकास (LGP) का आकलन करना।

7. समय सारणी

प्रथम तिमाही	द्वितीय तिमाही	तृतीय तिमाही	चतुर्थ तिमाही
• मंडला एवं बालाघाट संभावित वाष्पन-उत्सर्जन (PET) और (LGP) का आकलन करना। • बुरहानपुर एवं छिंदवाड़ा संभावित वाष्पन-उत्सर्जन (PET) और (LGP) का आकलन करना। • सभी लेयर को रेशम कीट के खाद्य पौधों की उपयुक्तता के मानदंड के अनुसार समाकलित करना। • तैयार चयनित जिलों के मानचित्रों का स्थल सत्यापन।	• चयनित जिलों के डेटाबेस में आवश्यकता अनुसार त्रुटियों मे सुधार करना। • उत्तर पूर्वी अन्तरिक्ष केंद्र,मेघालय के मापदंड के अनुसार मानचित्रों को कोंपोस करना। • उत्तरपूर्वी अन्तरिक्ष केंद्र, मेघालय के पर्यवेक्षण में चयनित जिलों के तैयार डेटाबेस को समाकलित एवं विश्लेषण करना। • रिपोर्ट लेखन का कार्य करना।	--	--

8. अपेक्षित परिणाम

इस परियोजना में तैयार डेटाबेस की सहायता से ब्लॉक/तालुका और जिलेवार रेशमकीट के भोजन उपयोगी पौधों के विकास के लिये उपयुक्त क्षेत्र की पहचान कर रेशम उत्पादन को बढ़ाना है। एकत्रित सभी जानकारी सिल्क वेब पोर्टल पर उपलब्ध रहेगी तथा रेशम पालन हितग्राहियों को रेशमकीट, मौसम, उत्पादन, लागत तथा रेशम के उत्पादों के लिये बाजार की जानकारी उपलब्ध करावेगी।

1.5 भू-संसाधन प्रभाग

1. पृष्ठभूमि

भू-संसाधन प्रभाग द्वारा भूसंसाधन से संबंधित परियोजनाओं/गतिविधियों को संपादित किया जाता है। वर्तमान में इस प्रभाग द्वारा समूचे मध्य प्रदेश के ज्योमार्फोलॉजिकल एण्ड लीनियामेंट मैपिंग, व्हद मापक पर ज्योमॉर्फोलॉजिकल मानचित्रण एवं डेजर्टिफिकेशन स्टेटस मानचित्रण का कार्य किया जा रहा है। मिशन मून के अंतर्गत् चंद्रयान के आँकडों का विश्लेषण कर चन्द्रमा की सतही गतिविधियों का अध्ययन भी इस प्रभाग द्वारा किया गया। भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा प्रायोजित प्रोग्राम एडवाइजरी कमेटी ऑन अर्थ साइंसेस एवं स्टेट एसएण्डटी की कोर ग्रुप की बैठकें भी इस प्रभाग द्वारा आयोजित की जाती हैं। प्रदेश में आपदाओं एवं अन्य प्राकृतिक घटनाओं का अध्ययन जैसे भूकंपीय गतिविधियां, प्राकृतिक गैस का उत्सर्जन तथा इस प्रकार की अन्य भूगर्भीय गतिविधियों से संबंधित कार्य का समन्वय एवं संपादन भी इस प्रभाग द्वारा किया जाता है। कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार प्रस्तुत है:

भूमि क्षरण का मांचित्रण 1:50,000 मापक पर चक्र-2

1. पृष्ठभूमि

राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र, अंतरिक्ष विभाग, इसरो द्वारा मध्य प्रदेश राज्य के सुदूर संवेदन उपयोग केंद्र के साथ मिलकर 1:50,000 मापक पर 2005-06 के टेम्पोरल लिस-III डाटा की मदद से समूचे प्रदेश का भूमि क्षरण का मांचित्रण का कार्य किया जा चुका है, प्रकृति मे भूमि क्षरण अत्यंत ही गतिशील प्रक्रिया है जिसकी नियमित रूप से निगरानी की आवश्यकता है इसलिए यह विचार किया गया कि इस से संबन्धित जानकारी को हर दस वर्षो मे नवीनीकृत किया जाएगा एवं इस से भूमि क्षरण की स्थिति मे जो परिवर्तन आयेगा उसकी जाँच कर रिपोर्ट तैयार की जाएगी।

2. समीक्षा/उपलब्धियाँ (वर्ष 2017-18)

इस परियोजना के अंतर्गत मध्य प्रदेश के 2005-06 एवं 2015-16 के लिस-III डेटा का उपयोग कर भूमि क्षरण का 1:50,000 मापक पर मैनुअल अपडेशन का कार्य पूर्ण किया गया एवं गुणवत्ता के लिए भू.सत्यापनए लवणीय मृदा संभावित क्षेत्रों में मृदा नमूनों को एकत्रित कर प्रयोगशाला में उनकी जाँच की गयी। मैनुअल अपडेशन से 10 वर्षों में भूमि क्षरण की स्थिति मे हुए परिवर्तन का पता लगाकर रिपोर्ट तैयार की जा रही है ।

डेसर्टिफिकेशन एण्ड लैंड डेग्रेडेशन रू मॉनिटरिंग, वल्नेरेबिलिटी असेस्मेंट एण्ड कॉम्बेट प्लान

1. पृष्ठभूमि

मरुस्थलीकरण एवं भूमि क्षरण एक भयावह भू-पर्यावरणीय वैश्विक समस्या मे से एक है जिससे दुनिया के दो तिहाई देश प्रभावित है । प्राकृतिक प्रक्रियाए, जलवायु परिवर्तन एवं मानव गतिविधियों के कारण भूमि क्षरण के द्वारा भूमि की उत्पादक क्षमता मे कमी हो रही है । शुष्क, अर्ध-शुष्क एवं शुष्क उप-आर्द्र क्षेत्र में भूमि क्षरण को मरुस्थलीकरण कहते है । हाल ही के वर्षो में देखा गया कि विश्व स्तर पर मरुस्थलीकरण एवं भूमि क्षरण कि प्रक्रिया मे तेजी आई है । यह मरुस्थलीकरण एवं भूमि क्षरण से मुकाबला करने के लिए वैश्विक प्रयास है जो कि यूनाइटेड नेशन कनवेनशन फॉर कॉम्बेटिंग डेसेर्टिफिकेशन एण्ड लैंड डेग्रेडेशन (यूएनसीसीडी) के द्वारा किया जा रहा है । भारत यूएनसीसीडी के लिए हस्ताक्षरकर्ता है एवं 2030 तक मरुस्थलीकरण तटस्थ स्थिति प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध है ।

2. उद्देश्य

इस परियोजना के अंतर्गत किए जाने वाले कार्यों को मुख्य रूप से तीन भागों में विभाजित किया गया है

1. रिसर्च एवं डेव्लपमेंट

- मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ में भूमि क्षरण के मानचित्रण के लिए डिजिटल क्लासिफिकेशन तकनीक का विकास किया जाना प्रस्तावित है ।
- भूमि क्षरण की इकाईध्सूचक को पहचानने में नए सेन्सर जैसे माइक्रोवेव एवं हाइपरस्पेक्ट्रल को कैसे उपयोग में लाया जा सकता है ।

2. सेमी-ऑपरेशनल

- मध्य प्रदेश के मुरेना एवं छत्तीसगढ़ के रायपुर जिलों के मरुस्थलीकरण एवं भूमि क्षरण का **1:50,000** मापक पर वल्नेरेबिलिटी असेस्मेंट के लिए कार्य प्रणाली को विकसित किया जाना प्रस्तावित है ।

- वल्नेरेबिलिटी असेस्मेंट के लिए चयनित जिलों में एक-एक माइक्रो-वॉटरशेड में कॉम्बेटिंग मरुस्थलीकरण एवं भूमि क्षरण की कार्य योजना के लिए कार्य प्रणाली विकसित किया जाना प्रस्तावित है ।

3. ऑपरेशनल

- मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के लिए **1:500,000** मापक पर मरुस्थलीकरण एवं भूमि क्षरण मानचित्रण का कार्य समय सीमा **2017-18** के लिए किया जाना प्रस्तावित है एवं उसका समय सीमा **2011-13** के मानचित्रो से परिवर्तन का विश्लेषण किया जाना है ।
- मध्य प्रदेश के धार, मुरेना, रतलाम एवं नीमच एवं छत्तीसगढ़ के दुर्ग, रायपुर एवं राजनन्दगाँव जिलों के लिए मरुस्थलीकरण एवं भूमि क्षरण मानचित्रण का कार्य समय सीमा **2017-18** के लिए किया जाना प्रस्तावित है एवं उसका समय सीमा **2011-13** के मानचित्रोंं से परिवर्तन का विश्लेषण किया जाना है ।

3. सहयोगी/सहभागी संस्थायें

भारत सरकार, अंतरिक्ष विभाग का अंतरिक्ष उपयोग केन्द्र, इसरो, अहमदाबाद ।

4. कार्यक्रम विवरण

इस परियोजना के अंतर्गत मध्य प्रदेश के मुरेना एवं छत्तीसगढ़ के रायपुर जिलों के मरुस्थलीकरण एवं भूमि क्षरण की वल्नेरेबिलिटी असेस्मेंट कार्य प्रणाली को **1:50,000** मापक पर विकसित किया जाना प्रस्तावित है एवं दोनों जिलों में एक-एक माइक्रो-वॉटरशेड में कॉम्बेटिंग मरुस्थलीकरण एवं भूमि क्षरण की कार्य योजना के लिए कार्य प्रणाली को **1:10,000** मापक पर विकसित किया जाना प्रस्तावित है ।

5. समय-सारिणी

कार्यक्रम	प्रथम तिमाही	द्वितीय तिमाही	तृतीय तिमाही	चतुर्थ तिमाही
डेसर्टिफिकेशन एण्ड लैंड डेग्रेडेशन रू मॉनिटरिंग, वल्नेरेबिलिटी असेस्मेंट एण्ड कॉम्बेट प्लान	वल्नेरेबिलिटी असेस्मेंट कार्य योजना के लिए मध्य प्रदेश के मुरैना जिले के लिए प्री-फिल्ड एवं जिले की सामाजिक आर्थिक एवं भौतिक आकड़ों की जानकारी एकत्रित करना	वल्नेरेबिलिटी असेस्मेंट कार्य योजना के लिए छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले के लिए प्री-फिल्ड, सामाजिक आर्थिक एवं भौतिक आकड़ों की जानकारी एकत्रित करना	वल्नेरेबिलिटी असेस्मेंट कार्य योजना के तहत मुरैना एवं रायपुर जिलों के लिए **1:50,000** मापक वल्नेरेबिलिटी मॉडल तैयार करना	मुरैना एवं रायपुर जिलों में एक-एक माइक्रो-वॉटरशेड में **1:10,000** मापक पर कॉम्बेटिंग मरुस्थलीकरण एवं भूमि क्षरण की कार्य योजना के लिए कार्य प्रणाली विकसित करना

6. अपेक्षित परिणाम

इस परियोजना के अंतर्गत तैयार किये गये मानचित्र एवं डाटाबेस का उपयोग संयुक्त राष्ट्र के मरूस्थलीकरण कार्यक्रम के प्रतिवेदन एवं भारत सरकार द्वारा भू-क्षरण समस्या से निपटने के लिये कार्य योजना का निर्माण करने में किया जायेगा ।

1.6 जल संसाधन (सरफेस वाटर)

1. पृष्ठभूमि

इस समूह द्वारा सतही जल जैसे नदी, तालाब, बाँध आदि से संबन्धित परियोजनाओं का कार्यान्वयन किया जाना है। ये परियोजनाएं राज्य शासन, केंद्र शासन तथा परिषद द्वारा प्रायोजित होगी । इनमें मुख्यत: सतही जल संसाधन उपलब्धता एवं उपयोग खपत, जलीय क्षेत्रफल, जलीय क्षेत्रों का धनत्व एवं प्रकार, आबादी के रहवास एवं उपयुक्तता की मॉडलिंग, पर्यावरणीय प्रभाव, प्रस्तावित एवं घोषित रिजर्व जल के उपयोग का मानचित्रण, एवं औधोगिकीकरण के कारण पर्यावरण पर होने वाले प्रभाव का आंकलन, अध्ययन मानचित्रण आदि कार्य होंगे ।

2. समीक्षा एवं उपलब्धिया (वर्ष 2017 -18)

---

8. समय सारणी

प्रथम तिमाही	द्वितीय तिमाही	तृतीय तिमाही	चतुर्थ तिमाही
सम्बंधित शासकीय विभागों में संपर्क स्थापित कर आवश्यकता का निर्धारण	विभागों कि आवश्यकताओ के आधार पर नवीन परियोजनाओ का निर्माण	नवीन परियोजनाओ का निर्माण प्राप्त परियोजना का क्रियान्वयन	परियोजनाओ का निर्माण प्राप्त परियोजना का क्रियान्वयन

9. अपेक्षित परिणाम

सम्बंधित शासकीय विभागों जैसे लोक स्वस्थ यांत्रिकी विभाग, जल संसाधन विभाग, पर्यावरण आदि विभागों में संपर्क स्थापित कर नई परियोजनाओं का निर्माण से विभाग को लाभान्वित किया जावेगा किया जावेगा |

1.7 जल संसाधन (ग्राउंड वाटर)

1. पृष्ठभूमि

इस प्रभाग द्वारा सुदूर उपग्रह संवेदन तकनीक के माध्यम से प्रदेश के भू-जल एवं सतही जल क्षेत्रों का मानचित्रण एवं जल संसाधनों के संरक्षण, संवर्धन तथा सतत विकास हेतु उपयोगकर्ता विभागों की आवश्यकतानुसार सम्बंधित जानकारी उपलब्ध कराई जाती है ।

विगत वर्षो में इस प्रभाग द्वारा कई महत्वपूर्ण परियोजनाओं का कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण किया गया है जैसेः "प्रदेश के सभी जिलों हेतु 1:2,50,000 एवं 1:50,000 मापक पर भू-जल उपलब्धता संभावित एवं धारक क्षेत्रों का मानचित्रण, "साइन्टिफिक सोर्स फाइन्डिंग, वाटर कन्जरवेशन एण्ड आर्टिफीशियल रिचार्ज परियोजना के अंतर्गत 21 जिलों में जल संसाधनों के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु मानचित्रण एवं अध्ययन", राजीव गांधी राष्ट्रीय पेयजल मिशन परियोजना के अंतर्गत लगभग 10 जिलों का मानचित्रण एवं "नेशनल वेटलैण्ड्स इन्वेन्ट्री एण्ड असेस्मेंट परियोजना के अंतर्गत 1:50,000 मापक पर 23 जिलों के वेटलैण्ड्स का मानचित्रण का कार्य किया गया।

वर्तमान में इस प्रभाग द्वारा मध्यप्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र के छः जिलों (सागर, दमोह, टीकमगढ, छतरपुर एवं पन्ना) के हाइड्रोजियोमार्फालॉजीकल मानचित्रों के अद्यतन का कार्य एवं 36 जिलों में भू-जल गुणवत्ता मानचित्रण का कार्य प्रगति पर है ।

भारत सरकार के राष्ट्रीय सुदूर संवेदन उपयोग केन्द्र द्वारा वित्त-पोषित परियोजना "राजीव गॉधी नेशनल ड्रिंकिंग वाटर मिशन-फेस-IV" के अन्तर्गत मध्यप्रदेश के समस्त 51 जिलों के भू-जल क्षमता धारक क्षेत्रों के 1:50,000 मापक पर मानचित्रण एवं अपडेशन का कार्य पूर्ण किया गया है।

राजीव गाँधी राष्ट्रीय पेयजल मिशन ग्राउंड वाटर क़्वालिटी मैपिंग फेज - 4

1 - पृष्ठभूमि

भारत सरकार के पेयजल एवं स्वत्छता मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र इसरो, अंतरिक्ष विभाग, हैदराबाद एवं सहयोगी संस्थानों के सहयोग से राजीव गाँधी राष्ट्रीय पेयजल परियोजना के अंतर्गत राष्ट्रीय सुदूर संवेदन तकनीकी एवं भौगोलिक सुचना प्रणाली का उपयोग कर समूचे राष्ट्र हेतु भू-जल संभावना मानचित्र का कार्य चरणबद्ध रूप से प्रारंभ किया गया था। म.प्र के कुछ क्षेत्र के मानचित्र म.प्र विज्ञान एवं प्रोद्यौगिकी परिषद के सुदूर उपयोग केंद्र द्वारा तैयार किये गये थे। इस परियोजना के चतुर्थ चरण फेज -4 के अंतर्गत राज्य शासन के लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग द्वारा एकत्रित भू -जल गुणवत्ता आंकड़ों के आधार पर स्पेसियल डेटाबेस तथा भू-जल गुणवत्ता मानचित्र तैयार किये जाने है। जिनमे पीने योग्य (पोर्टबल वाटर) भू-जल क्षेत्र एवं अपेय जल (नॉन-पोर्टबल) भू-जल छेत्रो को दर्शाया जायेगा। म.प्र. के 36 जिलो में यह कार्य परिषद के सुदूर संवेदन उपयोग केंद्र द्वारा किया जा रहा है। यह कार्य परियोजना अप्रैल 2011 में प्रारंभ की गयी थी एवं वर्ष 2018 -19 में पूर्ण होगी।

2 **- समीक्षा /उपलब्धियाँ (वर्ष 2017 -18)**

गत वर्ष म.प्र. के आवंटित सभी 36 जिलों क्रमशः अलीराजपुर, अनूपपुर, बालाघाट, बड़वानी बैतूल, बुरहानपुर, छतरपुर, छिंदवाड़ा, दमोह, देवास, धार, डिंडोरी, हरदा, होशंगाबाद, इंदौर, जबलपुर, झाबुआ, कटनी, खंडवा, खरगोन, मंडला, नरसिंघपुर, पन्ना, रायसेन, रतलाम, रीवा, सागर, सीहोर, सिवनी, शहडोल, सीधी, सिंगरौली, टीकमगढ़, उज्जैन एवं उमरिया में से सभी 36 जिलों के प्री -मानसून एवं पोस्ट -मानसून नलकूप आकड़ो का एकत्रीकरण PHED द्वारा उपलब्ध कराया गया। जिनका समूहीकरण का कार्य किया गया। शेष बचे 15 जिले बिरला इंस्टीटूट ऑफ टेक्नोलॉजी मेसरा रांची से प्राप्त कर उनके विलीनीकरण (Mosaicing) का कार्य किया गया। उसके पश्चात सभी आठ (8) तत्वों क्रमशः pH, टोटल हार्डनेस (CaCo3), आयरन (Fe), क्लोराइड (CL), टीडीएस (TDS), नाइट्रेट (NO3), फ्लोराइड (Fluoride) एवं अल्कलिनिटी (Ak) का सभी 51 जिलों का एक साथ इंटीग्रेटेड नक्शे बनाये गये तथा उनका बहरी सभी जिलों में merging एवं sliver पोलीगोन के smoothning का कार्य म.प्र.के सुदूर संवेदन उपयोग केंद्र भोपाल में किया गया तथा फाइनल एवं अंतिम गुणवत्ता आंकलन राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र (NRSC) अंतरिक्ष विभाग इसरो द्वारा करने के पश्चात उन्हें सौपा गया।

3 - उददेश्य

म.प्र. शासन के लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग द्वारा एकत्रित भूमिगत जल के गुणवत्ता संबंधी आंकड़ों के आधार पर स्पेसियल डेटाबेस तैयार कर मानचित्रण का कार्य करना, जिसके आधार पर स्वच्छ एवं सुरक्षित पेयजल क्षेत्र एवं असुरक्षित अपेयजल क्षेत्र चिन्हित किये जायेगे।

4 - सहयोगी /सहभागी संस्थायें:-

भारत सरकार का पेयजल एवं स्वछता मंत्रालय नई दिल्ली तथा अंतरिक्ष विभाग का राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र, इसरो, हैदराबाद।

5 - कार्यक्रम विवरण:-

भूमिगत जल में pH, टोटल हार्डनेस (CaCo3), आयरन (Fe), क्लोराइड (CL), टीडीएस (TDS), नाइट्रेट (NO3), फ्लोराइड (Fluoride) एवं अल्कलिनिटी (Ak) तत्वों की मात्रा के आधार पर वह पीने योग्य है अथवा नहीं इसका जिलेवार मानचित्रण 1:50000 मापक पर किया जा रहा है।

6- समय सारणी:-

प्रथम तिमाही	द्वितीय तिमाही	तृतीय तिमाही	चतुर्थ तिमाही
म.प्र. के 36 जिलों में 407 टोपोशीटस प्रथम तिमाही में 101 टोपोशीट के नक्शे बनाये जायेगे, जिनमे 16 लेयर क्रमशः सेटलमेंट (बसाहट), रोड, रेल, ड्रेनेज पोलीगोन, ड्रेनेजलाइन, lithgeom, एडमिनिस्ट्रेटिवबाउंड्री, कैनाल, lithology,geomorphology,स्प्रिंग,रेनगैज स्ट्रक्चर-1 और स्ट्रक्चर-2 (हिल्स एवं लीनिआमेंट) तथा वेल लेयर को डालकर मानचित्र बनाये जायेगे। बाकी के बचे 306 टोपोशीट के नक़्शे का कार्य द्वितीय तिमाही में किया जायेगा। तथा इन नक्शों को सुदूर संवेदन केंद्र NRSC से बाहरी गुणवत्ता आंकलन करा कर सहयोगी संस्थानों को सौंपा जायेगा।	शेष 306 टोपोशीट में से 102 टोपोशीट के नक्शे बनाये जायेगे, जिनमे 16 लेयर क्रमशः सेटलमेंट (बसाहट), रोड, रेल, ड्रेनेज पोलीगोन, ड्रेनेजलाइन, lithgeom, एडमिनिस्ट्रेटिव बाउंड्री, कैनाल, lithology, geomorphology, स्प्रिंग, रेनगैज स्ट्रक्चर-1 और स्ट्रक्चर-2 (हिल्स एवं लीनिआमेंट) तथा वेल लेयर को डालकर मानचित्र बनाये जायेगे। बाकी के बचे 204 टोपोशीट के नक़्शे का कार्य तृतीय तिमाही एवं चतुर्थ तिमाही में किया जायेगा। तथा इन नक्शों को सुदूर संवेदन केंद्र NRSC से बाहरी गुणवत्ता आंकलन करा कर सहयोगी संस्थानों को सौंपा जायेगा।	शेष 204 टोपोशीट में से 102 टोपोशीट के नक्शे बनाये जायेगे, जिनमे 16 लेयर क्रमशः सेटलमेंट (बसाहट), रोड, रेल, ड्रेनेजपोलीगोन, ड्रेनेजलाइन, lithgeom, एडमिनिस्ट्रेटिवबाउंड्री, कैनाल, lithology, geomorphology, स्प्रिंग, रेनगैज स्ट्रक्चर-1 और स्ट्रक्चर-2 (हिल्स एवं लीनिआमेंट) तथा वेल लेयर को डालकर मानचित्र बनाये जायेगे। बाकी के बचे 102 टोपोशीट के नक़्शे का कार्य चतुर्थ तिमाही में किया जायेगा। तथा इन नक्शों को सुदूर संवेदन केंद्र NRSC से बाहरी गुणवत्ता आंकलन करा कर सहयोगी संस्थानों को सौंपा जायेगा।	अंतिम शेष बचे 102 टोपोशीट में से सभी 102 टोपोशीट के नक्शे बनाये जायेगे, जिनमे 16 लेयर क्रमशः सेटलमेंट (बसाहट), रोड, रेल, ड्रेनेज पोलीगोन, ड्रेनेजलाइन, lithgeo, एडमिनिस्ट्रेटिवबाउंड्री, कैनाल, lithology, geomorphology, स्प्रिंग, रेनगैज स्ट्रक्चर-1 और स्ट्रक्चर-2 (हिल्स एवं लीनिआमेंट) तथा वेल लेयर को डालकर मानचित्र बनाये जायेगे। बाकी के बचे 204 टोपोशीट के नक़्शे का कार्य चतुर्थ तिमाही में किया जायेगा। तथा इन नक्शों को सुदूर संवेदन केंद्र NRSC से बाहरी गुणवत्ता आंकलन करा कर सहयोगी संस्थानों को सौंपा जायेगा।

7 - अपेक्षित परिणाम:-

म.प्र.के सभी 51 जिलो के भू-जल गुणवत्ता मानचित्र में पीने योग्य जल (potable water) क्षेत्र तथा अपेय जल (नॉन-पोर्टबल) क्षेत्र के गांव को चिन्हित किया जाना है।

1.8 जी आई एस एवं इमेज प्रोसेसिंग प्रभाग

1. पृष्ठभूमि

इस शाखा द्वारा उपग्रह से प्राप्त आंकड़ों से कम्प्यूटरीकृत विष्लेषण एवं भौगोलिक सूचना प्रणाली से संबंधित कार्यक्रमों का क्रियान्वयन किया जाता है। राष्ट्रीय प्राकृतिक संसाधन सूचना प्रणाली के अंतर्गत तैयार आंकड़ों के रखरखाव एवं अन्य परियोजनाओं हेतु आंकड़ें उपलब्ध कराने का कार्य भी इस षाखा द्वारा किया जाता है। विगत वर्षों में सुदूर संवेदन तकनीक एवं भौगोलिक सूचना प्रणाली के माध्यम से परिषद् के सुदूर संवेदन उपयोग केन्द्र द्वारा विभिन्न परियोजनाओं में महत्वपूर्ण स्थानिक जानकारी तैयार की गई है। इस प्रभाग द्वारा वर्ष 2017-18 में किये गये कार्य एवं वर्ष 2018-19 में लिये जाने वाले कार्यें का विवरण निम्नानुसार है।

सुदूर संवेदन एवं भौगोलिक सूचना प्रणाली आधारित एकीकृत जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन कार्यक्रम के अन्तर्गत चयनित जलग्रहण क्षेत्रों की विकासीय योजना तैयार करना

1. पृष्ठभूमि

पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग, मध्यप्रदेश शासन के राजीव गांधी जल ग्रहण क्षेत्र प्रबंधन मिषन के अन्तर्गत् लगभग 8.89 लाख हैक्टर क्षेत्र के चयनित जलग्रहण क्षेत्रों की त्रिआयी उपग्रह आंकडों के आधार पर खसरा स्तर पर कार्य योजना तैयार की जाना है, जो कि जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन कार्यक्रमों को क्रियान्वित करने में सहायता करेगी।

2. समीक्षा/उपलब्धियाँ (वर्ष 2017-18)

म. प्र. के 29 जिलों के लिए चयनित 621 वाटरशेड के ड्रेनेज, कंटूर, केड्रस्टल एवं ऑर्थोरिक्टीफाइड इमेज के नक्षे तैयार कर एक्षन प्लान बनाया गया तथा प्रदाय किया गया। जिलों के अधिकारियों के लिए एक-दिवसीय कार्यशालाओं का आयोजन किया गया, जिसमे नक्षों के उपयोग की जानकारियाँ दी गईं।

3. उद्देश्य

इस परियोजना का उद्देश्य आई.डब्ल्यू.एम.पी. के अन्तर्गत स्वीकृत परियोजनाओं के आयोजना एवं क्रियान्वयन में रिमोट सेसिंग एवं अन्य डिजीटल डाटा एवं थ्री-डी मॉडल का उपयोग करते हुये परियोजना क्षेत्र के अंतर्गत कार्ययोजना तैयार करना है।

4. सहयोगी/सहभागी संस्थायें

पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग, म.प्र. शासन के अन्तर्गत् राजीव गांधी जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन मिशन ।

5. कार्यक्रम विवरण

प्रथम तिमाही	द्वितीय तिमाही	तृतीय तिमाही	चतुर्थ तिमाही
फेस - ।।। के अन्तर्गत् चयनित जिलों के जल ग्रहण क्षेत्रों के विषयवार मानचित्र तैयार कर संबंधित जिलों को सौंपना	निरन्तर	निरन्तर	निरन्तर

6. समय सारिणी

बिन्दु क्रमांक 5 के अनुसार

7. अपेक्षित परिणाम

इसके अन्तर्गत् वृहद् मापक पर तैयार कार्य योजना सटीक एवं सुदूर संवेदन आधारित होगी। जिसके क्रियान्वयन से जलग्रहण क्षेत्रों में अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे।

भूस्थानिक पद्धति से पंचायती राज संस्थानों को सशक्त बनाना - Empowering Panchayati Raj Institutions Spatially (EPRIS)

1. पृष्ठभूमि

"एम्पोवरिंग पंचायती राज इन्स्टिटूशनस स्पेशियली (एपरिस) परियोजना के अंतर्गत इसरो के भुवन पोर्टल' जिसमें - खसरा आधारित 1:10000 मापक पर प्रकृतिक संसाधनो / मूल-भूत संरचनाओं का डेटाबेस उपलब्ध हैए के द्वारा पंचायती राज संस्थानों को सशक्त बनाने के लिए कार्यशाला /प्रशिक्षण कराना तथा संपत्ति मानचित्रण कराना।

2. समीक्षा/उपलब्धियाँ (वर्ष 2017-18)

- म प्र के बेतुल जिले में एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गयी जिसमे जिले के अधिकारी जनपद पंचायत अध्यक्ष एवं सदस्य सम्मिलित हुए एव जिले के सभी 10 ब्लाक में 10 एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमे जनपद सीईओ एवं अधिकारीए सरपंचए उपसरपंच एवं जनपद सदस्य सम्मिलित हुए।
- म प्र के सागर, रायसेन एवं बेतुल जिले के सभी ब्लाक हेतु प्रथक रूप से जन अभियान परिषद् के सहयोग से उनके फ्रस्फुटन समिति के सदस्यों को (सागर-919, रायसेन-562, बेतुल-599) मोबाइल एप्लीकेशन द्वारा मानचित्रण हेतु एक दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया।
- प्रशिक्षण उपरांत फ्रस्फुटन समिति के सदस्यों के माध्यम से सागर, रायसेन एवं बेतुल के सभी ब्लॉक की पंचायतो की 157480 सम्पतियों का मानचित्रण भुवन पोर्टल पर करवाया गया (सागर-63,287, रायसेन-50,084, बेतुल-44,109)।

3. उद्देश्य

EPRIS परियोजना के अतर्गत प्रारंभिक फेज में मध्यप्रदेश के तीन जिलो सागरए रायसेन एवं बेतुल को चिन्हित किया गया है जिसमे ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विकेंद्रीकृत योजना के अतर्गत पंचायती राज संस्थानों के सशक्तिकरण हेतु प्रशिक्षण दिया जा रहा हैए जिससे वे अपने क्षेत्र हेतु उपग्रह से प्राप्त मानचित्र आधारित नक्शों का उपयोग करते हुए अपने आसपास के समुचित संसाधनों एवेम परिसंपति को परिलक्षित करते हुए प्रभावी विकास हेतु परियोजना बना सके एवं उनके क्षेत्र का विकास वैज्ञानिक

द्रष्टिकोण तरीके से हो सके। इसके अंतर्गत सर्वप्रथम मोबाइल एप्लीकेशन के माध्यम से तीन वर्गों में (नागरिक सुविधाओं/बुनियादी ढांचा, शासन आस्तियों एवं उत्पादक परिसंपत्तियों) में वर्गीग्रत लगभग 271 सम्पतियों की जानकारी वास्तविक चित्र सहित एकत्रित कर इसरोए भारत सरकार द्वारा प्रदर्शित केंद्रीयकृत भुवन वेब पोर्टल में अपलोड की जा रही है, जिससे इन सभी सम्पतियों की जानकारी आम नागरिक भी प्राप्त कर सके एवं पंचायती राज संस्थानों एवं आमजन भी जानकारियों का उपयोग कर अपने क्षेत्र हेतु उपग्रह से प्राप्त मानचित्र आधारित प्रभावी विकास योजनाऔ को बना अपनी सहभागिता एवं सहमती सुनिश्चित कर सके।

4. सहयोगी सहभागी संस्थाएँ

राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र इसरों अंतरिक्ष विभाग, भारत सरकार, हैदराबाद।

5. कार्यक्रम विवरण

प्रथम तिमाही	द्वितीय तिमाही	तृतीय तिमाही	चतुर्थ तिमाही
प्रायोजित संस्था एवं ज़िला प्रशासन के समय अनुसार राज्य, जिला एवं ब्लॉक स्तर पर पर कार्यशाला / प्रशिक्षण देना	निरन्तर	निरन्तर	निरन्तर

6. समय सारणी

बिन्दु क्रमांक 5 के अनुसार

7. अपेक्षित परिणाम

पंचायत की विकासात्मक गतिविधियों में भूस्थानिक पद्धति का उपयोग।

भू-स्थानिक प्रौद्योगिकियों का उपयोग करते हुए एकीकृत वाटरशेड कार्यक्रम (आईडब्ल्यूएमपी) परियोजना की निगरानी

1. पृष्ठभूमि

"भू-स्थानिक प्रौद्योगिकियों का उपयोग करते हुए एकीकृत वाटरशेड कार्यक्रम (आईडब्ल्यूएमपी) परियोजना की निगरानी" परियोजना के अंतर्गत 2009-10 से 2014-15 तक मध्य प्रदेश राज्य के लिए स्वीकृत आईडब्ल्यूएमपी परियोजनाओं की निगरानी और मूल्यांकन किया जाना है।

2. समीक्षा- उपलब्धियां (वर्ष 2017 -18)

एकीकृत वाटरशेड कार्यक्रम (आईडब्ल्यूएमपी) परियोजना की निगरानीश् परियोजना के अंतर्गत 2009.10 में आईडब्ल्यूएमपी परियोजना के अंतर्गत स्वीकृत; आईडब्ल्यूएमपीद्ध परियोजनाओं में बनाये गए स्ट्रक्चर का उपग्रह से प्राप्त राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र द्वारा उपलब्ध डाटा का उपयोग करते हुए परिवर्तनो का अवलोकन एवं मूल्याकन कर बदले नक्शों मय फोटोग्राफ सहित रिपोर्ट तैयार कर राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्रए इसरोंए अंतरिक्ष विभाग, भारत सरकार, हैदराबाद को प्रेषित किया गया है ।

3. उद्देश्य

मध्य प्रदेश राज्य के लिए आईडब्ल्यूएमपी परियोजना में स्वीकृत 2009-10 से 2014-15 तक के परियोजनाओं की निगरानी और मूल्यांकन की परिकल्पना की जानी है। प्रत्येक परियोजना की निगरानी

5 वर्षों की अवधि के लिए की जानी है। इस परियोजना के अंतर्गत उपग्रह से प्राप्त मानचित्र लिस -4 एवं कार्टोसैट डाटा का उपयोग करते हुए साल दर साल लगभग 5 वर्षो तक आईडब्ल्यूएमपी परियोजना के माध्यम से बनाये गए स्ट्रक्चर द्वारा जमीनी स्तर पर हुए परिवर्तन का मूल्याकन करना एवं वास्तविक स्तर पर हुए परिवर्तन का अवलोकन कर आकड़ो एवं बदले नक्शों सहित रिपोर्ट तैयार कर राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र, इसरों, अंतरिक्ष विभाग, भारत सरकार, हैदराबाद को प्रेषित किया जाना है।

4. सहयोगी सहभागी संस्थाएँ

राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र, इसरों, अंतरिक्ष विभाग, भारत सरकार, हैदराबाद।

5. कार्यक्रम विवरण

प्रथम तिमाही	द्वितीय तिमाही	तृतीय तिमाही	चतुर्थ तिमाही
प्रायोजित संस्था के निर्देशानुसार 2010-11 में स्वीकृत एमडब्ल्यूएस/ आईडब्ल्यूएमपी परियोजना की सीमाओं का सुधार	प्रायोजित संस्था के निर्देशानुसार 2010-11 में स्वीकृत आईडब्ल्यूएमपी परियोजना के परिवर्तन पहचान नक्शा तैयार करना।	प्रायोजित संस्था के निर्देशानुसार 2010-11 में स्वीकृत आईडब्ल्यूएमपी परियोजना के परिवर्तन पहचान नक्शा तैयार करना।	प्रायोजित संस्था के निर्देशानुसार 2010-11 में स्वीकृत आईडब्ल्यूएमपी परियोजना की परिवर्तित वास्तविक आकड़े एकत्रित कर नक्शा के माध्यम से रिपोर्ट तैयार कर रिपोर्ट एवं डेटा जमा किया जाना।

6. समय सारणी

बिन्दु क्रमांक 6 के अनुसार

7. अपेक्षित परिणाम

एकीकृत वाटरशेड कार्यक्रम (आईडब्ल्यूएमपी) परियोजना में स्वीकृत वाटरशेड की निगरानी एवं उनसे हुए वास्तविक परिवर्तन का फोटोग्राफ सहित अवलोकन कर उनसे प्राप्त परीणामो को प्रदर्शित कर सुझावी योजना तैयार की जानी है।

भू.स्थानिक प्रौद्योगिकियों का उपयोग करते हुए पन्ना एव अमरकटक बायो स्फीयर के जमीनी नक्शो के सतही परिवर्तन, आकलन परियोजना की निगरानी-

1. पृष्ठभूमि

"भू.स्थानिक प्रौद्योगिकियों का उपयोग करते हुए पन्ना एव अमरकटक बायो स्फीयर के जमीनी नक्शो के सतही परिवर्तन, आकलन परियोजना के अंतर्गत **2008-12** (लिस**4** एवं कार्टोसैट डाटा) की उपग्रह से प्राप्त मानचित्रो एव **2012-13** (वर्ल्ड वियु डाटा) की उपग्रह से प्राप्त मानचित्रो के मध्य बदलाव का आकलन किया जाना.

2. समीक्षा- उपलब्धियां (वर्ष 2017-18)

पन्ना एव अमरकटक बायो स्फीयर के जमीनी नक्शो के सतही परिवर्तन, आकलन परियोजना के अंतर्गत **2008-12** के उपग्रह से प्राप्त मानचित्रो लिस**4** एवं कार्टोसैट डाटा का उपयोग करते हुए परिवर्तनो का अवलोकन एवं मूल्याकन कर बदले हुए भु उपयोग के नक्शे तैयार किये गये है ।

3. उद्देश्य

पन्ना एव अमरकटक बायो स्फीयर के लिए, इस परियोजना मे **2008-12** (लिस**4** एवं कार्टोसैट डाटा) की उपग्रह से प्राप्त मानचित्रो एव **2012-13** (वर्ल्ड वियु डाटा) की उपग्रह से प्राप्त मानचित्रो के मध्य बदलाव का आकलन किया जाना है।

इस परियोजना के अंतर्गत उपग्रह से प्राप्त मानचित्र लिस**4** एवं कार्टोसैट डाटा से प्राप्त भुसतही नक्शे एव वर्ल्ड वियु डाटा से प्राप्त भुसतही नक्शो का उपयोग करते हुए साल दर साल लगभग **5** वर्षो तक बदलाव का आकलन कर प्रतिवेदन देना।

4. सहयोगी सहभागी संस्थाएँ

पर्यावरण नियोजन एवं समन्वय संगठन (एप्को) भोपाल, मध्यप्रदेश।

5. कार्यक्रम विवरण

प्रथम तिमाही	द्वितीय तिमाही
प्रायोजित संस्था के निर्देशानुसार • परियोजना की सीमाओं को पहचान कर परियोजना क्षत्र का निर्धारन करना • 2008-12 (लिस4 एवं कार्टोसैट डाटा) की उपग्रह से प्राप्त LULC नक्शा/परिवर्तन पहचान नक्शा तैयार करना • परिवर्तित वास्तविक आकडे एकत्रित कर नक्शों के माध्यम से रिपोर्ट तैयार कर डेटा के साथ जमा किया जाना है	निरंतर

6. समय सारणी

बिन्दु क्रमांक 6 के अनुसार

7. अपेक्षित परिणाम

"भू.स्थानिक प्रौद्योगिकियों का उपयोग करते हुए पन्ना एव अमरकटक बायो स्फीयर के जमीनी नक्शो के सतही परिवर्तन, आकलन परियोजना के अंतर्गत 2008-12 (लिस4 एवं कार्टोसैट डाटा) की उपग्रह से प्राप्त मानचित्रो एव 2012-13 (वर्ल्ड वियु डाटा) की उपग्रह से प्राप्त मानचित्रो के मध्य बदलाव का आकलन किया जाना एवं उनसे हुए वास्तविक परिवर्तन का फोटोग्राफ मय अवलोकन कर उनसे प्राप्त परीणामो को प्रदर्शित कर सुझावी योजना तैयार की जानी है।

चंद्रयान -1 हाइ एस आई (HySI)

1. पृष्ठभूमि

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य चन्द्रयान -1 मिशन से प्राप्त डाटा का विशिष्ट प्रकार के खनिजों की पहचान करने के लिए चंद्रमा के केंद्रीय क्षेत्र के Mare Cognitum, Mare Imbrium, Mare Insularum और Mare Nubium का वर्णक्रमीय विश्लेषण करना है।

2. समीक्षा- उपलब्धियां (वर्ष 2017-18)

I. साहित्य की समीक्षा II. डेटा डाउनलोड

अध्ययन क्षेत्र:निम्नलिखित विवरण के साथ प्रत्येक पांच पट्टी (20 किमी):

S.No.	PRODUCT_ID	ORBIT_NO	DATE_OF_PASS
1.	HYS_NREF_20081229T022406915	604	2008-12-29
2.	HYS_NREF_20081229T101707157	608	2008-12-29
3.	HYS_NREF_20081229T181008688	612	2008-12-29
4.	HYS_NREF_20081230T020421955	616	2008-12-30
5.	HYS_NREF_20081230T115550472	621	2008-12-30

उपरोक्त पांचो डाटासेट्स को issdc.gov.in से डाउनलोड किया गया है और इसके बाद आगे प्रोसेसिंग के लिए एनवीआई सॉफ्टवेयर में लोड किया गया है।

iii. प्रतिबिंब के आंकड़ों के लिए चमक का रूपांतरण:

3. उद्देश्य

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य चन्द्रयान -1 मिशन से विशिष्ट प्रकार के खनिजों की पहचान करने के लिए चंद्रमा के केंद्रीय क्षेत्र के Mare Cognitum, Mare Imbrium, Mare Insularum और Mare Nubium का वर्णक्रमीय विश्लेषण करना है।

4. सहयोगी सहभागी संस्थाएँ : SAC ISRO

5. कार्यक्रम विवरण

प्रायोजित संस्था के निर्देशानुसार

प्रथम तिमाही	द्वितीय तिमाही	तृतीय तिमाही	चतुर्थ तिमाही
MNF Transform (spectral compression)	Pixel Purity Index (limited iterations for identification of bad pixels) Masking of bad pixels	Pixel Purity Index (maximum iterations for endmember determination)	n-Dimensional Visualization (Endmember Definition)

6. समय सारिणी

7. अपेक्षित परिणाम

चन्द्रमा की चट्टानों के spectral signature को उनके खनिज सामग्रियों के साथ सहसंबंधी और विश्लेषण करने के लिए जिसके परिणामस्वरूप चन्द्रमा की सतह पर चट्टान और खनिजों की पहचान की जाती है।

1.9 कृषि एवं मृदा प्रभाग

1. पृष्ठभूमि

इस शाखा के द्वारा वर्ष 1987-88 से फसल क्षेत्र एवं उत्पादन आंकलन का कार्य तकनीकी विकास अवस्था से किया गया है। इस कार्य के लिए प्रारम्भ में म.प्र. के मध्य क्षेत्र के आठ जिलों को तकनीकी विकास के लिए लिया गया था। वर्ष 1987-88 से 1991-92 के दौरान परियोजना के प्रथम चरण में फसल क्षेत्र एवं उत्पादन आंकलन तकनीकी म.प्र. के संदर्भ में विकसित करने का कार्य किया गया। वर्ष 1992-93 से परियोजना का विस्तार नियमित आंकलन हेतु म.प्र. में गेहूँ के लिए 32 जिलों, धान के लिए 13 जिलों, कपास के लिए 2 जिलों एवं सरसों के लिए 3 जिलों के लिए किया गया। वर्ष 1993-94 से उक्त परियोजना के लिए वर्ष 2006-07 तक नियमित रूप से उक्त फसलों का क्षेत्र एवं उत्पादन आंकलन किया गया। वर्ष 1996-97 से राष्ट्रीय गेहूँ उत्पादन आंकलन का कार्य भी म.प्र. में राज्य स्तरीय आंकलन के लिए प्रारम्भ किया गया। पन्ना राष्ट्रीय उद्यान के मृदा के

मानचित्रण का कार्य 1:50000 मापक पर सम्पन्न कराया गया। म.प्र. के 35 जिलों के लिए भूरक्षण मानचित्रण का कार्य किया।

प्रभाग द्वारा विभिन्न शोध एवं अनुसंधान के कार्य अंतरिक्ष उपयोग केन्द्र के सहयोग से किये गये। शोध एवं अनुसंधान से संबंधित मुख्य गतिविधियों में उपज माडल विकसित करना, फसल के पहचान हेतु विभिन्न तरंग पर रेडियोमीटर आकड़ों का फसल चक्र के दौरान अध्ययन, सेंसर इवेलूएशन अध्ययन, माइक्रोवेव उपग्रह चित्रों से फसल पहचान तकनीकी का अध्ययन एवं एनर्जीमास एक्सचेंज इन वेजीटेशन सिस्टम आदि विषयों पर कार्य किया गया। शाखा द्वारा राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के जर्नल मे एवं सेमीनार, पुस्तक आदि में लगभग 30 शोध पत्र प्रकाषित किये गये। इस प्रभाग का मुख्य दायित्व सुदूर संवेदन तकनीक का उपयोग कृषि एवं मृदा के क्षेत्र में करना है। इन कार्यों से लाभान्वित होने वाले मुख्य विभागो में कृषि विभाग, राजस्व विभाग, जल संसाधन विभाग, मंडी बोर्ड, वेयरहाउसिंग कार्पोरेषन, म.प्र. बीज निगम एवं कृषि विश्वविद्यालय इत्यादि हैं।

2. समीक्षा/उपलब्धियॉ (2017-2018)

वर्ष 2017-18 में किये गये कार्य का विवरण निम्नानुसार है:-

2.1 फोरकास्टिंग एग्रीकल्चरल आउटपुट यूजिंग स्पेस, एग्रोमिरियोलाजी एण्ड लेण्ड बेस्ट आब्जरवेषनस (फसल. MNCFC) आपरेशनल फोरकास्ट परियोजना के अंर्तगत फसल कटाई से पूर्व फसल क्षेत्र एवं उत्पादन का आंकलन के लिए कपास, धान, गेहूँ एवं सरसों के लिए क्षेत्र सत्यापन के आंकड़ें एकत्र एवं उपग्रह चित्रों का विश्लेषण करने का कार्य MNCFC नई दिल्ली के साथ किया गया।

2.2 फसल परियोजना के अन्तर्गत दलहनी फसलों के लिए क्षेत्र सत्यापन के आंकड़ें एकत्र किए गए एवं उपग्रह चित्रों के माध्यम से दलहनी फसलों के लिए क्षेत्र आंकलन का कार्य मल्टी-डेट AWiFS सेंसर डाटा द्वारा किया गया।

2.3 Calibration Validation परियोजना के अंर्तगत 2016-17 में एकत्रित डाटा एवं उपग्रह चित्रों का विश्लेषण कर Calibration Validation प्राप्त किया गया।

2.4 Calibration Validation परियोजना के अन्तर्गत 2017-18 में विभिन्न उपग्रहों के date of pass के समय पर Reflectance, Ozone and AOT डाटा एकत्र करने का कार्य किया गया।

2.5 भारत सरकार द्वारा लागू सूखा मेनुअल - 2016 के अर्न्तगत जिलों / तहसील वार NDVI, NDWI एवं मृदा नमी के आंकडें राहत आयुक्त, राजस्व विभाग, मध्य प्रदेश शासन को समय पर उपलब्ध कराये गयें।

2.6 मध्य प्रदेश शासन के राजस्व विभाग को सूखा क्षेत्र हेतु मेमोरेण्डम तैयार करने हेतु उपयोगी जानकारी विभिन्न जिलो के लिए प्रदान की गई।

3. कार्यक्रम विवरण 2018-19

इस प्रभाग द्वारा वित्तीय वर्ष में किये जाने वाले कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत है। इसके अतिरिक्त राज्य शासन के संबंधित विभागों की आवष्कतानुसार नवीन कार्यक्रम लिया जाना प्रस्तावित है। विभिन्न कार्यक्रमों का विवरण निम्नानुसार प्रस्तुत है:-

फसल परियोजना

1. पृष्ठभूमि

राष्ट्रीय फसल फोर कास्टिंग केन्द्र कृषि एवं सहकारिता विभाग भारत सरकार एवं कृषि विभाग, द्वारा प्रायोजित फसल परियोजना का कार्य किया गया। परियोजना में घान कपास गेहूँ एवं सरसों फसलों हेतु क्षेत्र सत्यापन के आकड़े एकत्र करने का कार्य किया गया। इन आकड़ों का उपयोग

MNCFC नई दिल्ली के साथ अंकीय चित्र विषलेषण हेतु किया गया। भारत सरकार द्वारा प्रायोजित इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य फसल कटाई के पूर्व फसल क्षेत्र एवं उत्पादन का आंकलन राज्य एवं जिला स्तर पर करना है।

2. समीक्षा/उपलब्धियॉ (2017-18)

फसल कटाई से पूर्व फसल क्षेत्र एवं उत्पादन आंकलन के लिए कपास, धान गेहूँ एवं सरसों फसलों के लिए क्षेत्र सत्यापन के आंकड़ें एकत्र कर MNCFC नई दिल्ली के साथ मिलकर उपग्रह चित्रों का विष्लेषण कर फसल कटाई के पूर्व फसल क्षेत्र एवं उत्पादन का आंकलन राज्य एवं जिला स्तर पर किया गया।

3. उद्देश्य

फसल कटाई से पूर्व चयनित फसलों का क्षेत्र एवं उत्पादन का आंकलन जिलों एवम् राज्य स्तर पर करना है।

4. प्रायोजक/सहयोगी संस्थायें

कृषि एवं सहकारिता विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली एवं कृषि विभाग मध्यप्रदेश ।

5. **कार्यक्रम विवरण (2018-19)**

उपग्रह से प्राप्त चित्रों, मौसम संबंधी आकड़ों एवं स्थल सत्यापन की सहायता से फसल कटाई से पूर्व फसल क्षेत्र एवं उत्पादन का आंकलन राज्य एवं जिला स्तर पर करना ।

6. समय सारिणी

प्रथम तिमाही	द्वितीय तिमाही	तृतीय तिमाही	चतुर्थ तिमाही
क्षेत्र सत्यापन योजना तैयार करना।	धान फसल हेतु मौके का सर्वेक्षण। उपग्रह चित्रों का अंकीय चित्र विश्लेषण।	कपास एवं सरसों हेतु मौके पर सर्वेक्षण। उपग्रह चित्रों का अंकीय चित्र विश्लेषण ।	गेहूँ फसल हेतु मौके पर सर्वेक्षण। उपग्रह चित्रों का अंकीय चित्र विश्लेषण।

7. अपेक्षित परिणाम

फसल कटाई से पूर्व कपास, धान, गेहूँ सरसों एवं दलहनी फसलों का क्षेत्र आकलन राज्य एवं जिला स्तर पर प्राप्त करना।

शोध परियोजनाऐ

1. पृष्ठभूमि

कृषि एवं मृदा विभाग के अंर्तगत उपग्रह चित्र Calibration Validation शोध परियोजना पर कार्य अन्तरिक्ष उपयोग केंद्र, अहमदाबाद के साथ मिल कर किया जा रहा है। यह शोध परियोजना अन्तरिक्ष उपयोग केंद्र, अहमदाबाद द्वारा प्रायोजित हैं।

2. समीक्षा/उपलब्धियॉ (2017-2018)

Calibration Validation परियोजना के अन्तर्गत उपग्रह के Pass (AWiFs, LISS-III, Landsat-8) के समय Reflectance, Ozone एवं AOT के आंकड़ें एकत्र किए गये।

3. उद्देश्य

Calibration Validation परियोजना का उद्देश्य उपग्रह चित्रों को Calibrate & Validate करना हैं।

4. सहयोगी/सहभागी संस्थायें

अंतरिक्ष उपयोग केन्द्र, अहमदाबाद, भारत सरकार

5. कार्यक्रम विवरण (2018-19)

Calibration Validation परियोजना के अन्तर्गत उपग्रह के Pass (AWiFs, LISS-III, Landsat-8) के समय Reflectance, Ozone एवं AOT के आंकड़ें एकत्र करना।

6. समय सारिणी

प्रथम तिमाही	द्वितीय तिमाही	तृतीय तिमाही	चतुर्थ तिमाही
Calibration Validation परियोजना			
उपग्रह के Pass (RS-2 AWiFs, RS-2 LISS-III, Landsat-8 OLI) के समय Reflectance एवं AOT के आंकड़ें एकत्र करना।	2017-18 मे एकत्र Reflectance एवं AOT डाटा का विष्लेषण कर रिर्पोट तैयार करना।	उपग्रह के Pass (RS-2 AWiFs, RS-2 LISS-III, Landsat-8 OLI) के समय Reflectance एवं AOT के आंकड़ें एकत्र करना।	उपग्रह के Pass (RS-2 AWiFs, RS-2 LISS-III, Landsat-8 OLI) के समय Reflectance एवं AOT के आंकड़ें एकत्र करना।

1.10 भूमि उपयोग एवं शहरी सर्वेक्षण प्रभाग

1. पृष्ठभूमि

परिषद के सुदूर संवेदन उपयोग में यह प्रभाग वर्ष 1987-88 से कार्यरत हैं। इस प्रभाग ने वर्ष 1990-91 में प्रदेश के सभी जिलो का भूमि उपयोग तथा भू आवरण के मानचित्रण का कार्य 1:25 हजार मापक पर किया है। वर्ष 1986-87 से वर्ष 1992:93 तक इस प्रभाग ने प्रदेश के बंजर भूमि मानचित्रण का कार्य 1:50 हजार मापक पर मेनूअल विधि से पूर्ण किया इस परियोजना के मानचित्रण के लिए 30 मीटर रेजूलेशन के उपग्रह चित्र का उपयोग किया गया। वर्ष 2003-2004 एवं 2005-2006 के उपग्रह चित्रो का उपयोग करते हुये बंजर भूमि अपडेशन मानचित्रण पूर्ण किया। इस मानचित्रण का कार्य डिजीटल विधि से पूर्ण किया गया इसमें 23-1/2 मीटर रेजूलेशन के उपग्रह चित्र का उपयोग किया गया।

वर्ष 1990-91 से वर्ष 1995-96 तक इस प्रभाग ने राज्य के 43 ब्लाकों का भूमि उपयोग एवं भू आवरण मानचित्र सत्त विकास हेतु एकीकृत मिशन परियोजना के अन्र्तगत 1:50 हजार मापक पर पूर्ण किया। इसी परियोजना के अंतर्गत इन्हीं विकासखण्डों का भूमि संसाधन एक्शन प्लान भी 1:50 हजार मापक पर तैयार किया गया। वर्ष 1995-96 में ही इस शाखा ने राज्य के सभी जिलो का वेट लेन्ड मानचित्र, वेटलेंड एटलस तथा वेटलेंड इन्वेन्टरी का कार्य पूर्ण किया। इस परियोजना का मानचित्रण 1:250 हजार मापक पर 78.5 मीटर रेजूलेशन के उपग्रह चित्र पर किया गया। वर्ष 1995-96 में ही रिवर एक्शन प्लान परियोजना के अन्र्तगत राज्य के कुछ शहरो का मानचित्रण कार्य भी पूर्ण किया गया। वर्ष 2002 से 2003 तक इस शाखा द्वारा लैंड एंड वाटर रिर्सोस डवलपमेंट एंड कंजरवेशन परियोजना, रतलाम का कार्य पूर्ण किया। वर्ष 2002 से 2005 की अवधि में रतलाम जिले

का डेजर्टीफिकेशन मेपिंग प्रोजेक्ट भी पूर्ण किया गया। उक्त दोनो परियोजनाओं का मानचित्रण 1:50 हजार मापक पर किया गया।

इस प्रभाग ने शहरी सर्वेक्षण के क्षेत्र में भोपाल एवं इन्दौर मास्टर प्लान के लिए क्षेत्रीय प्लान हेतु विभिन्न थिमेटिक मानचित्र भी तैयार किये हैं। राष्ट्रीय (प्राकृतिक) संसाधन सूचना प्रणाली के अन्र्तगत इस शाखा द्वारा सीधी, झाबुआ एवं दतिया जिले का भूमि उपयोग एवं भू आवरण मानचित्र का डिजीटल डेटाबेस, भौगोलिक सूचना प्रणाली द्वारा तैयार किया गया। वर्ष 2005 से राष्ट्रीय (प्रकातिक) संसाधन सूचना प्रणाली परियोजना के अन्र्तगत राज्य के भूमि उपयोग एवं भू आवरण मानचित्र का डिजीटल डेटाबेस, भोगोलिक सूचना प्रणाली द्वारा तैयार किया जा रहा है। वर्ष 2006 में कार्टोसेट यूटीलाईजेशन प्रोग्राम परियोजना, के अन्तर्गत पायलेट स्टडी के रूप में सीहोर जिले के बुधनी तहसील के पांच ग्राम (जैत, डोवी, पिपलिया इतवार तथा जवाहर खेड़ा) का केडस्ट्रल लेवेल मेपिंग का कार्य पूर्ण किया गया। वर्ष 2007-08 में राष्ट्रीय शहरी सूचना प्रणाली परियोजना के अंतर्गत जबलपुर, ग्वालियर, सतना, देवास, उज्जैन सागर नगरों के मानचित्रण एवं सरदार सरोवर विस्थापन क्षैत्र के अन्तर्गत विस्थापितो को बसाने के लिए उचित बसाहट स्थलों के चयन का कार्य पूर्ण किया गया। वर्ष 2009 में पड़त भूमि अद्यतन परियोजना का कार्य पूर्ण कर राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केन्द्र को सौंपा गया। वर्ष 2010 में इस शाखा द्वारा मध्यप्रदेश के 10 नगरों का मास्टरप्लान, बीना पट्रोकेमिक्ल्स प्रादेशिक योजना तथा वर्ष 2011 में हालोन एवं अपन नर्मदा सिचाई परियोजना हेतु बहुउद्देशिय सम्पति एवं परिसम्पतियों का कार्य प्रारम्भ किया गया।

वर्ष 2012 में मास्टर प्लान परियोजना के अन्तर्गत 11 नगरों कार्य संचालनालय नगर तथा ग्राम निवेश द्वारा आवंटित किया गया। अंतरिक्ष सूदूर संवेदन केन्द्र, हैदराबाद द्वारा राष्ट्रीय प्राकृति संसाधन गणना के अन्तर्गत 2005-06 के मानचित्रो को अद्यतन का कार्य प्रायोजित किया गया। जिसे 02 वर्षो की अवधि में पूर्ण किया जाना प्रस्तावित किया।जी.आई.एस. एवं जियो-स्पेशल तकनीक के द्वारा ग्राम सीमा निकालकर बसाहट का मानचित्रण तथा ग्राम की सीमाओं का जियोरेक्टीफिकेशन कर डिजिटल मानचित्र तैयार करने हेतु योजना आयोग द्वारा मध्यप्रदेश के सभी जिलो के मजमुली आधारित मानचित्र तैयार करने का कार्य 2013-14 में आवंटित किया गया इसे पूर्ण कर योजना आयोग को प्रेषित किया गया। वर्ष 2014-15 में दमोह, बॉधवगढ़, गोहद, शुजालपुर, होशंगाबाद, इटारसी, बैतूल, सिंगौली, शहडोल विकास योजना का कार्य पूर्ण कर नगर तथा ग्राम निवेश को प्रेषित किया गया। राज्य योजना आयोग के लिये होशंगाबाद के 1ः4000 मापक पर खसरा मानचित्र एवं मजमूली मानचित्र आधारित ग्राम सीमा तथा बसाहट का कार्य उपग्रह चित्र के आधार पर पूर्ण किया गया। सुदूर संवेदन उपग्रह चित्रों के माध्यम से प्राचीन दीवाल की स्थिति उसकी क्षेत्र में लंबाई तथा भग्नावशेष का अघ्ययन एवं भौतिक सत्यापन का कार्य किया गया। इस कार्य हेतू देवरी से गोरखपुर तक 80 कि.मी. के मध्य मुख्यतः चार स्थान क्रमशः मोघा जलाशय, गोरखपुर, घाटखेड़ी एवं जामगढ़ भगदेही क्षेत्र में शोध दल द्वारा उच्च आर्वधन उपग्रह चित्रो एवं जी.पी.एस. की सहायता से दीवार की स्थिति एवं परिस्थिति का अध्ययन किया गया। वर्ष 2015-16 में प्रभाग द्वारा इटारसी, आगर मालवा, राजगढ़, चंदेरी, ओकारेश्वर, माण्डव, पीथमपुर, हरदा, ओरछा, जावरा, टीकमगढ़ सिंरोज, हनुवतियां एवं भिण्डविकास योजना की कार्य पूर्ण कर संचालनालय को प्रेषित किये गये। राज्य योजना अयोग द्वारा प्रयोजित बुन्देलखण्ड क्षेत्र परियोजना तथा मैप-आईटी के 16 जिलो का खसरा आधारित मानचित्रण का कार्य पूर्ण किया गया।

- **भोपाल केपीटल रीजन प्रादेशिक योजना परियोजना (10 K)**

इस परियोजना के अंतर्गत भोपाल केपीटल रीजन प्रादेशिक को खसरा आधारित 1:10000 मापक पर पुनः तैयार किया जा रहा है, जिससे विकास योजना एवं प्रादेशिक योजना में एकरूपता निर्मित हो सके। इस योजना का मुख्य उद्देश्य भोपाल केपिटल रीजन के विषयवार मानचित्रण, भूमि तथा जल संसाधनों का समुचित नियोजन तथा मानव संसाधन के नियोजन को ध्यान में रखते हुये प्रादेशिक योजना 1:10000 मापक तैयार की जानी है यह कार्य नगर तथा ग्राम निवेश संचालनालय मार्गदर्शन में किया जा रहा है।

परियोजना के विस्तार हेतु वित्तीय वर्ष 2014-15 में पृथक से प्रावधान का प्रस्ताव दिया गया था। प्रस्ताव पर प्रशासनिक स्वीकृति उपरान्त 10**K** मापक पर आगर मालवा जिले का कार्य प्रारम्भ किया गया था। वर्ष 2015-16 में राशि रू. 83.16 लाख का प्रावधान रखा गया है।

वित्तीय वर्ष 2015-16 में विषयवार मानचित्रण एवं सामाजिक तथा आर्थिक आकड़ों का विश्लेषण का कार्य पूर्ण किया गया। बसाहट का फैलाव, रेल, रोड़, जनगणना एवं आर्थिक सांख्यिकी आँकड़ें, प्रवाह तंत्र, नहर, जलग्रहण क्षेत्र, भूदृश्य, भूआकृति, भूमि उपयोग, बसाहट जनसंख्या परिवहन तंत्र, मृदा, ग्राम सीमायें, खनिज तथा मौसम, ऊर्जा, स्लम्स, ठोस अपशिष्ट, हेरेटेज साइट, मृदा की गहराई, अपक्षरण, सिंचाई व्यवस्था, भूमि की उपयोगिता, भूमि में सिंचाई की क्षमता आदि का मानचित्रण कार्य पूर्ण कर प्रादेशिक योजना प्रस्तावों को शामिल करते हुये भोपाल केपीटल रीजन प्रादेशिक योजना 2031 का प्रारुप (10 K) पर तैयार कर संचालनालय को प्रेषित करना है।

2. समीक्षा/उपलब्धियॉ (2017-2018)

भोपाल केपिटल रीजन प्रादेशिक परियोजना के अन्तर्गत प्राकृतिक संसाधन तथा प्रक्षेत्र में बढ़ते नगरीकरण, एवं बसाहटों की महत्ता संसाधनों के दोहन की संभावना, समुचित एवं सुदृढ़ यातायात प्रणाली एवं औद्योगिक क्षेत्रों के विकास, अधोसंरचना विकास का अध्ययन विष्लेषण कर एवं भावी अधोसंरचना विकास मूलभूत सुविधाए कृषि विकास, औद्योगिक ईकाईयो की 2031 तक स्थापना तथा यातायात विकास हेतु उपग्रहों चित्रों एवं सामाजिक आर्थिक ऑकड़ों के विशलेषण उपरान्त उपयुक्त प्रस्तावों को शामिल कर 10 (**K**) का कार्य पूर्ण किया गया। जिलों के विकास प्रस्तावों को भोपाल, रायसेन, राजगढ़, सीहोर, शाजापुर तथा आगर मालवा जिले की जिला योजना समिति के समकक्ष प्रस्तुतिकरण कर प्राप्त सुझावों को प्रादेशिक योजना में सम्मिलित किया गया।

3. उद्देश्य

भोपाल केपिटल रीजन प्रादेशिक परियोजना में शामिल 06 जिलो में खसरा आधारित नियोजित प्रादेशिक स्तर पर विकास हेतु विभिन्न शासकीय विभागो के खसरा आधारित सुझाव लेते हुये प्रस्ताव प्रस्तावित करना है।

4. सहयोगी/सहभागी संस्थायें

संचालनालय नगर तथा ग्राम निवेश, म.प्र. शासन।

5. कार्यक्रम विवरण

इस योजना के अन्तर्गत 06 जिले में सुदूर संवेदन तकनीक एवं भौगोलिक सूचना प्रणाली का उपयोग करते हुये 1:10 हजार मापक पर प्रादेशिक विस्तार हेतु कार्य किया जा रहा है।

6. समय सारिणी

प्रथम तिमाही	द्वितीय तिमाही	तृतीय तिमाही	चतुर्थ तिमाही
आगर मालवा जिले की जिला योजना समिति के समक्ष प्रभारी मंत्री की अध्यक्षता में प्रस्तुतिकरण करना।	योजना मे जिला योजना समिति द्वारा दिये गये सुझावो को समावेश करना।	प्रादेशिक योजना के प्रस्तावो का समावेश करते हुए प्रारूप तैयार कर संचालनालय को प्रेषित करना।	प्रारूप योजना मे संचालनालय द्वारा मान्य आपत्ति सुनवाई सुझावो को समावेश करते हुए योजना को अंतिम रूप देना।

7. अपेक्षित परिणाम

परियोजना की प्रगति से 06 जिलो की खसरा आधारित मानचित्र विकास हेतु विभिन्न विभागो के लिये उपयोगी होगा।

• पीथपुर औद्योगिक क्षेत्र की मध्यप्रदेश निवेश क्षेत्र प्रबंधन एवं विकास अधिनियम 2013 के प्रावधानों के अंतर्गत विकास योजना परियोजना

1. पृष्ठ भूमि

औद्योगिक केन्द्र विकास निगम लिमिटेड इंदौर द्वारा पीथमपुर औद्योगिक क्षेत्र की स्कीम का कार्य प्रायोजित किया गया है। इसके अंतर्गत योजना क्षेत्र के 44 ग्रामो को सम्मिलित करते हुए औद्योगिक स्कीम उच्च आवर्धन उपग्रह चित्रों एवं जी.आई.एस. के माध्यम से मध्यप्रदेश निवेश क्षेत्र प्रबंधन एवं विकास अधिनियम 2013 के प्रावधानों के अंतर्गत तैयार की जा रही है। वर्ष 2018-19में राशि रू. 36.52 लाख का प्रावधान रखा गया है।

2. समीक्षा/उपलब्धियॉ

पीथमपुर औद्योगिक क्षेत्र की स्कीम का आवश्यक डेटाबेस तैयार किये जाने वाला कार्य प्रगति पर है।

3. उद्देश्य

योजना का उद्देश मध्यप्रदेश निवेश क्षेत्र प्रबंधन एवं विकास अधिनियम 2013 के प्रावधानों के अंतर्गत आने वाले 44 ग्रामों हेतु मध्यप्रदेश औद्योगिक केन्द्र विकास निगम हेतु औद्योगिक विकास हेतु विकास योजना तैयार करना है।

4. सहयोगी/सहभागी संस्थायें

मध्यप्रदेश औद्योगिक केन्द्र विकास निगम, इंदौर।

5. कार्यक्रम विवरण

इस योजना के अंतर्गत उच्च आवर्धन उपग्रह चित्रो की सहायता से स्कीम क्षेत्र का भूमि उपयोग, स्थलाकृति, प्रवाहतंत्र, यातायात तंत्र, औद्योगिक, आवासीय, व्यावसायिक,कृषिक और आम प्रायोजन हेतु भूमि का आवंटन कर योजना तैयार करना है।

6. समय सारिणी

प्रथम तिमाही	द्वितीय तिमाही	तृतीय तिमाही	चतुर्थ तिमाही
ग्रामवार खसरा मानचित्र तैयार	प्रकाशित योजना के अंतर्गत प्राप्त	प्रारूप योजना को अंतिम रूप	योजना का अंतिम प्रकाशन।

करना। भूमि उपयोग उपग्रह चित्रो के आधार पर तैयार करना। सभी थीमवाईस मानचित्र का कार्य पूर्ण कर सामाजिक आर्थिक ऑकड़ो को मूल डेटाबेस के साथ लिंक करना।	आपत्तियो का संकलन तथा मध्यप्रदेश निवेश क्षेत्र प्रबंधन एवं विकास अधिनियम 2013 के प्रावधानों के अंतर्गत स्वीकृत सुझावों का मानचित्र पर प्रदर्शन।	देने हेतु शेष कार्य का संपादन।	

मध्यप्रदेश के नगरों की मास्टर प्लान परियोजना

1. पृष्ठभूमि

इस परियोजना के अंतर्गत म.प्र. के छत्तरपुर,बालाघाट, अलीराजपुर, सांची, राजगढ़, गाडरवारा, सिवनी, सीधी, गोविन्दगढ़, नागौद, व्यावरा, मंदसौर, जबलपुर, सिहोरा, राघोगढ आदि नगरो का कार्य आवंटित किया गया था।

मास्टर प्लान बनाने हेतु उच्च आवर्धन उपग्रह चित्रों के आधार पर विषयवार मानचित्रण एवं समाजिक तथा आर्थिक आकड़ों के विश्लेषण के आधार पर विकास योजना तैयार करने का कार्य नगर तथा ग्राम निवेश द्वारा प्रायोजित किया गया है।

2. समीक्षा/उपलब्धियॉ

वर्ष 2017-18 सिरोंज, उज्जैन, शाजापुर, जावरा, मन्दसौर, उमरिया, अमरकंटक, टीकमगढ़, छत्तरपुर, मण्डला, छिन्दवाड़ा, पाढुर्ना, ओरछा, माण्डव एवं औकारेश्वर विकास योजना की कार्य पूर्ण कर संचालनालय को प्रेषित किया गया।

3. उद्देश्य

परियोजना के अंतर्गत 41 नगरों के 1:10000 मापक पर मास्टर प्लान बनाने हेतु उच्च आवर्धन उपग्रह चित्रों के आधार पर विषयवार मानचित्रण एवं सामाजिक तथा आर्थिक आकड़ों का विश्लेषण कर विकास योजना 2031 के मानचित्र तैयार किए जाकर नगर तथा ग्राम निवेश, कार्यालय भोपाल को प्रेषित की जानी है।

4. सहयोगी/सहभागी संस्थायें

संचालनालय नगर तथा ग्राम निवेश, म.प्र.शासन।

5. कार्यक्रम विवरण

इस योजना के अन्तर्गत नगरों की विकास योजनाओ की भूमि की उपयोगिता तथा प्रस्तावित विकास योजना 2031 एवं परिवहन तंत्र तैयार कर संचालनालय नगर तथा ग्राम निवेश, भोपाल को प्रेषित किये जाने है। नगरों की विकास योजना हेतु राशि रूपये 100.08 लाख का प्रावधान किया गया।

6. समय सारिणी

प्रथम तिमाही	द्वितीय तिमाही	तृतीय तिमाही	चतुर्थ तिमाही
सामाजिक तथा आर्थिक आकड़ों का विश्लेषण का कार्य पूर्ण किया	सामाजिक तथा आर्थिक आकड़ों का विश्लेषण का कार्य पूर्ण किया	सामाजिक तथा आर्थिक आकड़ों का विश्लेषण का कार्य पूर्ण किया	सामाजिक तथा आर्थिक आकड़ों का विश्लेषण का कार्य पूर्ण किया

गया। बसाहट का फैलाव, रेल, रोड़, जनगणना एवं आर्थिक सांख्यिकी आँकड़ें, प्रवाह तंत्र, नहर, भूदृश्य, भूआकृति, भूमि उपयोग, परिवहन तंत्र, भूमि की उपयोगिता नगरः मण्डला, इंदौर, शाजापुर, मंदसौर।	गया। बसाहट का फैलाव, रेल, रोड़, जनगणना एवं आर्थिक सांख्यिकी आँकड़ें, प्रवाह तंत्र, नहर, भूदृश्य, भूआकृति, भूमि उपयोग, परिवहन तंत्र, भूमि की उपयोगिता, नगर: सीधी, सिवनी, छत्तरपुर, दतिया।	गया। बसाहट का फैलाव, रेल, रोड़, जनगणना एवं आर्थिक सांख्यिकी आँकड़ें, प्रवाह तंत्र, नहर, भूदृश्य, भूआकृति, भूमि उपयोग, परिवहन तंत्र, भूमि की उपयोगिता, नगर: उमरिया, अमरकंटक, सारणी, राघोगढ	गया। बसाहट का फैलाव, रेल, रोड़, जनगणना एवं आर्थिक सांख्यिकी आँकड़ें, प्रवाह तंत्र, नहर, भूदृश्य, भूआकृति, भूमि उपयोग, परिवहन तंत्र, भूमि की उपयोगिता, नगर: मुरैना, जबलपुर, उज्जैन।

7. अपेक्षित परिणाम

विकास योजनाओं के प्रकाशन उपरान्त वर्ष 2018-19 में 15 नगरों के सुनियोजित विकास हेतु विकास योजना 2031 के प्रकाशन का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। अंगिकृत विकास योजना के अनुसार 2031 तक उपरोक्त नगर के विकास हेतु प्रस्तावित भूमि उपयोगों के आधार पर नियंत्रित विकास करना संभव होगा।

प्राकृतिक संसाधन गणना (एन.आर.सी.) - भूमि उपयोग एवं भू आवरण मानचित्र का अद्यतन (2015-16)

1. पृष्ठभूमि

इस परियोजना के अंतर्गत सम्पूर्ण प्रदेश के वर्ष 2011-12 के भूमि उपयोग भू आवरण मानचित्र को वर्ष 2015-16 के रिर्सोस सेट-2 उपग्रह चित्रों से अद्यतन करते हुये वर्ष 2012 से 2016 तक भूमि उपयोग एवं भू आवरण में आये परिवर्तनों को ज्ञात करना है। वर्ष 2015-16 में परियोजना के प्रारम्भिक कार्य के अंतर्गत सुदूर संवेदन केंद्र, अंतरिक्ष विभाग, हैदराबाद एवं परिषद् के मध्य एम.ओ.यू. हस्ताक्षरित किया गया।

2. समीक्षा/उपलब्धियॉ (2017-2018)

प्रदेश के 51 जिलों के खरीफ एवं रबी मौसम की फसलों, बंजर एवं वन भूमियों तथा जलाशयों के सत्यापन का कार्य पूर्ण किया गया। एस.ओ.आई. टोपोशीट के आधार पर 25 जिलों का अंतरिक कार्य गुणवत्ता परीक्षण का कार्य पूर्ण कर भूमि उपयोग भू-आवरण के अद्यतन कार्य पूर्ण कर लिया गया है।

3. उद्देश्य

इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य वर्ष 2015-16 हेतु भूमि उपयोग तथा भूआवरण में वर्ष 2012 की तुलना में आये परिर्वतनों को ज्ञात करना है। भूमि उपयोग तथा भू-आवरण का डेटा बेस सर्वे ऑफ इंडिया. टोपोशीट, जिला तथा प्रदेश स्तर पर तैयार कर ग्राफिकल तथा सांख्यकीय विधियों से हो रहे परिवर्तनों को दिखाना है। परिर्वतनों के आधार पर ही क्षेत्रों में योजना बनाने हेतु इस डेटा बेस से सहायता मिलेगी।

4. सहयोगी/सहभागी संस्थायें

राष्ट्रीय सुदूर संवेदन उपयोग केन्द्र, अंतरिक्ष विभाग, हैदराबाद।

5. कार्यक्रम विवरण

इस परियोजना के अंतर्गत वर्ष 2012 में तैयार किये गये सम्पूर्ण प्रदेश के भूमि उपयोग एवं भूआवरण मानचित्र को डिजिटल विधि द्वारा एस.ओ.आई. शीट अनुसार अद्यतन करते हुये 18 मुख्य भूमिउपयोग एवं भूआवरण श्रेणियों में परिवर्तनों को 2015-16 के उपग्रह चित्रों के आधार पर अद्यतन करना है।यह कार्य भौगोलिक सूचना प्रणाली का उपयोग एवं स्थल निरिक्षण के आधार पर किया जाना प्रस्तावित है।

6. समय सारिणी

प्रथम तिमाही	द्वितीय तिमाही	तृतीय तिमाही	चतुर्थ तिमाही
प्रदेश के 25 जिलों का अंतरिक कार्य गुणवत्ता परीक्षण का कार्य पूर्ण करना।	प्रदेश के 27 जिलों का अंतरिक कार्य गुणवत्ता परीक्षण का कार्य पूर्ण करना। एन.आर.एस.सी. द्वारा बाहरी गुणवत्ता कार्य पूर्णकर परियोजना प्रायोजित संस्था को प्रेषित करना।	-	-

7. अपेक्षित परिणाम

वर्ष 2016 हेतु भूमि उपयोग तथा भूमि आवरण में वर्ष 2012 की तुलना में आये परिवर्तन ज्ञात हो सकेगें तथा योजनाकारों को योजना के क्रियान्वयन हेतु जिलावार अद्यतन भूमि उपयोग की जानकारी प्राप्त हो सकेगी।

नवीन परियोजनायें -

1. प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना की जी.आई.एस. मेपिंग

एन.आई.आर.डी. भारत सरकार द्वारा प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना के अंतर्गत बनाये गये मार्गो का जी.आई.एस आधारित मानचित्रण एवं अद्यतन किया जाना प्रस्तावित है जिसके अंतर्गत मध्यप्रदेश राज्य का कार्य परिषद् द्वारा किया जाना है। इस परियोजना की अनुमानित राशि लगभग 1 करोड़ 10 लाख है।

2. राष्ट्रीय पड़त भूमि मानचित्रण 10 k (NRSC)

इस परियोजना के अंतर्गत प्रदेश में उपलब्ध पड़त भूमि का खसरा आधारित विश्लेषण कर पड़त भूमि बैंक का निर्माण किया जाना है, जिससे किसी विशेष गतिविधि हेतु उपलब्ध पड़त भूमि की सटीक जानकारी उपलब्ध हो सके। इसके अंतर्गत पायलट परियोजना में आगर मालवा जिले की आगर तहसील की पड़त भूमि का विश्लेषण कर राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केन्द्र अंतरिक्ष विभाग, हैदराबाद को प्रेषित की गई। राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केन्द्र अंतरिक्ष विभाग, से प्राप्त आदेशनुसार उक्त कार्य को संपूर्ण प्रदेश में विस्तार किया जाना प्रस्तावित है।

A–2 एडवांस रिसर्च एण्ड इन्स्ट्रूमेन्टेशन फेसीलिटी

2.1 जैव प्रौद्योगिकी उत्कृष्टता केन्द्र

1. **पृष्ठभूमि**

परिषद् में जैवप्रौद्योगिकी उत्कृष्टता केन्द्र की स्थापना वर्ष 2006-07 में की गई है। केन्द्र में आधुनिक उपकरणों सहित एक जैवप्रौद्योगिकी प्रयोगशाला है, जिसमें प्रदेश के विभिन्न विश्विद्यालयों/महाविद्यालयों के चयनित छात्रों को शोधकार्य कराया जाता है। इसके अतिरिक्त छात्रों, शिक्षकों, वैज्ञानिकों को जैवप्रौद्योगिकी एवं 85 नमूने माइक्रोबायोलॉजी से संबंधित विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण दिये जाते हैं। प्रदेश में कार्य कर रहे शोधार्थियों की अपने शोध संबंधित नमूनों का परीक्षण करने के लिए प्रयोगशाला की सुविधा उपलब्ध कराई जाती है।

2. समीक्षा/उपलब्धियाँ (2017-2018)

वर्ष 2017-2018 में लघु शोधकार्य, प्रशिक्षण, नमूनों का परीक्षण, जैवप्रौद्योगिकी जागरूकता कार्यक्रम आदि कार्य किये गये। इस अवधि में प्रयोगशाला द्वारा 22 लघु शोध, 09 प्रशिक्षण कार्यक्रम (कुल 138 लाभार्थी),21 नमूने आर.ए.पी.डी. एवं 85 नमूने माइक्रोबियल एनालाइसिस एच.पी. टी.एल.सी. का परीक्षण किया गया। मोदी इन्टरनेशल की ऑडिट टीम द्वारा प्रयोगशाला का ऑडिट किया गया एवं आई.एस.ओ. :9001: 2008 के लिए प्रमाणीकरण हेतु प्रारंभिक तौर पर अनुमति प्रदान की गई। जैवप्रौद्योगिकी उत्कृष्टता केन्द्र द्वारा म.प्र. के अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति बाहुल्य क्षेत्रों में 05 जैवप्रौद्योगिकी जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन एस.एम.एन.एस.आई.एम.टी. महाविद्यालय नरसिंहपुर, शा.कन्या महाविद्यालय धार, जटाशंकर त्रिवेणी पी.जी. महाविद्यालय बालाघाट, नेताजी सुभाषचंद्र बोस शा. कन्या.कॉलेज सिवनी.एस.बी.एस.कॉलेज तलेन, प्रजा सागर कॉलेज पचौर, प्रेस्टीज कॉलेज राजगढ़ डिग्री कॉलेज में आयोजन किया गया | इस कार्यक्रम में लगभग 1175 स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर तक के छात्र-छात्राएं लाभान्वित होकर जैवप्रौद्योगिकी के सम्बन्ध में जानकारी हासिल की गई एवं जैवप्रौद्योगिकी का दैनिक जीवन में उपयोगों के बारे में जाना । इस कार्यक्रम में जैवप्रौद्योगिकी के विषय पर व्याख्यानमाला, प्रयोग एवं क्विज प्रतियोगिता के माध्यम से जैवप्रौद्योगिकी का सामान्यजन के लिए उपयोग, जैवप्रौद्योगिकी में रोजगारन्मुखी एवं बीमारी इत्यादि के बारे में सरलता से समझाया गया। म.प्र. के विभिन्न शोध एवं शैक्षणिक संस्थानों से लगभग 170 छात्र/छात्राओं एवं शोद्यार्थियों ने जैवप्रौद्योगिकी प्रयोगशाला का भ्रमण किया। जैवप्रौद्योगिकी संबंधी जानकारियां हासिल की एवं परिषद् के वैज्ञानिकों से रोजगार एवं भविष्य में इसके उपयोगिता के बारे में जाना। केन्द्र द्वारा फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम के तहत 36 शिक्षिकों को एक दिवसीय प्रशिक्षिण प्रदान किया गया, जिनमें आधुनिक लैव प्रोद्योगिकी तकनीकों के बारे में प्रशिक्षण प्रदान किया|

3. उद्देश्य

केन्द्र का मुख्य उद्देश्य प्रदेश में जैवप्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास को प्रोत्साहन देने हेतु विद्यार्थियों, शोधार्थियों, उद्यमियों एवं कृषकों को विभिन्न विधाओं में सक्षम बनाना है। जैवप्रौद्योगिकी के समुचित उपयोग से प्रदेश के नैसर्गिक संसाधनों के मूल्य संवर्धन एवं सतत् विकास को गति देने हेतु केन्द्र शोध एवं विकास परियोजनाएं संचालित करेगा। प्रदेश में जैवप्रौद्योगिकी के कुशल मानव संसाधन को प्रोत्साहन देने हेतु कार्यवाही करना तथाप्रदेश के प्राकृतिक संसाधनों का सतत् विकास एवं मूल्य संवर्धन सुनिश्चित करने व कृषि, स्वास्थ्य सेवाओं एवं पर्यावरण प्रबंधन की आवश्यकता पूर्ति में जैवप्रौद्योगिकी के अनुप्रयोगों हेतु शोध एवं विकास को प्रोत्साहन देना है।

4. **सहयोगी /सहभागी संस्थायें**

प्रदेश के विभिन्न महाविद्यालय विश्व विद्यालय एवं राष्ट्रीय संस्थान ।

5. कार्यक्रम विवरण

प्रदेश एवं प्रदेश के बाहर के सभी लाभार्थियों के शोध एवं प्रशिक्षण हेतु प्रशिक्षण, वर्कशाप, नमूनों का परीक्षण एवं जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया जाना प्रस्तावित है। इसके अतिरिक्त शोध कार्य एवं स्नातकोत्तर एवं एम. फिल स्तर के विद्यार्थियों को अनुसंधान द्वारा डिजरटेशन में सहायता प्रदान की जायेगी।

6. समय सारणी

स.क्र.	कार्यक्रम	प्रथम त्रैमास	द्वितीय त्रैमास	तृतीय त्रैमास	चतुर्थ त्रैमास
1.	लघु शोध कार्य (स्नातकोत्तर/एम.फिल) (लाभार्थी)	24	-	24	-
2.	**प्रशिक्षण कार्य**	-	01 (15)	01 (15)	-
	(क) लघु प्रशिक्षण कार्य on DNA sequencing (03-05 दिवसीय) (लाभार्थी)	-	01 (15)	-	01 (15)
	(ख) मॉलिक्यूलर बायोलॉजी (05 - 07 दिवसीय) (लाभार्थी)	-	01 (15)	01 (15)	-
	(ग) माइक्रोबायोलॉजी (05 - 07 दिवसीय) (लाभार्थी)	01 (15)	-	01 (15)	01 (15)
	(घ) एच.पी.टी.एल.सी.(02 - 03 दिवसीय) (लाभार्थी)				
3.	पी.एच.डी. शोधकार्य (06 - 12 माह) (लाभार्थी)	(02)	-	-	(02)
4.	जैवप्रौद्योगिकी जागरूकता कार्यक्रम (अनुसूचित जाति बहुल्य क्षेत्रों में) (लाभार्थी)	02(100)	02 (100)	02(100)	02 (100)
5.	म.प्र. जैवप्रोद्योगिकी कांग्रेस (लाभार्थी)	-	-	01 (200)	-
6.	नमूनों का परीक्षण (मॉलीक्यूलर बायोलॉजी, एन्टी माइक्रोबियल, एचपीटीएलसी, लाइफोलाइजेशन, बेक्टीरियल लोड, माइक्रोस्कोपी, माइक्रोबियल फरमनटेशन) आदि (लाभार्थी)	30(30)	30(30)	30(30)	30(30)
7.	रेफेर्शेर कोर्स शिक्षकों हेतु	-	-	01 (10)	-
8.	एक दिवसीय व्याख्यानमाला ऑन "डॉ. अब्दुल कलाम मेमोरियल लेक्चर सीरीज ऑन मॉलिक्यूलर बायोलॉजी" विषय पर	-	01(50)	-	01(50)
9.	वर्कशॉप ऑन "कंजर्वेशन जेनेटिक्स	-	-	-	01 (50)

	मॉलिक्यूलर बायोलॉजी" विषय पर				

अन्य प्रस्तावित कार्यक्रम

केन्द्र द्वारा प्रदेश की पारम्परिक (इन्डेमिक) बीजों/प्रजातियों आदि का डीएनए सीक्वेन्सिंग कर जेनेटिक रिसोर्स डाटाबेस तैयार कर इनके संरक्षण एवं डाक्यूमेंटेशन हेतु जेनेटिक सूचना तैयार करने का प्रयास किया जायेगा। प्रदेश में पायी जाने वाली जनजातियों की विभिन्न प्रजातियों में अनुवांशिक बीमारियों को डी.एन.ए. के विभिन्न मार्कशें द्वारा चिन्हित कर सकेंगे। केन्द्र द्वारा ऊतक संवधर्न तकनीक से विकसित पौधे (प्रोटोकाल) का जेनेटिक/बायोलॉजिकल प्रोफाइल तैयार किया जाना प्रस्तावित है। इसके अतिरिक्त प्रदेश में जैव तकनीकी के उन्नत एवं उत्कृष्ट अनुसंधान एवं विकास हेतु केन्द्र द्वारा उच्च स्तरीय अत्याधुनिक उपकरणों की स्थापना की जायेगी।

8. अपेक्षित परिणाम

उपरोक्त कार्यक्रमों में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थी तथा वैज्ञानिक, कृषक, शिक्षक भी सम्मिलित हो सकेंगे। केन्द्र में उपलब्ध आधुनिक उपकरणों से प्रदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों/ महाविद्यालयों एवं शोध संस्थानों में कार्यरत व्यक्ति प्रयोगशाला से नमूनों का परीक्षण कराकर लाभान्वित हो सकेंगे। जैवप्रोद्योगिकी उत्कृष्ता की जैवप्रोद्योगिकी प्रयोगशाला में महत्वपूर्ण जीवो का डी.एन.ए. ऊतक एवं अन्य नमूनों का संरक्षण किया जावेगा जिससे उनके germplasm संरक्षण पर शोध किया जा सकेगा |

2.2 गुणवत्ता आश्वासन प्रयोगशाला

(आई.एस.ओ. 9001:2008)

1. पृष्ठभूमि

म.प्र.विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् की केन्दीय प्रयोगशाला सुविधा (गुणवत्ता आश्वासन प्रयोगशाला) वर्ष 1987 से प्रदेश के वैज्ञानिकों एवं विज्ञान के शोध छात्रों को विभिन्न प्रकार के उपकरणीय विश्लेषण सुविधा उपलब्ध कराती रही है। साथ ही समय-समय पर प्रयोगशाला द्वारा उपकरणों के अनुप्रयोगो, चालान एवं रख-रखावए जल एवं मृदा की गुणवत्ता परीक्षण इत्यादि पर विभिन्न प्रशिक्षण/कार्यशाला/प्रयोगशाला भ्रमण/प्रदर्शन कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। प्रयोगशाला में जल, खाद्य, कृषि उत्पादों, जड़ी बूटियों एवं हर्बल्स औषधियों के नमूनों का परीक्षण एवं गुणवत्ता जाँच एवं अनुसंधान एवं विकास तथा शोधकर्ताओं से प्राप्त नमूनों का उपकरणीय एवं एनालिटिकल विधि से परीक्षण कार्य भी किए जा रहे हैं। उपरोक्त कार्यक्रमों के अतिरिक्त प्रदेश के विश्वविद्यालयों/महाविद्यालयों के स्नातकोत्तर छात्रों को शोध कार्य में भी सहायता एवं मार्गदर्शन दिया जाता है।

2. समीक्षा/उपलब्धियां (2017-18)

प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं कार्यशाला

गुणवत्ता आश्वासन प्रयोगशाला द्वारा माह मार्च 2018 तक चार प्रशिक्षण एवं कार्यशाला आयोजित की गई है।

जल गुणवत्ता आश्वासन विधियों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम। वर्ष का प्रथम प्रशिक्षण कार्यक्रम 11 से 13 अप्रेल 2017 में में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में 14 प्रषिणार्थी सम्मिलित हुए। प्रयोगिक रूप

में उपकरणीय विधियों का प्रदर्शन करते हुए प्रत्येक विधि के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत से चर्चा करए प्रदर्शन कर एवं प्राप्त ग्राफ/परिणाम का इन्टरप्रटेशन कराया गया।

आधुनिक उपकरणीय विधियां / प्रशिक्षण कार्यक्रम 23 अगस्त से 26 अगस्त 2017 तक आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में 16 प्रषिणार्थी सम्मिलित हुए। इसमें प्रदेश के विभिन्न जिलों से आये शोध छात्र/स्नातकोत्तर छात्र/फेकल्टी इत्यादि सम्मिलित हुए।

प्रयोगशाला भ्रमण/प्रदर्शन जागरूकता कार्यक्रम के अंतर्गत लगभग 42 छात्र/छात्राओं/अधिकारीगण/शिक्षक द्वारा प्रयोगशाला का भ्रमण किया गया। प्रयोगशाला में कार्यरत तकनीकी अधिकारियों के द्वारा विभिन्न उपकरणों की कार्य प्रणाली एवं इससे सबंधित विष्लेषणात्मक पहलुओं पर प्रदर्शन दिया गया।

विषलेषणात्मक कार्य के अंतर्गत प्रयोगशाला द्वारा अत्याधुनिक उपकरणोंध् विधियों से विभिन्न विषलेषणात्मक कार्य किये गये। कुल विश्लेषण किये गये नमूने 209 थे। उक्त नमूने जल/मृदा/प्रकृतिक पदार्थ/पौध उत्पाद/औषधी आदि के थे।

3. सहयोगी एवं सहभागी संस्थाए

प्रदेश के विभिन्न महाविद्यालय/विश्वविद्यालय एवं संबंधित राष्ट्रीय संस्थान।

4. उद्देश्य

परिषद् की गुणवत्ता आश्वासन प्रयोगशाला गतिविधियों एवं कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य निम्नानुसार हैः

- अत्याधुनिक उपकरणीय विधियों, जल एवं मृदा गुणवत्ता परीक्षण विधियों पर प्रशिक्षण
- जल एवं मृदा, कृषि उत्पादों एवं खाद्य सामग्री, हर्बल औषधियों एवं जड़ी बूटियों के उत्पादों की गुणवत्ता परीक्षण विधियों इत्यादि पर स्नातकोत्तर एवं शोध छात्रों हेतु प्रयोगशाला भ्रमण/प्रदर्शन - जागरूकता क स्नातकोत्तर एवं शोध छात्रों को उनके द्वारा तैयार विभिन्न उत्पाद/नमूनों हेतु विश्लेषण सुविधा उपलब्ध कराना।
- स्नातकोत्तर एवं शोध छात्रों को उनके द्वारा तैयार विभिन्न उत्पाद/नमूनों हेतु विश्लेषण सुविधा उपलब्ध कराना।
- एनॉलेटिकल सविर्सेस के विस्तार के अंतर्गत प्रदेश के विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों के छात्र/छात्राओं को 1-6 माह की परियोजना / शोध कार्यो हेतु मार्गदर्षन देना।

5. कार्यक्रम विवरण (2018-2019)

सभी लाभार्थियों के प्रशिक्षण/कार्यशाला (6) एवं जागरूकता कार्यक्रम (4) आयोजित किया जाना प्रस्तावित है। इसके अतिरिक्त प्रयोगशाला सुविधा का विस्तार के अंतर्गत पंजीयन किये गये छात्र/छात्राओं एवं स्नातकोत्तर एवं एम फिल स्तर के विद्यार्थियों ;अपेक्षित संख्या 05द्ध को अनुसंधान द्वारा डिजरटेषन में सहायता प्रदान की जायेगी। प्रस्तावित कार्यक्रम निम्नानुसार हैः-

5.1 प्रशिक्षण एवं कार्यशाला

1. जल गुणवत्ता परीक्षण विधियां (2)
2. मृदा गुणवत्ता परीक्षण विधियां (1)
3. अत्याधुनिक उपकरणीय विधियों पर प्रशिक्षण (2)
4. खाद्य पदार्थ पर आधारित जागरूकता कार्यक्रम (4)
5. स्पेक्ट्रोस्कोपी केरेक्टराइजेषन पर कार्यशाला (1)

5.2 महाविद्यालयों में प्रदर्शन एवं जागरूकता।

5.3 शोध कार्य एवं विष्लेषणात्मक सुविधाएं का विस्तार।

5.4 विविभिन्न नमूनों के रासायनिक एवं उपकरण आधारित परीक्षण।

5.5 षासकीय विभाग एवं औद्योगिक ईकाईयों संपर्क कर प्रयोगशाला नेटवर्क का विस्तार करना।

5.6 प्रदेश के जलाषयों की गुणवत्ता का निरीक्षण।

5.7 मृदा गुणवत्ता परीक्षण एवं किसानों हेतु मृदा स्वास्थ्य पत्रक का निर्माण कार्य प्रारंभ करना।

सं. क्र.	कार्यक्रम विवरण	प्रथम तिमाही (अपेक्षित संख्या)	द्वितीय तिमाही (अपेक्षित संख्या)	तृतीय तिमाही (अपेक्षित संख्या)	चतुर्थ तिमाही (अपेक्षित संख्या)
I	प्रशिक्षणध्कार्यशाला एवं जागरूकता कार्यक्रमरू विश्लेषणात्मक एवं उपकरणीय विधियों पर आधारित प्रशिक्षणध्कार्यशाला (6) एवं जागरूकता कार्यक्रम (4) का समावेश कर कुल कार्यक्रमों का आयोजन निम्नवत किया जाना प्रस्तावित है। जिसमें 105 प्रतिभागी (अपेक्षित संख्या) लाभन्वित होंगे।				
1	जल गुणवत्ता परीक्षण विधियाँ पर प्रशिक्षण-कम-कार्यशाला	1(15)	-	-	1(15)
2	मृदा गुणवत्ता परीक्षण विधियाँ पर प्रशिक्षण-कम-कार्यशाला		1(15)	-	-
3	अत्याधुनिक उपकरणीय विधियाँ पर प्रशिक्षण	-	1(15)	-	1(15)
4	खाद्य पदार्थ आधारित पर जागरूकता कार्यक्रम	1(15)	1(15)	1(15)	1(15)
5	स्पेक्ट्रोस्कोपी केरेक्टराइजेशन पर कार्यशाला	-	1(15)	-	-
II	प्रयोगशाला भ्रमण एवं प्रदर्शन जागरूकता कार्यक्रम - इस अवधि में विभिन्न संस्थाओं हेतु प्रयोगशाला भ्रमण एवं प्रर्दशन/जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन अत्याधुनिक उपकरणीय विधिया एवं दैनदिनी उपयोग की वस्तुऐं जैसे जल, औषधी, खाद्य पदार्थ, कृषि उत्पादों इत्यादि की गुणवत्ता परीक्षण संबंधी जानकारी जनहित के लिए प्रदान करना प्रस्तावित है, जिसमें 50 प्रतिभागी (अपेक्षित संख्या) लाभन्वित होंगे।				
III	एनालिटिकल सर्विसेज का विस्तार ;इस अवधि मेंद्धरू परियोजना कार्य / डेसर्टेशन /इन्टरनशिप / पी एच डी शोध कार्य (1.6 माह) प्रयोगशाला सुविधा का विस्तार पंजीयन किये गये छात्र/छात्राओं (M. Sc./M. Pharma/M. Phil/B. Tech/M. Tech) (अपेक्षित संख्या 05) छात्र/छात्राओं को मार्गदर्शन प्रदान कर शोधकार्य में सहायता प्रदान करना प्रस्तावित है।				
IV	नमूनों का परीक्षण : गुणवत्ता आश्वासन प्रयोगशाला में शासकीय एवं अशासकीय शैक्षणिक संस्थानों, स्वैच्छिक संस्थाओं, अनुसंधान एवं विकास तथा शोधकर्ताओं से प्राप्त नमूनों का विश्लेषणात्मक एवं उपकरणीय विधियों से परीक्षण करना । (लगभग 50 नमूने प्रति तिमाही की दर से कुल 200 नमूनों का परीक्षण)।				
	जल एवं मृदा, खाद्य पदार्थ एवं कृषि उत्पादों, जड़ी बूटियोंए हर्बल औषधियों, उपकरणीय	50	50	50	50

	विधियों से नमूनों का परीक्षण				

6. अपेक्षित परिणाम

उपरोक्त कार्यक्रमों में स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थी तथा वैज्ञानिक कृषक शिक्षक भी सम्मिलित हो सकेंगे। केन्द्र में उपलब्ध आधुनिक उपकरणों से प्रदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों/महाविद्यालयों एवं शोध संस्थानों में कार्यरत व्यक्ति प्रयोगशाला से नमूनों का परीक्षण कराकर लाभान्वित हो सकेंगे। प्रदेश के विभिन्न विभागों विद्यार्थी एवं शोध छात्रों की सहायता से न केवल गुणवत्ता आष्वासन प्रयोगशाला प्रदेश में अनुसंधान एवं विकास का एक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर केन्द्र की स्थापना होगी वरन् प्रदेश के विश्वविद्यालयों/महाविद्यालयों/स्कूलों के शोधार्थी एवं विज्ञान के छात्रों को विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान में सहायता एवं मार्गदर्शन से लाभान्वित होगे। प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले छात्रों को भी रोजगार के अवसर प्राप्त करने में सहायता मिलेगी। साथ ही प्रयोगशाला द्वारा उपलब्ध करायी जा रही उपकरणीय विश्लेषण सुविधा से शोध छात्रों का शोधकार्य उच्च गुणवत्ता का होगा।

2.3 टिशु कल्चर प्रयोगशाला

1. पृष्ठभूमि

परिषद् में 01 पलांट टिशु कल्चर प्रयोगशाला सथापित की गइ हैंए जिसमें पदेश के विभिन विशवविलायए महाविलाय के छात्र लघु शोध काय करते है।

2. समीक्षा उपलबिघयां (2017-2018)

१. प्रदेश क़े विभिनन महाविलायों में की 02 स्नातकोत्तर छात्र-छात्राओं को टिशु कल्चर तकनीक पर लघुशोध काय कराया जा रहा है।
२. 15 स्नातकोत्तर (बायोटेकनोलाजी) महाविलायों की छात्र-छात्राओं को टिशयु कल्चर तकनीक पर जानकारी प्रदान की गइ है।
३. टिशयु कल्चर तकनीकद्वारा औषधीय पौधो के 07 नये प्रोटोकाल जैसे ब्रम्हि, बांस, मीठी नीम, अश्वगंधा, सर्पगंधा, अडूसा तैयार किये गयें ।

3. उददे्शय

इस प्रयोगशाला का उददे्शय वयावसायिक दृषिटकोण से महत्वपूर्ण पौधो का पौध ऊत्तक संवर्धन तकनीकी द्वारा उत्पादन करने हेतु तकनीकी विकास करना एवं प्रदेश में महत्वपूर्ण एवं विलुपत हो रही औषधीय पौधो का संरक्षण, संवर्धन एवं लोकवयापीकरण करना है।

4. सहयोगी सहभागी संसथायें

पदेश के विभिनन विशवविलायों, महाविद्यालयों व शोध संस्थानों के अतिरिक्त औद्योगिक प्रतिष्ठानों तथा वन, कृषि विभाग एवं ग्रामीण विकास विभाग आदि।

5. कायक्रम विवरण (2018-2019)

क्र.सं.	प्रस्तावित कायक्रम	प्रथम त्रैमास	दितीय त्रैमास	तृतीय त्रैमास	चर्तुथ त्रैमास
1.	पौध ऊत्तक संवर्धन पर प्रशिक्षण कायर्क्रम (05-07 दिवसीय)	प्रशिक्षण कार्यक्रमों की संरचना एवं तैयारी	01 प्रशिक्षण कायर्क्रम (15 लाभार्थी)	01 प्रशिक्षण कायर्क्रम (15 लाभार्थी)	01 प्रशिक्षण कायर्क्रम (15 लाभार्थी)
2.	लघुशोध कार्य	03 लघुशोध (03	.	03 लघुशोध	.

	इनरनशिप कार्य (4-6 माह)	लाभार्थी)		(03 लाभार्थी)	
3.	पौध ऊत्तक संवर्धन जागरकता कार्यशाला	कायर्क्रम की तैयारी	01 कायर्क्रम (03 लाभार्थी)	.	कायक्रमों की समीक्षा एवं आगामी वष हेतु कायक्रमों की ररूपरेखा एवं तैयारी।
4.	पौध ऊत्तक संवर्धन प्रयोगशाला निर्माण पर विकास	निर्माण एवं विकास कार्य	निर्माण एवं विकास कार्य	निर्माण एवं विकास कार्य	निर्माण एवं विकास कार्य

6. समय सारिणी

बिनदु क्रमांक 5 के अनुसार

7. अपेक्षित परिणाम

ऊत्तक संवर्धन व जैविक प्रयोगशाला का सुदृढीकरण व लगभग 10 पौधों की ऊत्तक संवर्धन का विकास हो सकेगा ।

टिशु कल्चर प्रयोगशाला का सुदृढीकरण तथा प्रदेश के विभिनन विभागों की मांग अनुसार टिशु कल्चर तकनीकी दृवारा उत्तपादित पौधों की पूर्ति ।

औषधीय एवं पोधों का उत्पादन विकास संरक्षण एवं प्रदेश में विलुनत हो रहे महत्वपूर्ण औषधीय पोधों की पहचान कर इनका संरक्षण एवं संवधन।

2.4 प्रो.टी.एस. मूर्ति विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी स्टेशन, औबेदुल्लागंज

1. पृष्ठभूमि

औबेदुल्लागंज, जिला रायसेन में स्थित 14 एकड़ प्रक्षेत्र में यह उद्यान 1995-96 में स्थापित किया गया था, जहां औषधीय पौधा उद्यान तथा जैव विविधता संरक्षण उद्यान स्थापित किया गया है। परिसर में जल प्रबंधन हेतु दो तालाबों के विकास के साथ ही एक ग्रीन हाउस व मिस्ट चैंबर भी विकसित किया गया है। सगंध पौधों से तेल निकालने का एक आसवन संयंत्र भी परिसर में स्थापित किया गया है। केन्द्र में जैविक कृषि का बढावा देने हेतु जैविक कृषि पर अनुप्रयोग एवं प्रदर्शन किया जाता है। वर्तमान में शासन से 9 एकड् अतिरिक्त भूमि आवंटन से कुल क्षेत्रफल 24 एकड़ हो गया है, जिसमें म.प्र. शासन से स्वीकृत ग्रामीण प्रौद्योगिकी केन्द्र तथा प्रशिक्षण छात्रावास की स्थापना की जा चुकी हैं, जिसमें प्रदेश के विविध विधाओं के शिल्पियों एवं कारीगरों को उत्कृष्ट प्रशिक्षण प्रदान कर उनका कौशल उन्नयन किया जावेगा ।

2. समीक्षा/उपलब्धियॉ (2017-2018)

- जनसाधारण, छात्रों एवं शोधार्थियों को औषधीय पौधों की जानकारी एवं शोधकार्यो को करने हेतु एक अन्य औषधीय प्रक्षेत्र विकसित कर महत्वपूर्ण औषधीय पौधों के रोपण का कार्य शुरू किया गया ।
- केन्द्र के 24 एकड़ क्षेत्र से निकले जैविक कचड़े से जैविक केंचुआ खाद निर्माण सहित नाडेप खाद एवं जीवामृत, पांचपत्ती काढ़ा, मट्ठा नीम आदि जैविक तरल उर्वरकों एवं कीटनाशकों आदि का निर्माण कर कृषकों को प्रदर्शित कर उन्हें जैविक कृषि अपनाने हेतु प्रेरित किया गया। उल्लेखनीय हैं कि विगत 5 वर्षो से केन्द्र द्वारा किसी भी प्रकार के रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशकों का

उपयोग नही किया जा रहा है। केन्द्र द्वारा खाद एवं कीटनाशकों के उत्पादन में आत्मनिर्भता प्राप्त की जा चुकी हैं।

- जैविक कृषि पद्धति का खरीफ फसलों व सब्जियों पर प्रयोग व कृषकों को प्रदर्शन हेतु प्रदर्शन प्लाट तैयार कर खरीफ फसलों विशेषतः धान, मिलेट्स व विविध सब्जियों के बीजों द्वारा पौधे तैयार किये गये।
- उधान क्षेत्र में फैले 100 से अधिक प्रजातियों के औषधीय पौधों से बीज व कलम द्वारा पौधे तैयार करने का कार्य शुरू किया गया। उल्लेखनीय है कि केन्द्र द्वारा जैव विविधता संरक्षण अर्न्तगत प्रदेश से खत्म हो रहे है या विलुप्ति की कगार पर पहंुच रहे महत्वपूर्ण औषधीय पौधो के संरक्षण एवं संवर्धन का काय पूर्णत जैविक पद्धति से किया जा रहा है। म.प्र. शासन कृषि एवं किसान कल्याण विभाग की आत्मा परियोजना अंतर्गत प्रदेश के विभिन्न जिलों से आये कृषकों को उद्यान क्षेत्र का भ्रमण करा कर जैव विविधता औषधीय पौधों की कृषि, जैविक कृषि, टिशू कल्चर, मशरूम उत्पादन सहित कृषि आधारित रोजगारों की जानकारी/1 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया ।
- उद्यान क्षेत्र में स्थित आसवन संयंत्र से किसानों, छात्रों एवं ग्रामीण महिलाओं को औषधीय एवं सुगंधित पौधों से तेल निकालने की विधि का प्रदर्शन किया गया तथा खस/निम्बोली एवं यूकेलिप्टस का तेल निकाला गया व इसके व्यवसायिक महत्व की जानकारी किसानों एवं जनसामान्य को प्रदान की गई ।
- प्ररदेश के सामान्य, अनुसूचित जाति, जनजाति, पिछड़ावर्ग एवं गरीबी रेखा के नीचे के युवाओं, छात्रों, कृषकों एवं महिलाओं को स्वरोजगार स्थापित कर स्वावलंबन प्रदान करने के उद्वदेश्य से कम लागत से खाने योग्य मशरूम जैसे आयॅस्टर,, बटन एवं आदि प्रजातियों के मशरूमों का प्रायोगिक उत्पादन एवं मशरूम के विभिन्न उत्पादों का निर्माण तथा इसमें विद्यमान पोषक तत्वों के बारें में जानकारी/प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण कार्य निरंतर कराया गया । मशरूम के बारे में व्याप्त भ्रॉतियों को भी दूर किया गया तथा बताया गया कि मशरूम विशुद्ध शाकाहारी है व कृपोषण रोकने में सहायक है।
- प्रो.टी.एस.मूर्ति वि.एवं.प्रौद्यो.स्टेशन ओबेदुल्लागंज दिनांक 30.11.2017 से 04.12.2017 तक कौशल आधारित जैविक कृषि अनुप्रयोग पर 5 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें रायसेन जिले के ओबेदुल्लागंज ब्लाक के अंतर्गत आने वाले ग्रामों के कुल 23 कृषक प्रतिभागिता की गई। इस दौरान कृषकों को जैविक खाद निर्माण की उन्नत तकनीकों तथा जैविक तरीके से बनने वाले विभिन्न कीटनाशकों के उपयोग एवं निर्माण की जानकारी प्रदान की गई।
- दिनांक 14.11.2017 से 17.11.2017 तक 4 दिवसीय कौशल आधारित मशरूम उत्पादन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें मण्डला एवं नैनपुर जिले की कुल 30 अनुसूचित जाति/जनजाति की महिलाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण दौरान महिलाओं को आयेस्टर मशरूम उत्पादन तकनीक तथा उत्पादन पश्चात् मशरूम से तैयार किये जाने वाले विभिन्न उत्पादों के बारे में बताया गया एवं इसके साथ छोटे स्तर पर रोजगार प्रांरभ करने हेतु आवश्यक जानकारी प्रदान की गई।

3.उद्देश्य

- औषधीय एवं सगंध पौधों के समग्र विकास हेतु अनुसंधान एवं प्रौद्योगिकी विकास के प्रारूप विकसित कर प्रदेश को इस दिशा में अग्रणी स्थान दिलाना एवं व्यवसायिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण पौधों का पौध ऊतक संवर्धन तकनीकी द्वारा उत्पादन करने हेतु तकनीकी विकास करना।
- प्रदेश में महत्वपूर्ण एवं विलुप्त हो रही औषधीय पौधों का संरक्षण, संवर्धन एवं लोकव्यापीकरण करना।
- जैविक कृषि के समन्वित शोध विकास की प्रौद्योगिकी एवं उसके प्रदर्शन प्रारूपों को विकसित कर प्रदेश में उसे बढ़ावा देना।

- वानस्पतिक जैव विविधता संरक्षण का पार्क विकसित कर मॉडल स्थापित करना।
- कम लागत वाली ग्रामीण प्रौद्योगिकी का विकास एवं छात्रों, कृषकों एवं महिलाओं हेतु रोजगार उन्मुखी विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन कर उन्हें स्वावलंबन प्रदान करना।
- प्रदेश के किसानों को जलवायु परिवर्तन एवं ग्लोबल वार्मिंग के कारण पर्यावरण एवं कृषि उत्पादन पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में वैज्ञानिक ढंग से जानकारी सहित इससे बचाव हेतु जागरूकता पैदा करना ।
- लगातार कम होती जा रही मिट्टी की उर्वरक क्षमता बनाये रखने के लिए मृदा परीक्षण कर आवश्यक उर्वरकों का उपयोग करना।
- खाद का ज्ञान- जैविक खाद के अनुप्रयोगों का प्रचार प्रसार एवं रासायनिक खाद का कम से कम उपयोग करने हेतु किसानों को प्रेरित करना।
- बीज का चयन- फसलों के उत्पादन में उन्नत किस्म के बीजों के चयन की जानकारी का प्रचार प्रसार करना।
- रासायनिक कीटनाशकों की बजाय जैविक कीटनाशकों के उपयोग को बढ़ावा देना।
- अनाज के उचित भंडारण एवं रखरखाव संबंधी जानकारी उपलब्ध कराना।
- आवश्यक होने पर बीजों के प्रोसेसिंग यूनिट की स्थापना एवं खाद प्रसंस्करण प्रशिक्षण।
- फसलों की उचित पैदावार के लिए सिंचाई के उन्नत तरीके जैसे ड्रिप सिंचाई पद्धति के जिए प्रेरित करना। उद्यानिकी विस्तार हेतु विभिन्न कृषि मौसमी क्षेत्रों में उचित फसल का चयन कर वैज्ञानिकी पद्धति से फलोत्पादन, भण्डारण, प्रसंस्करण एवं विपणन।
- प्रदेश के किसानों को जलवायु परिवर्तन एवं ग्लोबल वार्मिंग के कारण पर्यावरण एवं कृषि उत्पादन पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में वैज्ञानिक ढंग से जानकारी सहित इससे बचाव हेतु जागरूकता पैदा करना।

4. सहयोगी/सहभागी संस्थायें

प्रदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों व शोध संस्थानों के अतिरिक्त औद्योगिक प्रतिष्ठानों, औषधीय एवं सुगंधित पौधों व जैविक कृषि के क्षेत्र में कार्यरत् स्वयंसेवी संस्थाओं तथा वन, कृषि विभाग एवं पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग के साथ भी समन्वय स्थापित किया जाएगा।

5. कार्यक्रम विवरण एवं समय सारणी

कार्यक्रम विवरण	प्रथम तिमाही	द्वितीय तिमाही	तृतीय तिमाही	चतुर्थ तिमाही
जैव विविधता संरक्षण/ औषधीय एवं सुगंध पौध उद्यान	पौधों की देख भालए संरक्षण एवं विकास नई क्यारियों का निर्माण	सतत् कार्यए नई क्यारियों का निर्माण एवं औषधीय पौधों की नई प्रजातियों का रोपड़।	सतत् कार्य जारी रहेगा	सतत् कार्य कार्यक्रम समीक्षा आगामी वर्ष हेतु कार्यक्रम रूपरेखा निर्माण
औषधीय एवं सगंध पौधों के संरक्षण एवं संवर्धन पर कार्यशाला/ प्रशिक्षण / जागरूकता कार्यक्रम।	कार्यक्रम रूपरेखा निर्माण/तैयारी	01 कार्यक्रम	01 कार्यक्रम	01 कार्यक्रम

जैविक कृषि विकास/ जैविक कचरे से खाद निर्माण तथा जैविक कृषि अनुप्रयोग प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन	प्रचार प्रसार जागरूकता कार्यक्रम जैविक कृषि अनुपयोग एवं प्रदर्शन हेतु मैदानी तैयारी	जैविक कृषि अनुप्रयोग के अन्र्तगत रबि एवं खरीफ फसल एवं सब्जीयों हेतु प्रदर्शन प्लाट पर कार्य जैविक कीटनाशकों/खाद का निर्माण/ अनुप्रयोग एवं प्रदर्शन	01 प्रशिक्षण	कार्यक्रमों की समीक्षा एवं आगामी वर्ष हेतु कार्यक्रम संरचना 01 प्रशिक्षण
कम लागत रोजगार उन्मुखी खाने योग्य मशरूम उत्पादन पर शोध विकास कार्य एवं मशरूम उत्पादन पर जागरूकता कार्यक्रम।	मशरूम पर शोध विकास कार्य एवं लाभार्थी सवेक्षण कार्य जारी रहेगा।	मशरूम पर शोध विकास कार्य एवं लाभार्थी सवेक्षण कार्य जारी रहेगा।	01 प्रशिक्षण	01 प्रशिक्षण

7. अपेक्षित परिणाम

- जैविक कृषि की तकनीकों पर शोध-विकास एवं प्रदर्शन व क्षेत्र/प्रदेश के विभिन्न जिलों में प्रचार प्रसार एवं प्रशिक्षण आदि के आयोजन से प्रदेश में जैविक कृषि का विकास होगा तथा कृषि को लाभ का धंधा बनाने में मदद होगी।
- जैव प्रौद्योगिकी के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षणों एवं जागरूकता कार्यशालाओं के आयोजन द्वारा प्रदेश में जैव प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देना तथा मानव संसाधन विकास होगा।
- प्रदेश में जैव प्रौद्योगिकी शोध द्वारा प्राकृतिक संसाधनों के प्रभावी व अक्षय विकास की क्षेत्रीय समन्वित परियोजनाओं को बढ़ावा देना।
- जैव प्रौद्योगिकी द्वारा औषधीय एवं अन्य उपयोगी पौधों के विकास हेतु जैविक कृषि एवं विकास का प्रो. टी.एस.मूर्ति विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी स्टेशन में एक समग्र प्रारूप विकसित करना ताकि प्रदेश में अन्यत्र भी ऐसे प्रयासों को दिशा देकर समन्वय व नेटवर्किंग स्थापित की जा सके।
- प्रो. टी.एस.मूर्ति विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी स्टेशन क्षेत्र में बायोगैस संयंत्र की स्थापना की जावेगी ।
- प्रो. टी.एस.मूर्ति विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी स्टेशन क्षेत्र के जैविक कचरे से निरंतर खाद निर्माण कर आत्मनिर्भरता हासिल होगी साथ ही किसानों में जागरूकता पैदा कर खेतों के जैविक कचरें को जलाने की प्रथा पर रोक लगेगी तथा कृषि को लाभ का धंधा बनाने में मदद होगी।
- उद्यान क्षेत्र को प्रदेश स्तर के जैवविविधिता उद्यान के रूप में विकसित कर कार्बन उत्सर्जन पर नियंत्रण तथा कार्बन क्रेडिटिंग हेतु प्रयास होगा तथा केन्द्र शोध एवं अध्ययन केन्द्र के रूप में विकसित होगा।
- प्रदेश के किसानों को जलवायु परिवर्तन एवं ग्लोबल वार्मिंग के कारण पर्यावरण एवं कृषि उत्पादन पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में वैज्ञानिक ढंग से जानकारी सहित इसके बचाव हेतु जागरूकता पैदा की जा सकेगी।

A -3 अनुसंधान एवं विकासीय गतिविधियां

1. पृष्ठभूमि

म.प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् के मुख्य उद्देश्य के अंतर्गत विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विकास के लिए अनुसंधान को बढ़ावा देना एवं प्रदर्शन, प्रशिक्षण प्रायोजन, प्रोत्साहन एवं समन्वयन करना है। इस हेतु राज्य में विभिन्न संस्थानों से विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्राप्त शोध परियोजनाओं का विश्लेषण कर विशेषज्ञों को अनुदान प्रदान किया जाता है। प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत शोधकर्मी एवं वैज्ञानिकों को देश-विदेश के उच्च कोटि के वैज्ञानिक विशेषज्ञों से संपर्क स्थापित करने, उनकी योग्यता एवं क्षमता में वृद्धि करने के उद्देश्य से परिचर्चा, संगोष्ठी आदि के आयोजन हेतु वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। प्रदेश में कार्यरत वैज्ञानिकों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कार्यरत वैज्ञानिकों से मंत्रणा कर अपनी अनुसंधान क्षमताओं में वृद्धि करने के उद्देश्य से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने शोधपत्रों के वाचन हेतु परिषद् द्वारा वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। प्रदेश के युवा वैज्ञानिकों को शोध के क्षेत्र में प्रोत्साहन एवं उच्च तकनीकी प्रशिक्षण हेतु अनेक कार्यक्रमों का संचालन किया जाता है। उपरोक्त वर्णित क्रियाकलापों से प्रदेश के वैज्ञानिकों की दक्षता एवं कार्यक्षमता का विकास करते हुए उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने में सहायता मिलती है तथा प्रदेश में शोध संबंधी कार्यों को प्रोत्साहन मिलता है। इस योजना के अंतर्गत निम्नलिखित कार्यक्रम/परियोजनायें क्रियान्वित की जाती हैं:

3.1 अनुसंधान परियोजनाएं

1. पृष्ठभूमि

म. प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् के मुख्य उद्देश्य के अन्तर्गत प्रदेश की वैज्ञानिक प्रतिभाओं को चिन्हित करते हुए अनुसंधान परियोजनाओं को प्रोत्साहित करना है। अनुसंधान परियोजनाएं न केवल विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों तथा शोध संस्थाओं तक सीमित हैं, बल्कि इनका विस्तार स्वंयसेवी संस्थाओं तक किया गया है। परिषद् द्वारा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से संबंधित विविध विषयों पर शोध हेतु अनुदान प्रदान किया जाता है।

2. समीक्षा/उपलब्धियाँ (2017-2018)

41 नई अनुसंधान परियोजनायें स्वीकृत की गई।

3. उद्देश्य

अनुसंधान परियोजनाओं के क्रियान्वयन का मुख्य उद्देश्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के माध्यम से प्रदेश के प्राकृतिक एवं अन्य संसाधनों का अक्षय दोहन करते हुए प्रदेश का सर्वांगीण विकास करना है। इसके अतिरिक्त इन परियोजनाओं के क्रियान्वयन से विज्ञान का विकास करते हुए प्रदेश के वैज्ञानिकों की कार्य क्षमता एवं उनके राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने में सहायता मिलती है तथा प्रदेश के शोध संबंधी क्रियाकलापों को प्रोत्साहन मिलता है।

4. सहयोगी/सहभागी संस्थायें

परिषद् द्वारा अनुसंधान परियोजनाओं का क्रियान्वयन प्रदेश स्थित सभी विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों, शोध संस्थानों तथा अनुसंधान के क्षेत्र में कार्यरत स्वंयसेवी संस्थाओं के सहयोग से किया जाता है।

5. कार्यक्रम विवरण

परिषद् को प्रतिवर्ष अनुसंधान परियोजनाओं के प्रस्ताव विभिन्न विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों, शोध संस्थानों से नियमित रूप से प्राप्त होते हैं। सर्वप्रथम इन परियोजनाओं का प्रारंभिक परीक्षण किया जाता

है। परियोजना की प्रस्तावित धनराशि एक लाख रूपये तक सीमित होने पर परियोजना प्रस्ताव पर विचार करने एवं परिषद् द्वारा निर्णय लेने हेतु गठित कार्यसमूह अनुशंसा देता है। अन्य परियोजनाओं की प्राथमिक छानबीन कर विस्तृत एवं वृहद् परियोजनाओं के प्रमुख अध्येता द्वारा विशेषज्ञ समिति के समक्ष प्रस्तुतीकरण किया जाता है। विशेषज्ञ समूह की अनुशंसा को दृष्टिगत रखते हुए परिषद् द्वारा परियोजना की स्वीकृति/अस्वीकृति पर निर्णय लिया जाता है।

परिषद स्तर पर शोध एवं अनुसंधान कार्य को बढावा देने हेतु परिषद में कार्यरत वैज्ञानिक वर्ग को आंतरिक शोध परियोजनाएं निर्धारित प्रक्रिया के अंतर्गत स्वीकृत कर क्रियान्वयन किया जायेगा।

सामान्य परिस्थितियों में एक प्रमुख अध्येता को एक बार में केवल एक परियोजना की स्वीकृति दी जाती है। सामान्य परियोजना की स्वीकृति की अवधि एक वर्ष से लेकर तीन वर्ष निर्धारित की जाती है।

6. समय सारिणी

प्रथम तिमाही	द्वितीय तिमाही	तृतीय तिमाही	चतुर्थ तिमाही
•प्राप्त नवीन प्रस्तावों का परिषद् स्तर पर कार्य समूह द्वारा परीक्षण करना एवं विशेषज्ञ समूह के समक्ष प्रस्तुतीकरण हेतु बैठक का आयोजन करना। •द्वारा स्वीकृत/प्रायोजित परियोजनाओं के मूल्यांकन/प्रगति की समीक्षा करना। • विशेषज्ञों की अनुशंसा अनुसार नवीन परियोजनाओं की स्वीकृति जारी करना।	•प्राप्त नवीन प्रस्तावों का परिषद् स्तर पर कार्य समूह द्वारा परीक्षण करना एवं विशेषज्ञ समूह के समक्ष प्रस्तुतीकरण हेतु बैठक का आयोजन करना। •द्वारा स्वीकृत/प्रायोजित परियोजनाओं के मूल्यांकन/प्रगति की समीक्षा करना। •विशेषज्ञों की अनुशंसा अनुसार नवीन परियोजनाओं की स्वीकृति जारी करना।	•प्राप्त नवीन प्रस्तावों का परिषद् स्तर पर कार्य समूह द्वारा परीक्षण करना एवं विशेषज्ञ समूह के समक्ष प्रस्तुतीकरण हेतु बैठक का आयोजन करना। •द्वारा स्वीकृत/प्रायोजित परियोजनाओं के मूल्यांकन/प्रगति की समीक्षा करना। • विषेषज्ञों की अनुशंसा अनुसार नवीन परियोजनाओं की स्वीकृति जारी करना।	•प्राप्त नवीन प्रस्तावों का परिषद् स्तर पर कार्य समूह द्वारा परीक्षण करना एवं विशेषज्ञ समूह के समक्ष प्रस्तुतीकरण हेतु बैठक का आयोजन करना। •द्वारा स्वीकृत/प्रायोजित परियोजनाओं के मूल्यांकन/प्रगति की समीक्षा करना। •विशेषज्ञों की अनुशंसा अनुसार नवीन परियोजनाओं की स्वीकृति जारी करना।

7. अपेक्षित परिणाम

- प्रदेश की वैज्ञानिक/सामाजिक एवं आर्थिक स्थितियों को दृष्टिगत रखते हुये संबंधित विषयों की शोध गतिविधियों को दिशा मिलेगी, जिससे प्रदेश एवं विज्ञान को प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त होगा।
- प्रदेश में वैज्ञानिकों की अनुसंधान दक्षता एवं क्षमताओं में गुणात्मक सुधार/उन्नयन किया जा सकेगा।
- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी आधारित प्रदेश के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में सहायता मिलेगी।
- बौद्धिक सम्पदा अधिकार के अंतर्गत नवीन अन्वेषणों पर पेटेंट प्राप्त किया जा सकेगा।
- वर्ष में कम से कम 65 शोध परियोजनाओं को सहयोग प्रदान करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

3.2 सेमीनार/सिम्पोसिया/वर्कशाप

1. पृष्ठभूमि

यह योजना प्रदेश के शिक्षाविदों, वैज्ञानिकों एवं शोध छात्रों को देश विदेश के उच्च कोटि के वैज्ञानिक विशेषज्ञों से संपर्क स्थापित करने, वैज्ञानिक संवाद एवं विचार-विमर्ष द्वारा योग्यता एवं क्षमता में वृद्धि करने एवं उन्हे, वैज्ञानिक अनुसंधान एवं विकास के क्षेत्र में सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से आरंभ की गई हैं।

2. समीक्षा/उपलब्धियाँ (2017-2018)

समीक्षा वर्ष में भौतिक लक्ष्य के रूप में 40 कार्यक्रमों के आयोजन का निर्धारण प्रस्तावित किया गया था। इसके विरूद्ध वर्ष 2017-2018 में सेमिनार/संगोष्ठी एवं कार्यशालाओं के 73 वृहद कार्यक्रम पूरे प्रदेश में आयोजित किये गये। इस प्रकार भौतिक लक्ष्य में लगभग 182 प्रतिशत उपलब्धि अर्जित की गई।

3. उद्देश्य

सेमीनार, संगोष्ठी एवं वैज्ञानिक कार्यशालाओं के आयोजन से प्रदेश की वैज्ञानिक प्रतिभाओं को अपने शोध कार्य के प्रस्तुतीकरण तथा राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिकों के साथ परिचर्चा कर वैज्ञानिक क्षमता का विकास करना इस योजना का मुख्य उद्देश्य हैं। इस वित्तीय वर्ष 2018-19 में लगभग 40 कार्यक्रमों का क्रियान्वयन किए जाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

4. सहयोगी/सहभागी संस्थायें

प्रदेश के समस्त विश्वविद्यालय, महाविद्यालय, शोध संस्थानों तथा अनुसंधान के क्षेत्र में कार्यरत स्वयंसेवी संस्थाओं के प्रतिभागी इस योजना का लाभ उठाते हैं।

5. कार्यक्रम विवरण

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के सभी विषयों पर प्रदेश के विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों तथा स्वयंसेवी संस्थाओं से सेमिनार, संगोष्ठी तथा कार्यशाला के आयोजन के प्रस्ताव आमंत्रित किये जाते हैं। प्रस्ताव प्राप्त होने के उपरांत इनका नियमित प्रारंभिक परीक्षण किया जाता है, जिससे यह सुनिश्चित कर लिया जाये कि परिषद् के निर्धारित मापदंड के अनुरुप प्रस्ताव तैयार किया गया है। प्रस्तावों के त्वरित निराकरण के लिए परिषद् द्वारा गठित कार्यदल की अनुशंसा के अनुसार, परिषद् द्वारा प्रस्ताव की स्वीकृति एवं अस्वीकृति पर निर्णय लिया जाता है।

6. समय सारिणी

प्रथम तिमाही	द्वितीय तिमाही	तृतीय तिमाही	चतुर्थ तिमाही
• नवीन प्रस्तावों की समीक्षा के लिए कार्यदल की कम से कम एक बैठक का आयोजन प्रत्येक माह कर निर्णय अनुसार अनुशंसा के आधार पर परिषद् द्वारा कार्यवाही करना। • स्वीकृत प्रस्तावों की 75 प्रतिशत राशि का भुगतान एवं अंकेक्षित प्रस्तावों की 25	• नवीन प्रस्तावों की समीक्षा के लिए कार्यदल की कम से कम एक बैठक का आयोजन प्रत्येक माह कर निर्णय अनुसार अनुशंसा के आधार पर परिषद् द्वारा कार्यवाही करना। • स्वीकृत प्रस्तावों की 75 प्रतिशत राशि का भुगतान एवं अंकेक्षित प्रस्तावों की 25	• नवीन प्रस्तावों की समीक्षा के लिए कार्यदल की कम से कम एक बैठक का आयोजन प्रत्येक माह कर निर्णय अनुसार अनुशंसा के आधार पर परिषद् द्वारा कार्यवाही करना। •स्वीकृत प्रस्तावों की 75 प्रतिशत राशि का भुगतान एवं अंकेक्षित प्रस्तावों की 25	• नवीन प्रस्तावों की समीक्षा के लिए कार्यदल की कम से कम एक बैठक का आयोजन प्रत्येक माह कर निर्णय अनुसार अनुशंसा के आधार पर परिषद् द्वारा कार्यवाही करना। • स्वीकृत प्रस्तावों की 75 प्रतिशत राशि का भुगतान एवं अंकेक्षित प्रस्तावों की 25

प्रतिशत राशि का भुगतान किया जाना।	प्रतिशत राशि का भुगतान किया जाना।	प्रतिशत राशि का भुगतान किया जाना।	प्रतिशत राशि का भुगतान किया जाना।

7. अपेक्षित परिणाम

इस गतिविधि के अंतर्गत प्रदेश की वैज्ञानिक, शैक्षणिक एवं स्वयंसेवी संस्थाओं में लगभग 40 सेमीनार, संगोष्ठी एवं कार्यशाला का आयोजन किया जा सकेगा, जिसमें लगभग 4000 शोध छात्र, शिक्षाविद् एवं वैज्ञानिक लाभान्वित हो सकेगें।

3.3 अंतर्राष्ट्रीय यात्रा अनुदान योजना

1. पृष्ठभूमि

प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत शोधकर्मी, वैज्ञानिकगण एवं शिक्षाविदों को अपने शोधपत्रों के अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर वाचन करने, वैज्ञानिक प्रतिभा के प्रोत्साहन हेतु मंच प्रदान कर अुनसंधान क्षमता का विकास करने हेतु परिषद् द्वारा यह योजना प्रारंभ की गई है। इस योजना के अन्तर्गत विज्ञान एवं प्रौधोगिकी के सभी विषयों के शोधपत्रों का वाचन करने हेतु परिषद् वित्तीय सहायता प्रदान करती है।

2. समीक्षा/उपलब्धियाँ (2017-2018)

वर्ष 2017-18 में 40 वैज्ञानिकों को शोध पत्र प्रस्तुतिकरण हेतु यात्रा अनुदान प्रदान करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया था। इसके विरूद्ध इस वित्तीय वर्ष में 34 वैज्ञानिकों को विदेश यात्रा अनुदान हेतु स्वीकृति प्रदान की गई।

3. उद्देश्य

इस योजना के अन्तर्गत परिषद् प्रदेश में अनुसंधानरत वैज्ञानिक/शोधार्थियों को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने शोधपत्रों का वाचन करने हेतु यात्रा अनुदान प्रदान करती है, जिससे उनके द्वारा किये गये शोध को नई पहचान प्राप्त हो सके एवं उनके द्वारा किये गये शोध को आगे बढाने में सहायता प्राप्त हो सके। वित्तीय वर्ष 2018-19 में प्रदेश के लगभग 40 वैज्ञानिकों को सहयोग दिये जाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

4. सहयोगी/सहभागी संस्थायें

प्रदेश के समस्त विश्वविद्यालय, महाविद्यालय, शोध संस्थानों तथा अनुसंधान के क्षेत्र में कार्यरत स्वयं सेवी संस्थाओं के लोग इस योजना का लाभ उठा सकते है।

5. कार्यक्रम विवरण

इस योजना के अंतर्गत प्रदेश के महाविद्यालयों/विश्वविद्यालय एवं शोध संस्थानों में कार्यरत ऐसे वैज्ञानिकों को सहयोग प्रदान किया जाता है, जिनका शोधपत्र वाचन एवं पोस्टर प्रस्तुतीकरण हेतु अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों हेतु स्वीकृत किया गया हो। संबधित वैज्ञानिक को निर्धारित प्रपत्र में आवेदन करना होता है, जिसमें शोध पत्र की विषय वस्तु तथा संबधित वैज्ञानिक संस्थान की स्वीकृति एवं निमंत्रण संलग्न किया जाना आवश्यक होता है। प्रस्ताव के त्वरित निदान हेतु वर्तमान में परिषद स्तर पर कार्यदल गठित कर अनुशंसा के आधार पर प्रस्ताव का निस्तारण किया जाता है। यद्यपि यात्रा के पूर्व केवल स्वीकृति आदेश जारी होते है परन्तु यात्रा का उद्देश्य संपन्न होने के पश्चात् आवश्यक यात्रा अभिलेख प्रस्तुत करने के उपरान्त धनराशि विमुक्त की जाती है। यात्रा अनुदान योजना के अंतर्गत अधिकतम राशि 40,000/- रूपये अथवा यात्रा के वास्तविक व्यय का 50 प्रतिशत एवं पंजीयन शुल्क का 50 प्रतिशत, जो भी कम हो, स्वीकृत की जाती है।

6. समय सारिणी

प्रथम तिमाही	द्वितीय तिमाही	तृतीय तिमाही	चतुर्थ तिमाही
• 25 प्रतिशत बजट आधारित प्रस्तावों का निस्तारण	• 23 प्रतिशत बजट आधारित प्रस्तावों का निस्तारण	• 32 प्रतिशत बजट आधारित प्रस्तावों का निस्तारण	20 प्रतिशत बजट आधारित प्रस्तावों का निस्तारण

7. अपेक्षित परिणाम

लगभग 40 वैज्ञानिकों को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर शोधपत्र प्रस्तुतीकरण एवं वाचन का अवसर प्राप्त हो सकेगा। प्रदेश के वैज्ञानिकों को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर क्रियान्वित की जा रही अनुसंधान गतिविधियों की जानकारी प्राप्त हो सकेगी, जिससे उन्हें अपने अनुसंधान कार्यक्रम में आवष्यक उन्नयन का अवसर मिल सकेगा।

प्रदेश के वैज्ञानिकों को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कार्यरत वैज्ञानिकों से मन्त्रणा कर अपनी अनुसंधान क्षमताओं में वृद्वि करने का अवसर मिलेगा। प्रदेश के मानव संसाधन की क्षमता मे विकास, प्रदेश के विकास में सहायक होगा।

3.4 व्याख्यानमाला

1. पृष्ठभूमि

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नित नये नवाचार हो रहे हैं, जिससे विज्ञान की विभिन्न विधाओं में नित नई जानकारियाँ जुडती जा रही हैं तथा विकास के नये-नये आयाम स्थापित हो रहे हैं। विज्ञान जगत की विभिन्न गतिविधियों में कार्यरत वैज्ञानिक समुदाय के मध्य संवाद स्थापित होना अपरिहार्य हो गया है। वैज्ञानिक जगत के लिए यह भी आवष्यक हो गया है कि उसके अपने विशेषज्ञता के क्षेत्र में निरन्तर ज्ञान का परिमार्जन होता रहे। इस संदर्भ में परिषद एवं प्रदेश में कार्यरत वैज्ञानिक समुदाय को इस प्रक्रिया से जोड़ने के लिए व्याख्यानमाला के आयोजन का निर्णय लिया गया है। इस मंच के माध्यम से परिषद व पूरे प्रदेश में अलग-अलग विषयों पर व्याख्यानमाला का आयोजन किया जायेगा, जिसमें देश व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिकों को आमंत्रित किया जायेगा।

2. समीक्षा/उपलब्धियाँ (2017-2018)

कार्यक्रम को वर्ष 2018-19 में प्रभावी रूप से क्रियान्वित किया जाना है।

3. उद्देश्य

इसका मुख्य उद्देश्य प्रदेश में कार्यरत वैज्ञानिकों, विज्ञान षिक्षकों एवं विद्यार्थियों का बौद्धिक विकास, नवीन वैज्ञानिक गतिविधियों से अवगत कराना एवं प्रदेश के विकास हेतु विज्ञान की विभिन्न विधाओं में कार्य योजना तैयार करना है।

4. सहयोगी/सहभागी संस्थायें

प्रदेश एवं राष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिक, शोध एवं षिक्षण संस्थायें।

5. कार्यक्रम विवरण

वर्ष 2018-19 हेतु कुल 6 व्याख्यान एवं वैज्ञानिक विमर्श का आयोजन किया जायेगा तथा विशेष दिवसों पर विशेष व्याख्यान एवं समूह चर्चा आयोजित की जावेगी ।

6. समय सारिणी

प्रथम तिमाही	द्वितीय तिमाही	तृतीय तिमाही	चतुर्थ तिमाही
02 व्याख्यान का आयोजन	02 व्याख्यान का आयोजन	03 व्याख्यान का आयोजन	03 व्याख्यान का आयोजन

7. अपेक्षित परिणाम

- राष्ट्रीय / अंतर्राष्ट्रीय स्तर के कम से कम 10 व्याख्यान विज्ञान की विभिन्न विधाओं पर प्रदेश में आयोजित किये जायेंगें ।
- प्रदेश के लगभग 3000 वैज्ञानिकों / विज्ञान शिक्षकों एवं शोधर्थियों का बौद्धिक विकास होगा तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विज्ञान में होने वाले नवाचार, विकास एवं नवीन प्रौद्योगिकियों संबंधी ज्ञान का परिमार्जन होगा ।

3.5 युवा वैज्ञानिक हेतु योजना/युवा वैज्ञानिक सम्मेलन एवं प्रशिक्षण

1. पृष्ठभूमि

प्रदेश के युवा वैज्ञानिकों को शोध के क्षेत्र में प्रोत्साहन देने एवं उचित मंच प्रदान करने हेतु म.प्र. विज्ञान एवं प्रौधोगिकी परिषद् प्रतिवर्ष युवा वैज्ञानिक सम्मेलन का आयोजन करती है। अभी तक परिषद् प्रदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों / संस्थाओं के माध्यम से 33 युवा वैज्ञानिक सम्मेलनों का आयोजन कर चुकी है। वर्ष 2017-18 में युवा वैज्ञानिक संम्मेलन का आयोजन किया गया।

2. समीक्षा/उपलब्धियाँ (2017-2018)

33वीं युवा वैज्ञानिक सम्मेलन एवं कार्यशालाओं का आयोजन 15-16 मार्च 2018 के दौरान रानी दुर्गावती वि वि में किया गया। इस सम्मेलन में 219 युवा वैज्ञानिकों ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किये।
33वीं युवा वैज्ञानिक सम्मेलन में 17 विषयों में 30 शोधार्थियों को राज्य स्तर के युवा वैज्ञानिक पुरस्कार प्रदान किये गये। इन युवा वैज्ञानिकों को प्रशस्ति पत्र तथा पुरस्कार राशि रू. 25,000/-, 20,000/- एवं 15,000/- क्रमश: प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान हेतु प्रदान किये गये।

3. उद्देश्य

म.प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् युवा प्रतिभा को उभारने हेतु प्रतिवर्ष युवा वैज्ञानिक सम्मेलन का आयोजन करती है। सम्मेलन का उद्देश्य प्रतिभाशाली वैज्ञानिकों की पहचान कर उन्हें शोध कार्ययोजना हेतु प्रोत्साहित करना है। साथ ही युवा वैज्ञानिकों को उच्च स्तरीय शोध की सुविधा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से, अनुसंधान संस्थानों में उच्च तकनीकी प्रशिक्षण हेतु 3-6 महीनों के लिए भेजा जाता है। इस हेतु उन्हें छात्रवृत्ति, यात्रा अनुदान एवं दैनिक भत्ता आदि का वित्तीय सहयोग परिषद् द्वारा प्रदान किया जाता है।

4. सहयोगी/सहभागी संस्थायें

प्रदेश के समस्त विश्वविद्यालय, महाविद्यालय एवं अन्य संस्थान।

5. कार्यक्रम विवरण

योजना के क्रियान्वयन हेतु प्रतिवर्ष विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षा परिषद् द्वारा मान्यता प्राप्त संस्थानों से आयोजन हेतु प्रस्ताव आमंत्रित किये जाते है। आयोजक संस्था का अंतिम चयन इस प्रकार किया जाता है कि प्रदेश के विभिन्न अचंलों में अलग-अलग समय में चयनित संस्था को आयोजन करने का अवसर मिल सके। आयोजक संस्था के चयन उपरान्त परिषद् द्वारा प्रदेश के

युवा वैज्ञानिकों से शोधपत्र आमन्त्रित किये जाते हैं। विषय विशेषज्ञ समिति द्वारा शोध पत्रों की छानबीन पश्चात् योग्य युवा वैज्ञानिकों को आमन्त्रित किया जाता है।

युवा वैज्ञानिक सम्मेलन के दौरान चिन्हित 19 विषयों के शोधपत्रों का प्रस्तुतीकरण होता है एवं देशभर से आये विषय विशेषज्ञ इन शोधपत्रों का मूल्याकंन करते हैं। तत्पश्चात चुने हुये युवा वैज्ञानिकों को सम्मानित किया जाता है। पुरस्कार स्वरुप इन्हें प्रशस्ति पत्र तथा पुरस्कार राशि रू. 25,000/-, 20,000/- एवं 15,000/- क्रमश: प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान हेतु प्रदान की जाती है। युवा वैज्ञानिक को देश के किसी भी शोध संस्थान में उनके द्वारा किये हुये शोधकार्य को आगे बढ़ाने हेतु 3-6 माह तक के लिये उच्च प्रशिक्षण हेतु भेजा जाता है।

6. समय सारिणी

प्रथम तिमाही	द्वितीय तिमाही	तृतीय तिमाही	चतुर्थ तिमाही
संस्था का चुनाव	चयनित संस्था के साथ 33वीं युवा वैज्ञानिक कांग्रेस एवं कार्यशालाओं के आयोजन की रुपरेखा तैयार करना	शोधपत्रों का आमंत्रण एवं शोध पत्रों की छानबीन	सम्मेलन के आयोजन हेतु आवश्यक व्यवस्थायें एवं 28 फरवरी 2018 को आयोजन

7. अपेक्षित परिणाम

इस योजना के अंतर्गत 19 विभिन्न विज्ञान के चिन्हित विषयों में युवा वैज्ञानिकों को पुरस्कृत किया जायेगा। पुरस्कार स्वरुप इन्हें प्रषस्ति पत्र तथा पुरस्कार राशि रू. 25,000/-, 20,000/- एवं 15,000/- क्रमश: प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान हेतु प्रदान की जाती है। देश के किसी भी शोध संस्थान में उनके द्वारा किये गये शोधकार्य को आगे बढ़ाने हेतु प्रशिक्षण/अनुसंधान कार्य करने के लिये परिषद् द्वारा भेजा जायेगा ।

3.6 युवा वैज्ञानिक प्रशिक्षण अध्येतावृति

1. पृष्ठभूमि

प्रदेश के विभिन्न संस्थानों, विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कई युवा वैज्ञानिक/शोधार्थी कार्यरत है तथा उपलब्ध संसाधनों का उपयोग कर शोध कार्य को आगे बढ़ा रहे हैं। देश में अंतराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर के कई शोध संस्थान है, जिसमें नवीनतम उत्कृष्ट उपकरण तथा उत्कृष्ट वैज्ञानिक संसाधन उपलब्ध हैं। अतः यह विचार किया गया कि प्रदेश के युवा वैज्ञानिकों/शोधार्थियों को इन प्रयोगशालाओं/संसाधनों में प्रशिक्षण हेतु भेजा जाये जिससे प्रदेश के युवा वैज्ञानिक नवीनतम तकनीकी से अवगत हो एवं अपने कार्य की गुणवत्ता एवं दक्षता बढ़ा सकें।

2. समीक्षा/उपलब्धियाँ (2017-2018)

प्रदेश के 15 युवा वैज्ञानिकों को राष्ट्रीय स्तर की प्रयोगशाला में प्रशिक्षण हेतु स्वीकृति दी गई।

3. उद्देश्य

प्रदेश के शोध संस्थानों, प्रयोगशालाओं, विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में कार्यरत युवा वैज्ञानिक/षोधार्थी को उच्च प्रशिक्षण हेतु देश की अग्रणी प्रयोशालाओं में शोध कार्य करने हेतु प्रायोजित करना। विज्ञान के क्षेत्र में हुए नवीनतम तकनीकी से अवगत कराना। शोध की गुणवत्ता बढ़ाना एवं

वैज्ञानिक दक्षता का विकास करना। प्रशिक्षण उपरांत अपने संस्थान/विभाग में नवीन शोध कार्य प्रारम्भ करना।

4. सहयोगी/सहभागी संस्थायें

देश की राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के शोध संस्थान, जहां प्रदेश के युवा वैज्ञानिक/शोधार्थियों को प्रशिक्षण पर भेजा जायेगा।

5. कार्यक्रम विवरण

युवा वैज्ञानिक प्रशिक्षण अध्येतावृति हेतु प्रदेश के शोध संस्थानों, विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कार्यरत युवा वैज्ञानिक एवं शोधार्थी, जिनकी आयु 35 वर्ष से कम हो, निर्धारित प्रारूप में चालू वर्ष में कभी भी आवेदन भेज सकते हैं। प्रशिक्षण की सामान्य अवधि तीन माह है। विशेष स्थिति में कार्य की आवश्यक्तानुसार प्रशिक्षण अवधि छः माह हो सकती है। प्रशिक्षण की अवधि किसी भी स्थिति में एक माह से कम नही होगी। युवा वैज्ञानिक/शोधार्थी देश में स्थित किसी भी राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय स्तर की प्रयोगशाला/संस्थान में प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते हैं। इस हेतु आवेदन के साथ उक्त संस्थान से प्रशिक्षण हेतु सहमति/स्वीकृति पत्र परिषद् को भेजना होता है। प्रस्तावों के निराकरण हेतु परिषद् द्वारा आंतरिक समिति का गठन किया गया है, जिसकी अनुशंसानुसार परिषद् द्वारा अध्येतावृति की स्वीकृति/अस्वीकृति पर निर्णय लिया जाता है। चयनित शोधार्थी के अध्येतावृति अनुमोदन होने पर स्वीकृति आदेश जारी किया जाता है। प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूर्ण करने के उपरांत प्रतिवेदन, प्रमाणपत्र आदि परिषद् को प्रेषित किये जाते है, जिसके मूल्याकंन एवं छानबीन के उपरांत राशि विमुक्त की जाती है। चयनित शोधार्थी को प्रशिक्षण अवधि में रू. 10,000 प्रतिमाह तथा आकस्मिक व्यय हेतु कुल राशि रू. 5,000 प्रदान की जाती है। प्रशिक्षण अवधि 5 माह से अधिक होने पर कुल आकस्मिक व्यय रू. 10,000 का प्रावधान है।

6. समय सारिणी

प्रथम तिमाही	द्वितीय तिमाही	तृतीय तिमाही	चतुर्थ तिमाही
प्राप्त प्रस्तावों की छानबीन एवं अनुशंसित/अनुमोदित आवेदनों हेतु स्वीकृति जारी करना।	प्राप्त प्रस्तावों की छानबीन एवं अनुशंसित/अनुमोदित आवेदनों हेतु स्वीकृति जारी करना	प्राप्त प्रस्तावों की छानबीन एवं अनुशंसित/अनुमोदित आवेदनों हेतु स्वीकृति जारी करना।	प्राप्त प्रस्तावों की छानबीन एवं अनुशंसित/अनुमोदित आवेदनों हेतु स्वीकृति जारी करना।

7. अपेक्षित परिणाम

- प्रदेश के युवा वैज्ञानिक/शोधार्थियों को अपने शोध के क्षेत्र में अग्रणी संस्थानों में उच्च स्तरीय प्रशिक्षण प्राप्त हो सकेगा।
- युवाओं को उत्कृष्ट शोध हेतु प्रोत्साहित किया जा सकेगा।
- प्रशिक्षण उपरान्त युवा वैज्ञानिक अपने संस्थान में नवीन शोध कार्य प्रारम्भ कर सकेंगे एवं उत्कृष्ट शोध को बढ़ावा मिल सकेगा।

3.7 पारंपरिक ज्ञान का प्रलेखीकरण एवं वैज्ञानिक सत्यापन

1. पृष्ठभूमि

मध्यप्रदेश जैव विविधता एवं परम्परागत ज्ञान के क्षेत्र में अत्यंत समृद्ध है। यह देश का बहुतायत वन क्षेत्र तथा अनुसूचित जनजातियों के बाहुल्य वाला प्रदेश है। इन विशेषताओं के चलते प्रदेश की समृद्ध

जैव सम्पदा के साथ प्रदेश जनजातीय मूलक एवं देशज ज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी है। प्रदेश के परम्परागत ज्ञान का विशेष रुप से स्वास्थ्य, कृषि, जल प्रबंधन, पर्यावरण एवं वानिकी आदि क्षेत्रों में विशेष महत्व है। विश्व व्यापार संगठन की मुक्त व्यापार संबधी अनुशंसाएं हमारे देश पर भी लागू होती है। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक हो गया है कि न केवल प्रदेश के परम्परागत ज्ञान का संरक्षण करें, बल्कि इस परम्परागत ज्ञान का प्रौद्योगिकी विकास, नये रोजगारों के सृजन एवं औद्योगिकरण के क्षेत्र में उपयोग भी किया जाये। इसके लिए सर्वप्रथम आवश्यक है कि इस ज्ञान को विज्ञान की कसौटी पर कसते हुए इसका वैज्ञानिक सत्यापन करते हुए व्यवस्थित प्रलेखन किया जाये। इससे हमारे इस देशज ज्ञान को मान्यता मिलेगी एवं इससे प्राप्त लाभ से संबंधित व्यक्ति या समुदाय की भी सहभागिता होगी। इस योजना के क्रियान्वयन से मुख्य रुप से ग्रामीण एवं आदिवासी जन समुदाय लाभान्वित होगा। इसके साथ-साथ नए-नए उत्पादों एवं प्रक्रिया का भी विकास होगा। इस ज्ञान के प्रलेखीकरण एवं सत्यापन से बायोपायरेसी (जैविक ज्ञान की चोरी) को भी रोका जा सकेगा तथा अवांछित पेटेंटों पर देश-विदेश में रोक लगाई जा सकेगी।

इसके साथ ही ग्रामीण अन्वेषणों को पुरस्कृत करने एवं ऐसी गतिविधियों को अन्य माध्यम से भी प्रोत्साहित करने का निर्णय लिया गया है। यह पाया गया है कि आधुनिक विज्ञान की नई विधाओं जैसे सूचना प्रौद्योगिकी, जैव प्रौद्योगिकी, नैनो टेक्नोलाजी आदि विषयों की मूल विषयवस्तु केवल अंग्रेजी या अन्य विदेशी भाषाओं में ही उपलब्ध है एवं इसका लाभ निचले स्तर तक अथवा कस्बों एवं ग्रामीण परिवेश के लोगों को नही मिल पाता। इसकी वजह से विज्ञान के इन अग्रणी क्षेत्रों में न ही उनकी जानकारी का उन्नयन होता है और न ही वे इस विषय पर उत्कृष्ट कार्य कर पाते हैं। आधुनिक विज्ञान की महत्वपूर्ण विधाओं को हिन्दी या क्षेत्रीय भाषाओं में 'अनुसृजन' की योजना परिषद द्वारा शुरू की गई है। इस योजना के अतंर्गत प्रदेश में उपलब्ध ऐसे ज्ञान की विषय वस्तु जिसे विधिवत लिपिबद्ध अथवा व्यवस्थित नही किया जा सका है, उसका प्रलेखन किया जायेगा, जिससे बौद्धिक संपदा के संरक्षण के साथ अक्षय विकास हेतु इसका दोहन किया जा सके।

2. समीक्षा/उपलब्धियाँ (2017-2018)

इस वर्ष पूर्व से स्वीकृत लगभग 10 परियोजनायें संचालित की जा रही है, जिनका सफलतापूर्वक क्रियान्वयन जा रहा है। इस योजना के अन्तर्गत अभी तक कुल सोलह पुस्तकों का प्रकाशन भी किया जा चुका है। नई 4 परियोजनायें स्वीकृत की गई।

3. उद्देश्य

- विभिन्न भाषा में उपलब्ध वैज्ञानिक ज्ञान का 'अनुसृजन' कर सहज एवं सुलभ भाषा में आमजन को उपलब्ध कराना।
- ग्रामीण परम्परागत जानकारी को हिन्दी एवं अंग्रेजी में आवश्यकतानुसार प्रलेखित कर सुरक्षित करना।
- बौद्धिक संपदा संरक्षण सुनिश्चित करना।
- ग्रामीण अन्वेषणों को प्रोत्साहित करने हेतु उनके अन्वेषणों को प्रलेखित करते हुये उपयोग में लिया जाना।
- परम्परागत/देशज ज्ञान का सत्यापन एवं अनुप्रयोग।
- संस्थाओं/संस्थानों के परस्पर समन्वयन कर उनकी स्वयं की कार्यक्षमता एवं दक्षता का विकास करना।
- परम्परागत ज्ञान की वैज्ञानिक मान्यता स्थापित करना।
- परम्परागत ज्ञान का उचित उपयोग तथा उससे औद्योगिकीकरण को प्रोत्साहित करना।
- समाज एवं जन साधारण की आंचलिक व क्षेत्रीय समस्याओं को परम्परागत ज्ञान द्वारा हल करना।

- प्रदेश में उपलब्ध संसाधनों एवं सुविधाओं के आधार पर अनुसंधानात्मक गतिविधियों को दिषा एवं गति प्रदान करना व परिणाम सूचक परियोजनाएं क्रियान्वित करना।
- परम्परागत ज्ञान के उपयोग से प्राप्त लाभ में परामपरागत ज्ञान धारक को सहभागिता सुनिष्चित करना।
- परम्परागत ज्ञान धारक की बौद्धिक क्षमता संरक्षित करना।

4. सहयोगी/सहभागी संस्थायें

विभिन्न विश्वविद्यालय, शोध संस्थान, वैज्ञानिक, शिक्षाविद् एवं स्वयं सेवी संस्थानो के माध्यम से ग्रामीण/आदिवासी जनता को इसका लाभ दिया जायेगा।

5. कार्यक्रम विवरण

परिषद् द्वारा उपरोक्त योजना के प्रस्ताव विभिन्न विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों, शोध संस्थानों, स्वयं सेवी संस्थानों से प्राप्त किये जाते है। सर्वप्रथम इन परियोजनाओं का प्रारम्भिक परीक्षण किया जाता है। यदि प्रस्ताव निर्धारित मापदण्डों को पूर्ण करते है तो अगली प्रक्रिया के रूप में इन प्रस्तावों को विषय विशेषज्ञों द्वारा परीक्षण कराया जाता है। तत्पश्चात पारदर्षिता के वातावरण में विशेषज्ञ समूह का गठन कर प्रमुख अध्येता से परियोजना प्रस्ताव पर प्रस्तुतीकरण कराया जाता है तथा अनुशंसा के अनुसार प्रस्ताव पर निर्णय लिया जाता है।

साधारणतः परियोजना स्वीकृति की अवधि एक से लेकर तीन वर्ष निर्धारित है। विशेषज्ञों द्वारा परियोजना की आवश्यक्ता एवं सहयोगी संस्थाओं की अधोसरंचना को ध्यान में रखते हुये परियोजना अवधि का निर्धारण किया जाता है। इसी प्रकार प्रगति प्रतिवेदन का परीक्षण भी कराया जाता है।

6. समय सारिणी

प्रथम तिमाही	द्वितीय तिमाही	तृतीय तिमाही	चतुर्थ तिमाही
विज्ञापन एवं पत्राचार के माध्यम से आवेदन आमंत्रित करना।	प्रथम तिमाही तक प्राप्त नवीन प्रस्तावों का परिषद् स्तर पर परीक्षण करना एवं प्रस्तावों के प्रमुख सहयोगी एवं सहभागी संस्थाओं की क्षमता तथा अधोसंरचना का विशेषज्ञ समूह के समक्ष प्रस्तुतीकरण हेतु बैठक का आयोजन करना। क्रियान्वित परियोजनाओं की समीक्षा करना।	परिषद् द्वारा स्वीकृत/प्रायोजित परियोजनाओं की मूल्यांकन/ प्रगति हेतु विभिन्न विश्वविद्यालयों /महाविद्यालयों/ शोध संस्थनों, स्वयं सेवी संस्थाओं का दौरा करना एवं प्रगति समीक्षा।	पूर्व मे चल रही परियोजनाओं हेतु प्रगति समीक्षा हेतु विषय विशेषज्ञों की बैठक आयोजित करना एवं विशेषज्ञों की राय अनुसार परियोजनाओं की निरन्तरता निर्धारित कर प्रथम किश्त की बकाया राशि / द्वितीय किष्त विमुक्त करना। तृतीय तिमाही तक प्राप्त नवीन प्रस्तावों का परिषद् स्तर पर परीक्षण, प्रस्तुतीकरण एवं निर्णय लेना।

7. अपेक्षित परिणाम

- प्रदेश की विकासीय गतिविधियों की आवष्यकतानुसार विषयों को लक्ष्य करते हुए इस प्रकार के ज्ञान का प्रलेखन किया जायेगा, जिससे प्रदेश के विकास को प्रत्यक्ष लाभ मिल सके।

- ऐसे ग्रामीण अन्वेषणों को प्रोत्साहित किया जायेगा, जिनसे प्रदेश का विषेष रूप से ग्रामीण विकास हो सके तथा ग्रामीण सेक्टर में नये रोजगार का सृजन हो सके।
- महत्वपूर्ण विषय वस्तु को लिपिबद्ध करने तथा दृष्य-श्रव्य माध्यम में प्रलेखित करने से परम्परागत ज्ञान को व्यवस्थित तथा समेकित किया जा सकेगा तथा इसके उपयोग से विकास की नई संभावनाओं को दिषा मिलेगी।
- मध्यप्रदेश के संदर्भ में प्राथमिकता के क्षेत्रों में अनुसंधान क्षमताओं में गुणात्मक सुधार/उन्नयन होगा।
- वर्ष में कम से कम 10 शोध परियोजनाओं को सहयोग प्रदान करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

A–4 साइंस फॉर सोशियों इकॉनॉमिक डेव्हलपमेंट

1. पृष्ठभूमि

प्रदेश के सामाजिक-आर्थिक विकास हेतु विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में निवेश आवश्यक है। वर्तमान में मध्यप्रदेश की कुल जनसंख्या में से 15.17 प्रतिशत अनुसूचित जाति, एवं 20.27 प्रतिशत जनजातीय है। परिषद् के मुख्य उद्देश्यों में एक उद्देश्य राज्य के गरीब एवं पिछडें कृषक, भूमिहीन कृषक, छोटे कामगार एवं अनुसूचित जाति/जनजाति, महिलाओं के आर्थिक एवं सामाजिक उत्थान के लिए विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी दूर करने के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों की पहचान तथा उनके विकास के लिए उसका उपयोग करना है। इन उददेश्यो की पूर्ति हेतु अलग अलग लक्ष्य समूहों के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी आधारित कार्यक्रमों को क्रियान्वित करने की आवश्यकता है। परिषद द्वारा लक्ष्य समूह एवं आवश्यकताओं के आधार पर कार्ययोजना तैयार की गयी है।

2. **समीक्षा /उपलब्धियां - (2017-18)**

- 2017-18 में 95 कार्यक्रमों का लक्ष्य निर्धारित किया गया था, जिसके विरूद्ध कुल 118 कार्यक्रम (टेक्नॉलाजी प्रदर्शन के 73, आर्थिक उन्नयन /समाज आधारित 45 कार्यक्रम थे । इन कार्यक्रमो मे कुल 3582 प्रतिभागी लाभांवित हुए। कुल 118 कार्यक्रमों मे से महिला सशक्तिकरण के 35 कार्यक्रम आयोजित एवं प्रायोजित किये गये।
- भोपाल विज्ञान मेला 2018 मे 15 जिलो के कारीगर , किसान, महिलाओं ने भाग लिया । परिषद द्वारा 35 स्टाल्स के माध्यम से बांस ,माटी शिल्प, गौ आधारित उत्पाद, बायोबिक्रेट, कम लागत की सेनेटरी नेपकीन, प्राकृतिक रंग, पेपरमेसी, बाघ प्रिंट, वुडवर्क, जैविक कृषि, उन्नत लाख उत्पादन, उन्नत जैव प्रौद्योगिकी आदि एवं विज्ञान लोकव्यापीकरण तथा नवाचार माडल सम्मिलित किए गए। 04 उद्यमो विशेषकर पर्यावरण हितेषी प्रौद्योगिकी - बांस शिल्प, माटी शिल्प, पेपरमेशी एवं डिण्डोरी जिले के आदिवासियों के पारंपरिक कार्य पर आधारित लोह शिल्प प्रौद्योगिकी का प्रत्यक्ष प्रदर्शन किया गया।

3. उद्देश्य

- ग्रामीणो के कौशल विकास हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी निवेश हेतु स्थानीय आवश्यकताओं एवं क्षेत्रों की पहचान करना।
- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी आधरित कार्यक्रमो में आदिवासी एवं अनुसूचित जनजाति की भागीदारी बढाना, शोध, नवीन तकनीकी एवं कम लागत की तकनीकी के अनुप्रयोग को प्रोत्साहित करना।
- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी आधरित संस्थाओं एवं फील्ड समूहों को सशक्त बनाना।
- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी नेटवर्क विकसित करना।
- कारीगर/ कमजोर वर्गों के कौशल विकास हेतु उन्नत प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं भ्रमण आयोजित करना। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी कार्यक्रम में महिलाओं की प्रतिभागिता बढ़ाना। महिलाओं के अनुकूल प्रौद्योगिकी को प्रोत्साहित करना तथा विभिन्न लक्ष्य समूह के लिये क्लस्टर विकास कार्यक्रम क्रियान्वित करना।

4. सहयोगी / सहभागी संस्थाये

शासकीय / अशासकीय / स्वंय सेवी संस्थाये।

5. लक्ष्य

90 कार्यक्रम/परियोजनाएं

6. कायर्क्रम विवरण

इस योजना को क्रियान्वयन हेतु निम्नानुसार विभाजित किया गया है।

6.1 कौशल विकास कायर्क्रम-

- टेक्नोलॉजी प्रदर्शन के माध्यम से विभिन्न लक्ष्य समूहों हेतु कार्यक्रम क्रियान्वित किये जाते है। वैज्ञानिक संस्थाओं में उपलब्ध विभिन्न प्रौद्योगिकीयों को शा./अशासकीय संस्थाओ के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रो में कौशल विकास एवं आर्थिक उन्नय हेतु स्थानान्तरित किया जाता है। वर्ष 2018-19 में निम्नानुसार कार्यक्रम शासकीय एवं अशासकीय संस्थाओं के माध्यम से आयोजित/प्रायोजित किये जायेंगे:

अ- गैर पारम्पारिक ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देना

- ग्रामीण क्षेत्रो में इकोफ्रेंडली चूल्हा , कृषि/जैव अपशिष्ट से जैव ईंधन निर्माण को प्रोत्साहित किया जायेगा। इस हेतु वैज्ञानिक संस्थाओं में उपलब्ध प्रौद्योगिकी की जानकारी संबंधित संस्थाओं को प्रदान कर फील्ड पर टेक्नॉलाजी को क्रियान्वित किया जावेगा।

ब- जैविक कृषि मे वैज्ञानिक प्रक्रियाओं को प्रोत्साहित करना :-

- नर्मदा सेवा मिशन के अंतर्गत वर्ष 2017 में चयनित 16 जिलों (अलीराजपुर, बड़वानी, धार, खरगौन, खण्डवा, देवास, हरदा, सीहोर, होशंगाबाद, रायसेन, नरसिंहपुर, जबलपुर, सिवनी, मण्डला, डिण्डोरी, अनुपपुर) में प्रौद्योगिकी प्रदर्शन का कार्य प्रारंभ किया गया है, इस वर्ष 05 जिलों में जैव अपशिष्ट प्रबंधन प्रशिक्षण कार्यक्रमों को आयोजित किया जायेगा। इस कार्य का उद्देश्य नर्मदा नदी का संरक्षण एवं संवर्धन है। नर्मदा नदी के संरक्षण हेतु **वैज्ञानिक पद्धति द्वारा जैव अपशिष्ट से केंचुआ खाद निर्माण हेतु प्रशिक्षण आयोजित किये जायेगें** ।

6.2 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के माध्य्म से महिला सशक्तिकरण

परिषद् द्वारा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी कायर्क्रम में महिलाओं की प्रतिभागिता बढाने हेतु प्रयास किये जा रहे हैं। यह महिला केन्द्रित कार्यक्रम निम्नानुसार आयोजित / प्रायोजित किये जायेंगे:

- महिला विज्ञान सम्मेलन- इस कार्यक्रम का आयोजन शासकीय महाविद्यालय/ विश्वविद्यालय के सहयोग से किया जायेगा। इस कार्यक्रम का उददेश्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के माध्यम से महिला सशक्तिकरण करना, महिलाओं को शोध के क्षेत्र में प्रोत्साहित करना, ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को आर्थिक उन्नयन हेतु मंच प्रदान करना है।
- **स्व सहायता समूह एवं अन्य महिलाओं हेतु स्वास्थ्य, सुपोषण आधारित कार्यक्रम -** इस कार्यक्रम के अंतर्गत स्थानीय स्त्रोतों से कम लागत की खाद्य सामग्री तैयार करने का प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण, से संबंधित परियोजनाओं को सहयोग प्रदान किया जायेगा। महिलाओं द्वारा कम लागत की सेनेटरी नेपकीन तैयार करने हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रमों को सहयोग प्रदान किया जाएगा।
- **महिला विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी नेटवर्क -**परिषद् के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी कार्यक्रमो को सुदूर अंचलों की महिलाओं तक पहुंचने के लिये महिलाओं का नेटवर्क तैयार किया जा रहा है। इस नेटवर्क में कार्यक्रमो का संचालन / क्रियान्वयन करने वाली महिलाये शामिल हैं। परिषद् द्वारा नेटवर्क की बैठक आयोजित कर कार्यक्रमों हेतु मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है तथा कार्यक्रमो में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के उपयोग को प्रोत्साहित किया जाता है।

6.3 शासकीय संस्थाओं के माध्यम से आयोजित कार्यक्रम -

- शासकीय महाविद्यालयों/विश्वविद्यालयों में संगोष्ठी/सेमीनार/कार्यशाला के माध्यम से विभिन्न वैज्ञानिक गतिविधयों का आयोजन निम्नलिखित विषयों पर किया जा सकता है -पर्यावरण अनुकूल प्रोद्योगिकी, उद्यमिता विकास मे विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की भूमिका, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के माध्यम से महिला सशक्तिकरण।
- ग्रामीण प्रौद्योगिकी को प्रोत्साहित करने हेतु महाविद्यालयों/विश्वविद्यालयों को प्रदर्शनी एवं टेक्नोलॉजी / प्रदर्शन हेतु सहयोग प्रदान किया जायेगा ।

6.4 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी क्लस्टर विकास कार्यक्रम

- यह सामुदायिक विकास की महत्वपूर्ण गतिविधि है। क्लस्टर विकास द्वारा ग्रामीण के पलायन को कम किया जा सकता है। इसके माध्यम से लक्ष्य समूहों द्वारा अलग अलग गतिविधिया भी क्रियान्वित की जा सकती हैं। परिषद द्वारा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी आधारित क्लस्टर विकास

कार्यक्रमों, नवीन क्लस्टर विकास एवं क्रियान्वित क्लस्टरों में समूहों के लिए तकनीकी प्रदर्शन को सहयोग प्रदान किया जायेगा। वर्ष 2018 में सुपोषण, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता, पर्यावरण अनुकूल प्रौद्योगिकी, खाद्य प्रसंस्करण क्लस्टर विकास कार्यक्रमों को सहयोग प्रदान किया जायेगा।

6.5 अन्य कार्यक्रम -

- **भोपाल विज्ञान मेला**

परिषद् द्वारा प्रतिवर्ष विज्ञान मेले में भाग लेकर ग्रामीण प्रौद्योगिकी पवेलियन में विभिन्न जिलों में कार्यरत् कारीगरों/शिल्पियों को एक मंच प्रदान कर उनके द्वारा तैयार किये गये उत्पाद एवं प्रयोग में लाई गई प्रौद्योगिकी का प्रदर्शन/ अवलोकन कर मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है। वर्ष 2019 में भी भोपाल विज्ञान मेला में भाग लिया जायेगा।

7- समय सारणी

प्रथम तिमाही	द्वितीय तिमाही	तृतीय तिमाही	चतुर्थ तिमाही
• नर्मदा सेवा यात्रा के अंन्तर्गत आने वाले प्रदेश के 15 जिलों मे केंचुआ खाद निर्माण हेतु जागरूकता प्रशिक्षण आधारित कार्यक्रमों/ परियोजना हेतु प्रस्ताव प्राप्त करना। • शासकीय संस्थाओं के माध्यम से आयोजित कार्यक्रम । • परीक्षण एवं वित्तीय सहयोग हेतु कार्यवाही कार्यक्रमों/परियोजनाओं का मूल्यांकन करना। • कार्यक्रमो का मूल्यांकन एवं मानिटरिंग। • 20 कार्यक्रम	• महिला स्वास्थ्य सुपोषण आधारित कार्यक्रमों/परियोजना प्रस्ताव प्राप्त करना। • शासकीय संस्थाओं के माध्यम से आयोजित कार्यक्रम • कार्यक्रमो का मूल्यांकन एवं मानिटरिंग। • विभिन्न कार्यक्रमो को वित्तीय सहयोग देने हेतु प्रस्ताव प्राप्त कर बैठकों का आयोजन। • 20 कार्यक्रम	• महिला विज्ञान सम्मेलन • गैर पारम्पारिक ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देना एवं संयुक्त तत्वाधान मे आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों को वित्तीय सहयोग देने हेतु प्रस्ताव प्राप्त कर बैठकों का आयोजन। • कार्यक्रमो का मूल्यांकन एवं मानिटरिंग। • 25 कार्यक्रम	• भोपाल विज्ञान मेला • महिला विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी नेटवर्क बैठक का आयोजन। • कार्यक्रमो का मूल्यांकन एवं मानिटरिंग। • विभिन्न कार्यक्रमो को वित्तीय सहयोग देने हेतु प्रस्ताव प्राप्त कर बैठक का आयोजन। • 25 कार्यक्रम।

8. अपेक्षित परिणाम

इस योजना के अंतर्गत टेक्नोलॉजी प्रदर्शन एवं जागरुकता कार्यक्रम, प्रशिक्षण कार्यक्रम, आर्थिक उन्नयन एवं समाज आधारित कार्यक्रमो तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी क्लस्टर विकास के कार्यक्रमो, ग्रामीण प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी आदि आयोजित किये जायेंगे। इन कार्यक्रमो के द्वारा अनुमानित 3500 प्रतिभागी लाभान्वित हो सकेंगे।

अनुसूचित एवं आदिवासी क्षेत्रो की महिलाओं/बालिकाओं की विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी कार्यक्रमो में भागीदारी सुनिश्चित होगी। क्लस्टरों में नवीन तकनीकी की जानकारी प्राप्त होगी एवं जिलों में नये क्लस्टर विकास कार्यक्रम प्रारंभ होंगे।

A-5 विज्ञान लोकव्यापीकरण

1. पृष्ठभूमि

आज के युग में मानव जीवन वैज्ञानिक उपलब्धियों और उनके दैनिक जीवन में उपयोग पर आधारित है। अतः लोगों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं तरीके अपनाने की प्रवृत्ति और उनसे संबंधित मामलों पर निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में भागीदारी हेतु उन्हें सक्षम बनाना अनिवार्य हो गया है। म.प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद्, आम जनता एवं विशेष रूप से विद्यार्थियों में विज्ञान के प्रति जागरूकता विकसित करने, वैज्ञानिक सोच को जागृत करने एवं दैनिक जीवन में विज्ञान के व्यवहारिक उपयोग की जानकारी प्रदान करने के लिए प्रयासरत है। इस हेतु परिषद् पूरे वर्ष विज्ञान लोकव्यापीकरण के विभिन्न कार्यक्रम एवं गतिविधियां आयोजित करती है। प्रदेश में विज्ञान से संबंधित नवीन गतिविधियों एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों हेतु राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद् (एन.सी.एस.टी.सी.), विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार द्वारा समय-समय पर कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाता है।

2. समीक्षा/उपलब्धियॉ (2017-2018)

विवरण आगामी पृष्ठों में गतिविधियों के साथ प्रस्तुत है।

3. उद्देश्य

- विद्यार्थियों एवं जनसामान्य में विज्ञान लोकव्यापीकरण।
- विद्यार्थियों में जिज्ञासा एवं सृजनात्मकता का विकास।
- विद्यार्थियों में खोजी प्रवृत्ति का विकास।
- विद्यार्थियों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना का विकास।
- जन सामान्य में वैज्ञानिक अभिरूचि का प्रोन्नयन करना एवं जीवन में विज्ञान के व्यवहारिक उपयोग की जानकारी प्रदान करना।

4. सहयोगी/सहभागी संस्थायें

- राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान, जबलपुर।
- आंचलिक विज्ञान केन्द्र, भोपाल।
- शैक्षणिक संस्थाएं ।
- स्वयंसेवी संस्थाएं।
- राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद्, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली।
- विज्ञान प्रसार, नई दिल्ली।

5. कार्यक्रम विवरण

कार्यक्रम विवरण आगामी पृष्ठों में प्रस्तुत है।

6. समय सारिणी

विभिन्न कार्यक्रमों के अनुसार समय सारिणी आगामी पृष्ठों में दी गई है।

5.1 वार्षिक समारोह

परिषद् द्वारा वर्ष 2018-2019 में निम्न वार्षिक समारोह का आयोजन किया जायेगा।

A मध्यप्रदेश विज्ञान प्रतिभा सम्मान समारोह

1. पृष्ठभूमि

5 सितम्बर, शिक्षक दिवस को वर्ष 2009-10 से मध्यप्रदेश विज्ञान प्रतिभा सम्मान समारोह का आरंभ किया गया है। इस समारोह में परिषद् एवं राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान जबलपुर द्वारा संयुक्त रुप से आयोजित गतिविधियों जैसे-विज्ञान ओलम्पियाड प्रतियोगिता (कनिष्ठ), विज्ञान ओलम्पियाड प्रतियोगिता (वरिष्ठ), अन्तर्राष्ट्रीय गणित ओलम्पियाड प्रतियोगिता, पश्चिम भारत विज्ञान मेला, राष्ट्रीय विज्ञान सेमिनार एवं नवाचारी विज्ञान शिक्षक प्रतियोगिता के दो चरणों में चयनित विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को पुरस्कृत एवं सम्मानित किया जाता है।

2. समीक्षा/उपलब्धियॉ (2017-2018)

मध्यप्रदेश प्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् द्वारा आम जनता एवं विशेष रूप से विद्यार्थियों में विज्ञान के प्रति जागरूकता विकसित करने, वैज्ञानिक सोच जागृत करने एवं दैनिक जीवन में विज्ञान हेतु व्यवहारिक उपयोग को बढावा देने के लिये प्रयासरत है। इस हेतु परिषद प्रदेश में विज्ञान लोकव्यापीकरण के विभिन्न कार्यक्रम एवं गतिवविधियां आयोजित करती है। इसके अंतर्गत परिषद द्वारा इस वर्ष मध्यप्रदेश विज्ञान प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन 8 जनवरी 2018 को आयोजित किया गया। समारोह के अंतर्गत परिषद एवं राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान जबलपुर द्वारा संयुक्त रूप से राज्य स्तरीय कनिष्ठ एवं वरिष्ठ विज्ञान ओलम्पियाड, अंतर्राष्टीय गणित ओलम्पियाड, नवाचारी विज्ञान शिक्षक पुरस्कार, राष्टीय विज्ञान सेमीनार, पश्चिम भारत विज्ञान मेला से संबंधित प्रतियोगिताओं में चयनित शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को सम्मानित एवं पुरस्कृत किया जाता है। परिषद द्वारा वर्ष 2016-17 में तीन शिक्षकों को नवाचारी विज्ञान शिक्षक के रूप में प्रत्येक को रू; 25000/- नगर पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया है। समारोह में उक्त प्रतियोगिताओं में चयनित करीब 148 विद्यार्थियों को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान किये गये। चयनित शिक्षकों एवं विद्यार्थियों द्वारा शिक्षण सामग्री एवं प्रदर्शो की प्रदर्शनी भी लगाई गई। डॉ अंजु बाजपेयी, आरआरएससी, इसरो, नागपुर द्वारा बच्चों को आंतरिक्ष विज्ञान विषय पर व्याख्यान एवं चर्चा पर प्रभावपूर्ण प्रकाश डाला गया। इस समारोह में राष्टीय बाल विज्ञान कांग्रेस 2017 हेतु देश चयनित 30 बाल वैज्ञानिक तथा विश्व अंतरिक्ष विज्ञान सप्ताह प्रतियोगिता मे प्रदेश के भाग लेने वाले 50 बच्चों को पुरस्कार प्रमाण पत्र दे कर सम्मानित किया गया।

3. उद्देश्य

- मध्यप्रदेश की विज्ञान प्रतिभाओं की पहचान करना ।
- चयनित प्रतिभाओं को भविष्य के लिए प्रेरित करने हेतु पुरस्कृत करना ।

4. सहयोगी/सहभागी संस्थायें

- मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् द्वारा स्वयं आयोजित किया जावेगा।

5. कार्यक्रम विवरण

- 5 सितम्बर शिक्षक दिवस को कार्यक्रम का आयोजन एवं चयनित प्रतिभाओं को पुरस्कृत करना ।
- विज्ञान विषय विशेषज्ञ का विशेष प्रदर्शन ।
  चयनित शिक्षकों एवं विद्यार्थियों द्वारा शिक्षण सहायक सामग्री एवं प्रादर्शो की प्रदशर्नी

6. समय सारिणी

- प्रतियोगिताओं का आयोजन आगामी पृष्ठों मे दी गई समय सारिणी के अनुरुप।
- जुलाई माह से कार्यक्रम की तैयारी।
- 5 सितम्बर 2018 (शिक्षक दिवस) को कार्यक्रम का आयोजन।

7. अपेक्षित परिणाम

- प्रतिवर्ष 148 विद्यार्थी एवं 6 शिक्षक पुरस्कृत एवं सम्मानित होगें। उनसे प्रेरित होकर प्रदेश के दूसरे विद्यार्थी एवं शिक्षक भी इन प्रतियोगिताओं मे भाग ले सकेंगे।

B विज्ञान प्रसार/प्रोत्साहन हेतु पुरस्कार - राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर के पुरस्कार

1. पृष्ठभूमि

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में उत्कृष्ट कार्य को मान्यता प्रदान करने हेतु मध्य प्रदेश शासन द्वारा राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय पुरस्कारों की स्थापना वर्ष 1982 में की गई थी । राष्ट्रीय पुरस्कार भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के नाम पर स्थापित किये गये तथा राज्य स्तरीय पुरस्कार विज्ञान में डॉ. कैलाश काटजू, अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी में डॉ. लज्जा शंकर झा तथा समाज विज्ञान में डॉ. हरि सिंह गौर के नाम पर स्थापित किये गये हैं ।

राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कार की राशि रु. 1.00 लाख एवं राज्य स्तर के पुरस्कार की राशि रु. 0.50 लाख है। साथ ही पुरस्कार विजेताओं को प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया जाता है।

2. समीक्षा/उपलब्धियॉ (2017-18)

वर्ष 2017 के पुरस्कारों हेतु नामांकन विज्ञापित कर प्राप्त किये गये । प्राप्त नामांकनों की आंतरिक जांच की गई । चयन हेतु प्रक्रिया जारी है ।

3 उद्देश्य

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में उत्कृष्ट कार्य को मान्यता प्रदान करने हेतु मध्य प्रदेश शासन द्वारा प्रतिवर्ष तीन राष्ट्रीय एवं तीन राज्य स्तर के पुरस्कार प्रदान किये जाते हैं ।

4. सहयोगी/सहभागी संस्थायें

.....

5. कार्यक्रम विवरण

म. प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् आयोजक की भूमिका निभाती है ।

- चयन समिति के मतानुसार जिस व्यक्ति ने मानव ज्ञान और विकास के क्षेत्र विशेष में मौलिक/व्यावहारिक रुप से महत्वपूर्ण तथा उल्लेखनीय योगदान दिया हो, उसे पुरस्कार प्रदान किया जाता है ।
- पुरस्कार के वर्ष से पूर्ववर्त्ती पांच वर्षों की अवधि में मूलतः भारत में किये गये योगदान के आधार पर पुरस्कार दिया जाता है । राज्य स्तरीय पुरस्कार के लिये व्यक्ति विशेष का उल्लेखनीय कार्य मध्यप्रदेश से ही संबंधित होना चाहिये ।
- पुरस्कृत व्यक्तियों का चयन परिषद् द्वारा गठित सलाहकार समितियों की अनुशंसाओं के आधार पर किया जाता है ।
- एक पुरस्कार अधिक से अधिक तीन व्यक्तियों को सम्मिलित रुप से दिया जा सकता है।
- चयनित व्यक्तियों को परिषद् द्वारा समारोह आयोजित कर यह पुरस्कार प्रदान किये जाते हैं।
- उम्मीदवार के नाम, चयन समिति के सदस्य, अखिल भारतीय स्तर की स्वीकृत वैज्ञानिक संस्थाओं और अकादमियों के अध्यक्षों, विश्वविद्यालयों के कुलपतियों, विज्ञान, कृषिक, अभियांत्रिकी, प्रौद्योगिकी संस्थाओं के निदेशकों, विश्वविद्यालय स्तर के संस्थानों के प्रमुखों एवं संकायाध्यक्षों, वड़े अनुसंधानों एवं विकास संगठनों तथा रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद्, भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के महानिदेशकों, परमाणु ऊर्जा आयोग, अंतरिक्ष आयोग, तेल और प्राकृतिक गैस आयोग, मंत्रि परिषद् की विज्ञान सलाहकार समिति आदि के अध्यक्षों, सचिवों,

योजना आयोग के विज्ञान सदस्य और भटनागर पुरस्कार के पूर्व विजेताओं द्वारा प्रस्तावित किये जा सकते हैं। केवल अपनी संस्थाओं में कार्यरत व्यक्तियों का अनुमोदन विश्वविद्यालय संकायों को अपने संबंधित कुलपतियों के माध्यम से और भारतीय प्रौद्योगिकी संकायों को अपने निदेशकों के माध्यम से भेजना चाहिये । अनुसंधान एवं विकास संगठनों के महानिदेशक और आयोगों के अध्यक्ष अपने अपने संगठनों में कार्यरत वैज्ञानिकों के नाम प्रायोजित कर सकते हैं ।

- सी.एस.आई.आर. प्रयोगशालाओं के निदेशक अपनी अभिरुचि के कार्य क्षेत्र में किसी उम्मीदवार को नामित कर सकते हैं चाहे, वे सी.एस.आई.आर. प्रयोगशालाओं में काम कर रहें हो या अन्य दूसरी जगह ।
- अन्य पृथक मनोनयन जिन्हे किसी ने अपने नाम से या किसी अन्य के नाम से भेजा है, स्वीकार नही किया जायेगा ।
- एक बार मनोनीत उम्मीदवार, अन्य से योग्य होने पर ५ वर्षो की कुल अवधि हेतु विचार किया जायेगा । इस प्रकार एक बार मनोनयन प्राप्त हो जाने पर परिषद् के लिये आवश्यक हुआ, जो उम्मीदवार से पूर्व सूचना हेतु सीधा पत्र व्यवहार किया जा सकता है। यदि मनोनीत उम्मीदवार भारतीय है, चाहे वह भारत में कार्यरत हो या विदेश में, इन पुरस्कारों का हकदार होगा ।
- प्रतिवर्ष के पुरस्कार हेतु चयन समितियॉ, परिषद् के महानिदेशक एवं सभापति की स्वीकृति से गठित की जायेगी। प्रत्येक समिति में कम से कम ६ विशेषज्ञ होंगे। समिति की सदस्य किसी भी पुरस्कार के लिये मनोनीत नही किये जायेंगे, जिस साल वह बोर्ड के सदस्य हैं। वर्ग विशेष के लिये मनोनयनों की प्राप्ति के बाद परिषद् द्वारा प्रत्येक मनोनीत व्यक्ति के कार्य और उपलब्धियों के विस्तृत विवरण सहित, सभी मनोनीतों की सूची संबद्ध क्षेत्र की परामर्शदात्री समितियों के सदस्यों को वितरित किया जायेगा । परिषद् के महानिदेशक की सलाह से विभिन्न परामर्शदात्री समितियों की बैठक पुरस्कार विजेताओं के चुनाव हेतु आयोजित की जाएगी।
- यदि पुरस्कार हेतु किसी का नाम परामर्शदात्री समिति के दो तिहाई सदस्यों द्वारा या निर्विरोध चयनित किया जाता है तो वह परिषद् के महानिदेशक के द्वारा सभापति के समक्ष अनुमोदनो को प्रस्तुत करेगी और सभापति का यह सर्वोपरि निर्णय होगा ।
- परिषद् के महानिदेशक द्वारा परामर्शदात्री के अनुमोदनों की स्वीकृति के बाद, पुरस्कार विजेताओं के नामों की सार्वजनिक घोषणा की जायेगी ।

  परिषद् द्वारा आयोजित समारोह में पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे। समारोह में पुरस्कार विजेता को प्रशस्ति पत्र भी दिया जायेगा ।

6. समय सारिणी

क्र.	योजना/कार्यक्रम का नाम	प्रक्रियाऐं/समय सीमाऐं
	राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय पुरस्कार ।	**सम्पूर्ण वर्ष** 1 माह का समय देते हुए आवेदन प्राप्त करने हेतु विज्ञापन का प्रकाशन प्राप्त आवेदनों/प्रस्तावों की छानबीन एवं अंतिम सूची का निर्माण सलाहकार/ विषय विशेषज्ञों की समितियों के गठन हेतु कार्य । सलाहकार/विषय विशेषज्ञों की समितियों का गठन एवं अनुमोदन सलाहकार/विषय विशेषज्ञों की समितियों की बैठकों का आयोजन चयनित व्यक्तियों की सभापति से अनुशंसा ।
	पुरस्कार वितरण समारोह आयोजन	
	सलाहकार समितियों की बैठक एवं नामाकंन हेतु विज्ञापन	

7. अपेक्षित परिणाम

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में उत्कृष्ट कार्यों को मान्यता एवं प्रोत्साहन के लिए, प्रतिवर्ष तीन राष्ट्रीय एवं तीन राज्य स्तर के पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे।

5.2 वार्षिक कार्यक्रम (Annual Programmes)

परिषद् द्वारा वर्ष 2018-19 में निम्न वार्षिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जायेगा ।

5.2.1 राष्ट्रीय वर्ष/महत्वपूर्ण दिवस

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस - 2018

1. पृष्ठभूमि

देश में उच्चतर गणित विद्गोषज्ञों की कमी को दूर करने और समाज के हर तबके में इस विषय को लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से महान गणितज्ञ श्री निवास रामानुजन की 125 वीं जयंती पर 22 दिसम्बर को राष्ट्रीय गणित दिवस एवं वर्ष 2012 को राष्ट्रीय गणित वर्ष घोषित किया गया था । अभी तक धारणा रही है कि गणित के क्षेत्र में कैरियर के अच्छे अवसर नहीं हैं, लेकिन आज इस धारणा में बदलाव की जरुरत है । स्कूल से लेकर उच्चतम स्तर के अनुसंधान स्तर तक गणित को प्रोत्साहित किये जाने की जरूरत है । अतः परिषद् द्वारा प्रत्येक वर्ष 22 दिसम्बर को राष्ट्रीय गणित दिवस के रुप मे एवं वर्ष 2018-19 में भी गणित शिक्षण प्रोत्साहन गतिविधियों के आयोजन की योजना है।

2. समीक्षा/उपलब्धियॉ 2017-18

प्रदेश की 33 शैक्षणिक/ स्वयंसेवी संस्थाओं को राष्टीय विज्ञान दिवस 2018 “Science & Technology for Substainable future" के आयोजन हेतु स्वीक़ति प्रदान की गई।

प्रदेश की 35 शैक्षणिक संस्थाओं के माध्यम से राष्टीय विज्ञान दिवस 2017 (मुख्य विषय) “Science & Technology Specially abled to persons" का आयोजन किया गया।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 2017 “Science & Technology Specially abled to persons" 35 शासकीय विद्यालयों, महाविद्यालयों द्वारा मॉडल एक्सिबीशन, टैलीस्कोप निर्माण, प्रश्नमंच, व्याख्यान, क्विज, आदि गतिविधियों का 7 दिवसीय आयोजन किया गया।

3. उद्देश्य

वर्ष 2016 के राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के निर्धारित विषय पर अधिक-से-अधिक संस्थाओं में विज्ञान स्पान के रुप में आयोजन करना, जिससे विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हुए नवीन अनुसंधानों की जानकारी विद्यार्थियों एवं जनसामान्य तक पहुॅचाई जा सके।

4. सहयोगी/सहभागी संस्थायें

- प्रदेश के सभी जिलों के सरकारी, गैर-सरकारी, उत्कृष्ट एवं नवोदय विद्यालय।
- विज्ञान प्रचार-प्रसार से जुड़ी अशासकीय संस्थाएं।
- प्रदेश के अग्रणी/कन्या महाविद्यालय, विश्वविद्यालय एवं तकनीकी संस्थान।

5. कार्यक्रम विवरण

---

6. समय सारिणी

---

7. अपेक्षित परिणाम

5.3 चलित विज्ञान प्रदर्शनी/ प्रयोगशाला

उद्देश्य :

मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद द्वारा विगत 37 वर्षो से विज्ञान लोकव्यापीकरण योजना चलाई जा रही हैं, जिसमें विद्यालय/महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं एवं आमजन के वैज्ञानिक स्तर को बढ़ाना एवं वैज्ञानिक सोच उत्पन्न करना है। साथ ही समाज में फैले अंधविश्वास के पीछे का विज्ञान एवं नित नये हो रहे वैज्ञानकि बदलाव के साथ-साथ भारत के पारंपरिक ज्ञान में छिपा विज्ञान का सत्यापन इत्यादि भी इस योजना के मुख्य उद्देश्य हैं। प्रदेश के विद्यालय/महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं को मूलभूत वैज्ञानिक सुविधाओं के अभाव के कारण बहुत से छात्र-छात्राओं को प्रायोगिक ज्ञान पर्याप्त मात्रा में नही पाता, जिससे वह थ्योरी तो पढ़ लेते है, परंतु प्रायोगिक ज्ञान न होने के कारण उन्हें भविष्य में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

इसी अवधारणा के साथ आधुनिक उपकरण से सुसज्जित वाहन (चलित विज्ञान प्रदर्शनी/प्रयोगशाला) की यदि दूरस्थ अंचलों में जा जाकर आधुनिक विज्ञान एवं प्रयोगिक विज्ञान के माध्यम से दूरस्थ अंचल के छात्र-छात्राओं को आधुनिक विज्ञान से अवगत कराया जा सकता है। इस हेतु शुरूआत के तौर पर ऐसे दो वाहनों की आवश्यकता है, जिससे प्रदेश के दूरस्थ अंचल में रहने वाले विद्यालयीन तथा महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं शिक्षक-शिक्षिकांए, आमजन को आधुनिक विज्ञान से जोड़ने हॉयर सेकेण्डरी स्तर के वैज्ञानिक प्रयोग, अंधविश्वास के पीछे का विज्ञान, भारत के महान वैज्ञानिकों की जीवनी महत्वपूर्ण वैज्ञानिक पहलुओं परिषद् की गतिविधियों एवं योजनाओं, शिल्पियों हेतु आविष्कार किये गये आधुनिक टूल, अन्य विभागों की वैज्ञानिक गतिविधियों एवं उच्च क्वालिटी की दूरबीन द्वारा आकाश दर्शन से अवगत करा सकें, जिससे दूरस्थ अंचल के नागरिक के वैज्ञानिक स्तर को बढ़ाया जा सके। इस योजना के सफल क्रियांवयन के बाद वाहनों की संख्या बढ़ाई जावेगी।

गतिविधियां:

- हायरसेकेंडरी स्तर के फिजिक्स केमेस्ट्री बायोलॉजी के प्रयोग
- विज्ञान के प्रयोगों द्वारा अंधविश्वास को मिटाना
- दूरबीन द्वारा आकाश नक्षत्र ग्रहों के दर्शन
- प्रोजेक्टर से भारत के महान वैज्ञानिकों की जीवनी का प्रदर्शन
- शिल्पियों हेतु विभिन्न शोध संस्थानों द्वारा तैयार किये गये आधुनिक औजारों का प्रदर्शन
- परिषद् द्वारा अन्य विभागों की वैज्ञानिक गतिविधियों का प्रदर्शन

लक्ष्य समूह:

- प्रदेश के दूरदराज में रहने वाले विद्यालयीन तथा महाविद्यालयीन छात्र-छात्रायें शिक्षक-शिक्षिकायें, आमजन, किसान कारीगर, महिलायें इत्यादि

अपेक्षित परिणाम:

- परियोजना द्वारा प्रत्येक माह 4-5 ब्लाक मे जाकर विभिन्न जगहों पर प्रदर्शनी/प्रयोग दिखाकर प्रतिवर्ष लगभग 1.00 लाख छात्र-छात्रायें आमजन लाभान्वित होगें।

5.4 रीजनल साइंस सेंटर व अन्य शासकीय संस्थाओं के साथ संयुक्त कार्यक्रम

1. पृष्ठभूमि

मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् के सहयोग से विभिन्न शासकीय संस्थाओं जैसे आंचलिक विज्ञान केन्द्र व अन्य द्वारा विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिए वर्ष भर वैज्ञानिक गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। इन गतिविधियों में मॉडल प्रतियोगिता, क्विज, पोस्टर, पेंटिग, वाद-विवाद प्रतियोगिता, शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम, वन्य प्राणी सप्ताह एवं अन्य जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन सम्मिलित हैं।

2. समीक्षा/उपलब्धियॉ (2017-2018)

- परिषद् एवं आंचलिक विज्ञान केन्द्र भोपाल द्वारा शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिसमें रायसेन एवं भोपाल जिलो के 41 शिक्षकों ने प्रशिक्षण लिया। शिक्षकों द्वारा 140 लो कॉस्ट टीचिंग साइंस किट का निर्माण किया गया।
- परिषद् एवं रीजनल साइंस सेन्टर, भोपाल द्वारा 19वीं लेकसिटी साइंस मॉडल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसके 17 विदयालयों ने भाग लिया एवं 43 वर्किंग साइंस मॉडल प्रदर्शन किया गया । इस प्रतियोगिता में 96 प्रतिभागियों ने भाग लिया। चयनित प्रथम द्वितीय तृतीय विज्ञान मॉडलों को पुरस्कृत किया गया।
- परिषद् एवं रीजनल साइंस सेन्टर, भोपाल द्वारा लेकसिटी साइंस ड्रामा फेस्टिवल प्रतियोगित कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें 6 विद्यालयों में एवं 110 प्रतिभागियों ने भा लिया। चयनित प्रथम द्वितीय तृतीय विज्ञान मॉडलों को पुरस्कृत किया गया।

3. उद्देश्य

विज्ञान लोकव्यापीकरण के उद्देश्यों की पूर्ति करते हुए भोपाल एवं आसपास के क्षेत्रों के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन।

4. सहयोगी/सहभागी संस्थायें

- आंचलिक विज्ञान केन्द्र, भोपाल।
- अन्य शासकीय संस्थायें

5. कार्यक्रम विवरण

यह कार्यक्रम आंचलिक विज्ञान केन्द्र द्वारा आयोजित किये जायेंगे।

कम से कम 10 कार्यक्रम आयोजित करना।

6. समय सारिणी

प्रथम तिमाही	द्वितीय तिमाही	तृतीय तिमाही	चतुर्थ तिमाही
-पूर्व वर्ष की स्वीकृत परियोजनाओं का मूल्यांकन कार्य, योजना प्रस्ताव हेतु प्रपत्र तैयार करना, प्रस्ताव प्राप्त करना।	-प्राप्त प्रस्तावों पर विशेषज्ञों के साथ बैठक का आयोजन एवं प्रस्तावों को वित्तीय सहयोग प्रदान करना, स्पाट विजिट उपरान्त मार्गदर्शन करना, मूल्यांकन कार्य।	-संस्था द्वारा किए गए कार्यों की कार्यशाला/ बैठक के माध्यम से मूल्यांकन करना।	-रिपोर्ट, उपयोगिता प्रमाण पत्र प्राप्त करना, कार्यक्रम से दूरगामी प्रभाव हेतु संबंधित संस्था के साथ कार्ययोजना तैयार करना।

7. अपेक्षित परिणाम

भोपाल एवं आसपास के क्षेत्रों के करीब 10 हजार विद्यार्थी एवं शिक्षक लाभांवित हो सकेंगे।

5.5 राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान (एस.आई.एस.ई.) जबलपुर, शिक्षा विभाग एवं अन्य संस्थाओं के साथ प्रतियोगी कार्यक्रम

राज्य स्तरीय वरिष्ठ एवं कनिष्ठ विज्ञान ओलम्पियाड प्रतियोगिता

1. पृष्ठभूमि

मध्य प्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् द्वारा यह प्रतियोगिता राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान जबलपुर के माध्यम से वर्ष 1983-84 से प्रति वर्ष, माध्यमिक शालाओं के विद्यार्थियों हेतु कनिष्ठ विज्ञान पहेली प्रतियोगिता एवं हाईस्कूल के विद्यार्थियों हेतु वरिष्ठ विज्ञान पहेली प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता रहा है, जिसमें प्रतिवर्ष बड़ी संखया में विद्यार्थी भाग लेते हैं। इस प्रतियोगिता का लाभ प्रदेश के अधिक से अधिक विद्यार्थियों तक पहुँचें इस उद्देश्य से गतिविधि का और अधिक विस्तार करने एवं इसे सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता महसूस की गई। इस उद्देश्य से वर्ष 2009-10 से 5 सितम्बर को इन प्रतियोगिता में चयनित विद्यार्थियों को पुरस्कृत करने हेतु म.प्र. विज्ञान प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन आरंभ किया गया । वर्ष 2011-12 से इस प्रतियोगिता का नाम राज्यस्तरीय वरिष्ठ एवं कनिष्ठ विज्ञान ओलम्पियाड प्रतियोगिता कर दिया गया है।

2. समीक्षा/उपलब्धियॉ (2017-2018)

- **कनिष्ठ विज्ञान पहेली प्रतियोगिता**
  वर्ष 2016-17 की प्रथम चरण की परीक्षा दिसम्बर 2016 में एवं द्वितीय चरण की परीक्षा फरवरी 2017 में आयोजित की गई जिसमें 50 विद्यार्थियो का चयन किया गया।

- **वरिष्ठ विज्ञान पहेली प्रतियोगिता**
  वर्ष **(2016-2017)** की प्रथम चरण की परीक्षा दिसम्बर 2016 में एवं द्वितीय चरण की परीक्षा फरवरी 2017 में आयोजित की गई जिसमें 50 विद्यार्थियो का चयन किया गया।
- **अन्तर्राष्ट्रीय गणित ओलम्पियाड**
  वर्ष 2016-17 की प्रथम चरण की परीक्षा दिसम्बर 2016 में एवं द्वितीय चरण की परीक्षा फरवरी 2017 में आयोजित की गई प्रथम चरण की परीक्षा में 35 विद्यार्थियो का चयन किया गया।
- **राज्य स्तरीय पश्चिम भारत विकास मेला**
  इस प्रतियोगिता में वर्ष 2016-17 में व्यक्तिगत प्रोजेक्ट हेतु 3 विद्यार्थीयों, टीम प्रोजेक्ट में 6 विद्यार्थियों तथा सहायक शिक्षक सामग्री हेतु 3 सहायक शिक्षकों को चयनित किया जाता है।
- **राष्टीय विज्ञान सेमीनार**
  राज्य स्तर की इस प्रतियोगिता में एक सर्वश्रेष्ठ छात्र-छात्रा का चयन कर प्रमाण पत्र एवं पुरस्क़त किया जाता है।
- **नवाचारी विज्ञान शिक्षक पुरस्कार**
  विज्ञान शिक्षण के क्षेत्र में नवाचार कर रहे शिक्षकों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् एवं राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान, जबलपुर के संयुक्त तत्वाधान में नवाचारी विज्ञान शिक्षण पुरस्कार प्रतियोगिता 2016-17 का आयोजन जबलपुर में किया गया।
    - प्रथम चरण के मूल्याकंन पश्चात् निर्धारित मापदंड के आधार पर 16 उम्मीदवार को प्रतियोगिता के द्वितीय चरण हेतु आमंत्रित किया गया।

- द्वितीय चरण की प्रतियोगिता (विज्ञान शिक्षण एवं साक्षात्कार) के माध्यम से प्रदेश के निम्न तीन शिक्षकों का चयन किया गया। जिन्हें 8 जनवरी 2018 को रूपये 25,000/- नगद पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
  1 डॉ ललित मेहता, अध्यापक, शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय रतलाम
  2 मो शाहिद अंसारी, अध्यापक, शासकीय हाई खिरसाडोह छिंदवाडा
  3- श्रीमती भारती दिवेदी, उच्च श्रेणी शिक्षक, शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, शिवाजी नगर, भोपाल
- राज्य स्तरीय कनिष्ठ एवं वरिष्ठ विज्ञान ओलम्पियाड, अंतर्राष्टीय गणित ओलम्पियाड, नवाचारी विज्ञान शिक्षक पुरस्कार, राष्टीय विज्ञान सेमीनार, पश्चिम भारत विज्ञान मेला से संबंधित प्रतियोगिताओं में चयनित 6 शिक्षकों एवं 148 विद्यार्थियों को सम्मानित एवं पुरस्कृत किया गया।

3. उद्देश्य

- शालाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों में विज्ञान को लोकप्रिय बनाना।
- विद्यार्थियों में विज्ञान के प्रति रूचि जागृत करना।
- वैज्ञानिक मानसिकता एवं स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना का विकास ।
- विद्यार्थियों का विज्ञान विषयों में ज्ञान-वर्धन।

4. सहयोगी/सहभागी संस्थायें

- राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान जबलपुर।
- जिला स्तर पर शासकीय, अशासकीय, उत्कृष्ट विद्यालय।
- आदिवासी क्षेत्रों के विद्यालय।

5. कार्यक्रम विवरण

कनिष्ठ विज्ञान ओलम्पियाड प्रतियोगिता में कक्षा 7 एवं 8 में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं को सम्मिलित होने की पात्रता है। वरिष्ठ विज्ञान ओलम्पियाड प्रतियोगिता में कक्षा 9 एवं 10 में अध्यनरत छात्र/छात्राओं को सम्मिलित होने की पात्रता है।

राज्य स्तरीय कनिष्ठ/वरिष्ठ विज्ञान ओलम्पियाड प्रतियोगिता में प्रथम चरण की परीक्षा के आधार पर प्रथम पांच सौ विद्यार्थी चयनित किये जाते है एवं द्वितीय चरण में इन पांच सौ विद्यार्थियों में से अधिकतम प्रथम पचास विद्यार्थियों का चयन (न्यूनतम 40 प्रतिशत प्राप्तांक प्राप्त होने पर) पुरस्कार हेतु किया जाता है।

6. समय सारिणी

क्रमांक	कार्य	प्रस्तावित माह
1	प्रदेश के सभी हाईस्कूल, उच्चतर माध्यमिक स्कूल एवं मिडिल शालाओं एवं परीक्षा केन्द्रों को आवद्गयक निर्देद्गा भेजना।	अगस्त-सितम्बर,
2	विद्यार्थियों द्वारा नाम पंजीयन कराना	अक्टूबर,
3	प्रथम चरण की परीक्षा	दिसम्बर-जनवरी
4	प्रथम चरण के परीक्षा के परिणामों की घोषणा	20 जनवरी,
5	द्वितीय चरण की परीक्षा का आयोजन	फरवरी -ध्मार्च,
6	द्वितीय चरण के परिणामों की घोषणा।	मार्च,
7	पुरस्कारों की घोषणा	5 सितम्बर,

7. अपेक्षित परिणाम

प्रदेश के शासकीय, अशासकीय, उत्कृष्ट एवं आदिवासी क्षेत्रों के विद्यालय के तीस हजार विद्यार्थियों में वैज्ञानिक अभिरूचि एवं प्रतिस्पर्धा की भावना विकसित कर सकेंगे। विद्यार्थियों में विज्ञान की समझ विकसित होगी।

अंतर्राष्ट्रीय गणित ओलम्पियाड

1. पृष्ठभूमि

वर्ष 1986 से गणित ओलम्पियाड प्रतियोगिता परमाणु उर्जा आयोग मुम्बई एवं नेशनल बोर्ड आफ हायर मेथमेटिक्स के सौजन्य से परिषद् द्वारा राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान जबलपुर के माध्यम से संचालित की जाती है। इस प्रतियोगिता में म.प्र. के सभी शासकीय/अशासकीय/हायर सेकेन्डरी स्कूलों में अध्ययनरत कक्षा 11 एवं 12 के गणित विषय के नियमित विद्यार्थी भाग लेते हैं तथा कक्षा 8, 9, 10 के उत्कृष्ट विद्यार्थी भी इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। अभी तक प्रतिवर्ष इस प्रतियोगिता में 9,000 विद्यार्थी सम्मिलित होते थे, इस प्रतियोगिता का लाभ अधिक से अधिक विद्यार्थियों तक पहुंचे इस उद्देश्य से गतिविधि का और अधिक विस्तार करने एवं सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता महसूस की गई। इस उद्देश्य से वर्ष 2009-10 से 5 सितम्बर को इन प्रतियोगिताओं में चयनित विद्यार्थियों को पुरस्कृत करने हेतु म.प्र. विज्ञान प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन आरंभ किया गया है।

2. समीक्षा/उपलब्धियॉ 2017-18

वर्ष 2017-18 की प्रथम चरण की परीक्षा दिसम्बर 2016 में एवं द्वितीय चरण की परीक्षा फरवरी, 2017 में आयोजित की गई ।

3. उद्देश्य

- गणित विषय में कुद्गाग्र छात्र/छात्राओं का चयन कर देश को अच्छे गणितज्ञ उपलब्ध कराना।
- अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर छात्र/छात्राओं को गणित विषय में उनके ज्ञान एवं समझ का स्तर बढ़ा कर उन्हें उच्चतम स्तर तक पहुचाना।
- म.प्र. में कक्षा आठवीं से बारहवीं तक अध्ययनरत विद्यार्थियों में गणित विषय में प्रतिस्पर्धात्मक दृष्टिकोण का विकास करना।
- छात्र/छात्राओं में तर्क विश्लेषण शक्ति का विकास करना।
  म.प्र में गणित शिक्षा की स्थिति का आकलन करना।

4. सहयोगी/सहभागी संस्थायें

- राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान।
- परमाणु उर्जा आयोग, मुम्बई।
- नेशनल बोर्ड ऑफ हायर मेथेमेटिक्स।

प्रदेश के शासकीय, अशासकीय, उत्कृष्ट एवं आदिवासी क्षेत्रों के विद्यालय।

5. कार्यक्रम विवरण

यह परीक्षा दो चरणों में होती है। प्रथम चरण में म.प्र स्तर पर अधिकतम 30 छात्र/छात्राओं का चयन (न्यूनतम 40 प्रतिशत प्राप्तांक प्राप्त होने पर) किया जाता है। 24 छात्र/छात्रायें 8वीं, 9वीं, 10 वीं, 11वीं कक्षाओं के तथा 12वीं से प्रथम स्थानों पर छह अधिकतम छात्र/छात्राओं का चयन मेरिट के आधार पर किया जाता है। इन चयनित छात्र-छात्राओं के लिए उन्मुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। द्वितीय चरण में म.प्र. स्तर पर चयनित प्रतिभागी, राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित परीक्षा मे शामिल होंगे।

प्रथम चरण की परीक्षा राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान के सहयोग से सम्पन्न होती है एवं द्वितीय चरण की प्रतियोगिता परमाणु ऊर्जा विभाग द्वारा ली जाती है, जिसका केन्द्र राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान जबलपुर रहता है। द्वितीय चरण में उत्तीर्ण छात्रों को प्रमाण पत्र एवं गणित की पुस्तकें पुरस्कार स्वरूप दी जाती हैं एवं उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय गणित ओलंपियाड में शामिल होने का अवसर प्रदान किया जाता है।

6. समय सारिणी

क्रं.	निर्धारित कार्य	माह
1	म.प्र.के सभी उ.मा.वि.तथा परीक्षा केन्द्रों को आवद्गयक निर्देद्गा भेजना।	सितम्बर,
2	विद्यार्थियों द्वारा नाम पंजीकृत कराना।	सितम्बर एवं अक्टूबर,
3	प्रत्येक जिले में प्रथम चरण की परीक्षा का आयोजन करना।	नव.-दिस.
4	प्रथम चरण के परिणामों की घोषणा।	जनवरी,
5	उन्मुखीकरण कार्यक्रम	जनवरी,
6	राज्य विज्ञान द्गिाक्षा संस्थान में द्वितीय चरण की परीक्षा का आयोजन।	जनवरी-फरवरी,
7	पुरस्कारों की घोषणा	5 सितम्बर,

7. अपेक्षित परिणाम

प्रदेश के 10000 हजार विद्यार्थियों में गणित विषय के प्रति प्रतिस्पर्धात्मक दृष्टिकोण एवं तर्क विश्लेषण शक्ति का विकास हो सकेगा।

नवाचारी विज्ञान शिक्षक पुरस्कार

1. पृष्ठभूमि

प्रदेश में विज्ञान शिक्षकों को नवाचारी शिक्षण पद्धतियों को अपनाने एवं प्रोत्साहित करने हेतु यह पुरस्कार योजना वर्ष 1989 से लगातार प्रदेद्गा में क्रियान्वित की जा रही है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत प्रति वर्ष तीन सर्वश्रेष्ठ विज्ञान शिक्षकों को पुरस्कृत किया जाता है। अभी तक कुल 57 शिक्षकों को पुरस्कृत किया जा चुका है। इस प्रतियोगिता का लाभ प्रदेश के अधिक से अधिक विज्ञान शिक्षकों तक पहुंचाने के उद्देश्य से गतिविधि का विस्तार करने एवं सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता महसूस की गई। वर्ष 2008-09 से पुरस्कार राशि बढ़ाकर रुपये 25,000/- कर दी गई है एवं शिक्षकों को पुरस्कृत करने हेतु 5 सितम्बर 2009 से म.प्र. विज्ञान प्रतिभा सम्मान समारोह आरंभ किया गया है।

2. समीक्षा/उपलब्धियॉ 2017-18

विज्ञान शिक्षण के क्षेत्र में नवाचार कर रहे शिक्षकों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् एवं राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान, जबलपुर के संयुक्त तत्वाधान में नवाचारी विज्ञान शिक्षण पुरस्कार प्रतियोगिता 2016-2017 का आयोजन जबलपुर में किया गया।

3 प्रथम चरण के मूल्यांकन पश्चात् निर्धारित मापदंड के आधार पर 16 उम्मीदवार को प्रतियोगिता के द्वितीय चरण हेतु आमंत्रित किया गया।

4 द्वितीय चरण की प्रतियोगिता (विज्ञान शिक्षण एवं साक्षात्कार) के माध्यम से प्रदेश के निम्न तीन शिक्षकों का चयन किया गया। जिन्हें 8 जनवरी 2018 को रूपये 25,000/- नगद पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

1- डॉ; ललित मेहता, अध्यापक, शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, रतलाम

2- मो; शाहिद अंसारी, अध्यापक, शासकीय हाई स्कूल, खिरसाडोह, छिंदवाडा

3- श्रीमती भारती द्विवेदी, उच्च श्रेणी शिक्षक, शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, शिवाजी नगर, भोपाल

वर्ष 2017-18 के नवाचारी शिक्षकों के चयन की प्रक्रिया की जा चुकी है।

3. उद्देश्य

- प्रदेश के विज्ञान शिक्षकों को विज्ञान लोकव्यापीकरण के लिए प्रेरित करना।
- विज्ञान शिक्षकों के नवाचारित क्रियाकलापों, नवीनतम शोध कार्यों एवं प्रयोगों संबंधी जानकारी का मूल्यांकन तथा उसका प्रचार प्रसार करना।
- विज्ञान शिक्षा के उन्नयन में विज्ञान शिक्षकों के सार्थक प्रयासों का आकलन तथा उसका शिक्षा जगत में उपयोग करना।
- विज्ञान शिक्षकों का अध्ययन, अध्यापन कार्य की प्रमुख उपलब्धियों एवं सृजनात्मक गतिविधियों का मूल्यांकन एवं प्रचार-प्रसार करना।
- विज्ञान को रूचिकर एवं लोकप्रिय बनाने में विज्ञान शिक्षकों द्वारा संपादित क्रियाकलापों का उपयोग करना।

प्रदेश के माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक (शासकीय, अशासकीय, एवं आदिम जाति कल्याण) के विद्यालयों के तीन शिक्षकों को नवाचारी विज्ञान पुरस्कार से पुरस्कृत करने का लक्ष्य।

4. सहयोगी/सहभागी संस्थायें

- राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान, जबलपुर।

प्रदेश के माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक (शासकीय/अशासकीय एवं आदिम जाति कल्याण) के विद्यालय।

5 कार्यक्रम विवरण

इस प्रतियोगिता में म. प्र. के माध्यमिक, उच्चतर, माध्यमिक शालाओं (शासकीय, अशासकीय, आदिम जाति कल्याण) के विज्ञान शिक्षक, व्याखयाता भाग ले सकते हैं। भाग लेने वाले द्गिाक्षकों को कम-से-कम पांच वर्ष अध्यापन कार्य का अनुभव होना आवश्यक है।

6. समय सारिणी

क्रमांक	प्रस्तावित कार्यक्रम	प्रस्तावित माह
1	विज्ञापन का प्रकाद्गान तथा विवरण पुस्तिकाओं का वितरण	सितम्बर,
2	प्रतिभागियों से आवेदन प्राप्त होने की अंतिम तिथि	सितम्बर,
3	प्रथम चरण का मूल्यांकन	अक्टूबर,
4	द्वितीय चरण हेतु अध्यापन कार्य का मूल्यांकन, आदर्द्गापाठ, साक्षात्कार।	जुलाई
5	नवाचारी विज्ञान द्गिाक्षकों को पुरस्कार वितरण।	5 सितम्बर,

7. अपेक्षित परिणाम

प्रदेश के माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक (शासकीय, अशासकीय, एवं आदिम जाति कल्याण) विद्यालय के विज्ञान शिक्षक, विज्ञान शिक्षा के क्षेत्र में नवाचारित क्रिया कलापों, नवीनतम शोधकार्यो एवं प्रयोगों के प्रति प्रेरित हो सकेंगे ।

पश्चिम भारत विज्ञान मेला

1. पृष्ठभूमि

नेहरू विज्ञान केन्द्र, मुम्बई द्वारा छात्रों एवं द्गिाक्षकों में वैज्ञानिक जागरूकता का विकास करने हेतु पद्गिचम भारत विज्ञान मेले का आयोजन किया जाता है। राज्य स्तर पर वर्ष 1989 से परिषद् एवं राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान जबलपुर के संयुक्त तत्वाधान में राज्य स्तरीय पश्चिम भारत विज्ञान मेले का आयोजन किया जा रहा है। अभी तक इस मेले में एक जिले से कम से कम दो ही प्रादर्शों को सम्मिलित किया जाता रहा है, किन्तु इस गतिविधि का लाभ प्रदेश के अधिकतम विद्यार्थियों तक पहुंच सके इसकी आवश्यकता दिखाई दी।

2. समीक्षा/उपलब्धियॉ (2017-18)

इस प्रतियोगिता में वर्ष 2017-18 में शैक्षणिक जोन से व्यक्तिगत, टीम प्रोजेक्ट तथा शिक्षण सहायक सामग्री के प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसमें 8वीं से 12वीं कक्षा तक के विद्यार्थियों के 6 सर्वश्रेष्ठ प्रादर्श (3 व्यक्तिगत व 3 टीम प्रोजेक्ट) व शिक्षकों द्वारा निर्मित 3 सहायक शिक्षण सामग्री का चयन किया गया।

3. उद्देश्य

- शाला में अध्ययनरत कक्षा आठवीं से बारहवीं तक के विद्यार्थियों को विज्ञान की नई खोजों/उपलब्धियों के संबंध में जानने एवं खोज हेतु प्रोत्साहित करना।
- विद्यार्थियों की विज्ञान की समस्याओं को व्यावहारिक उपागम के माध्यम से समाधान करने में सहायता करना।
- विद्यार्थियों द्वारा शिक्षक मार्गदर्शन में विभिन्न विषयों मे से किसी एक विषय पर परियोजना तैयार करना।
- छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास ।

4. सहयोगी/सहभागी संस्थायें

- राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान, जबलपुर।
- नेहरू विज्ञान केन्द्र, मुम्बई।
- प्रदेश के सभी शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय।

5. कार्यक्रम विवरण

पश्चिम भारत विज्ञान मेले में प्रदेश के सभी शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक एवं कक्षा आठवीं से बारहवीं तक अध्ययनरत छात्र/छात्राएँ भाग लेते हैं। प्रतिभागी नेहरू विज्ञान केन्द्र मुम्बई, के द्वारा प्रस्तावित विभिन्न विषयों मे से किसी एक विषय पर अपना प्रोजेक्ट शिक्षक के मार्गदर्शन में बनाते हैं। इस प्रोजेक्ट में नवीनता तथा समाज में उपयोगिता पर महत्व दिया जाता है। यह प्रतियोगिता ब्लॉक स्तर से राज्य स्तरीय आयोजन के द्वारा पांच व्यक्तिगत प्रोजेक्ट/प्रादर्श, पांच टीम प्रोजेक्ट/प्रादर्श तथा तीन शिक्षण सहायक सामग्री चयनित की जाती है, जो क्षेत्रीय मेले में मध्यप्रदेश का प्रतिनिधित्व करते हैं।

6. समय सारिणी

क्रमांक	स्तर	माह	आयोजन
1	ब्लाक स्तर पर	अक्टूबर	विकास खण्ड मुखयालय
2	जिला स्तर पर	अक्टूबर	जिला मुखयालय
3	जोन स्तर पर	अक्टूबर	शैक्षणिक जोन स्तर
4	राज्य स्तर पर	अक्टूबर/नवम्बर,	राज्य विज्ञान द्गिाक्षा संस्थान जबलपुर
5	क्षेत्रीय मेला	दिसम्बर /जनवरी,	नेहरू विज्ञान केन्द्र मुम्बई

7. अपेक्षित परिणाम

ब्लॉक स्तर तक इस गतिविधि का लाभ कम-से-कम पांच हजार विद्यार्थियों एवं पांच सौ शिक्षकों तक पहुंच सकेगा, जिन्हें अंर्तराष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु एक मंच प्राप्ति का अवसर प्राप्त होगा।

राष्ट्रीय विज्ञान सेमीनार

1. पृष्ठभूमि

नेहरू विज्ञान केन्द्र मुम्बई के मार्गदर्शन में म.प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद द्वारा प्रतिवर्ष राष्ट्रीय विज्ञान सेमिनार का राज्य स्तरीय कार्यक्रम राज्य शिक्षा संस्थान के सहयोग से आयोजित किया जाता है। इस प्रतियोगिता में प्रदेद्गा के सभी शासकीय/अशासाकीय विद्यालयों के कक्षा 10 वीं तक के छात्र/छात्राएँ भाग लेते हैं, जो नेहरू विज्ञान केन्द्र मुम्बई द्वारा निर्धारित विषय पर अपना प्रस्तुतीकरण चार्ट, पोस्टर के माध्यम से देते हैं।

2. समीक्षा/उपलब्धियॉ (2017-18)

31 अगस्त 2017 को राज्य स्तरीय राष्ट्रीय विज्ञान सेमिनार का आयोजन किया गया जिसमें ९ शेक्षणिक जोन के कक्षा 8-10 वीं के 12 विद्यार्थियों ने भाग लिया। स्वच्छ भारत : विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी भूमिका विषय पर 6 मिनिट का प्रस्तुतिकरण चार्ट पोस्टर द्वारा किया गया। लिखित दक्षता परीक्षण व प्रश्न-उत्तरी भी प्रतिभागियों से किया गया।

प्रथम विजेता विद्यार्थी ने राष्ट्रीय विज्ञान सेमिनार 2017 नई दिल्ली में भाग लिया।

3. उद्देश्य

- विद्यार्थियों में वैज्ञानिक खोज एवं विश्लेषणात्मक प्रवृति जागृत करना।
- उभरते बाल वैज्ञानिकों को विचारों के आदान-प्रदान हेतु मंच उपलब्ध कराना।
  देश भर के विद्यर्थियों में राष्ट्रीय संकल्प की भावना विकसित करना।

4. सहयोगी/सहभागी संस्थायें

- राज्य विज्ञान द्गिाक्षा संस्थान, जबलपुर।
- राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद, कोलकाता।
- नेहरू विज्ञान केन्द्र, मुम्बई।
- प्रदेश के सभी शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय।

5. कार्यक्रम विवरण

यह प्रतियोगिता विकास खण्ड स्तर से आरंभ की जाती है, जहॉ से दो छात्र-छात्राओं का चयन कर उन्हें जोन स्तर की प्रतियोगिता हेतु भेजा जाता है। जोन स्तर पर दो छात्र-छात्राओं का चयन कर उन्हें राज्य स्तर की प्रतियोगिता में सम्मिलित किया जाता है। राज्य स्तर की प्रतियोगिता में एक सर्वश्रेष्ठ छात्र-छात्रा का चयन राष्ट्रीय स्तर पर होने वाली प्रतियोगिता, जिसका आयोजन राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद् एवं नेहरू विज्ञान केन्द्र मुम्बई व नई दिल्ली में किया जाता है। इस प्रतियोगिता में राज्य स्तर पर विद्यार्थियों की प्रतिभागिता सुनिश्चित की जाती है।

6. समय सारिणी

माह अगस्त-सितम्बर में ब्लाक स्तर से राज्य स्तर तक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जायेगा।

7. अपेक्षित परिणाम

ब्लाक स्तर तक इस गतिविधि का लाभ अधिक-से-अधिक विद्यार्थियों तक पहुँच सकेगा, जिन्हें राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु एक मंच प्राप्ति का अवसर प्राप्त होगा।

बाल विज्ञान कांग्रेस

1. पृष्ठभूमि

बच्चों में वैज्ञानिक सोच का विकास एवं सृजनात्मक अभिरूचि जागृत करने के लिए परिषद् के सहयोग से पहली राज्य स्तरीय बाल विज्ञान कांग्रेस का आयोजन वर्ष 1989 में साइंस सेंटर (ग्वालियर) म.प्र. द्वारा ग्वालियर में किया गया। शनैः-शनैः इस गतिविधि का विस्तार हुआ एवं वर्ष 1992 से यह गतिविधि राष्ट्रीय स्तर पर होने लगी। राष्ट्रीय स्तर पर यह गतिविधि राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली द्वारा आयोजित की जाती है। परिषद द्वारा राज्य स्तरीय बाल विज्ञान कांग्रेस के प्रतिभागियों का आने-जाने का मार्ग व्यय वहन किया जाता है एवं विगत वर्षो से राष्ट्रीय स्तर के लिए चयनित विद्यार्थियों को पुरस्कृत भी किया जाता है । परिषद् द्वारा वर्ष 2014-15 में राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस का विशेष आयोजन भोपाल में किया गया।

2. समीक्षा/उपलब्धियॉ (2017-18)

25 वीं राज्य स्तरीय बाल विज्ञान कांग्रेस 2017 का आयोजन साइंस सेन्टर (ग्वा) मध्यप्रदेश द्वारा किण्डर हायर सेकेण्डरी स्कूल, देवास में 1, 2 एवं 3 दिसम्बर 2017 को किया गया। इस बाल विज्ञान कांग्रेस में प्रदेश के 240 बाल वैज्ञानिकों ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किये तथा उन्हें पोस्टर के माध्यम से भी प्रस्तुत किया गया । इन 240 बाल विज्ञानों में 138 छात्र तथा 102 छात्राओं ने भागीदारी की। परिषद द्वारा प्रतिभागियों का मार्ग व्यय वहन किया गया एवं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस के लिये चयनित 30 प्रोजेक्टस हेतु रू. 1000/- की प्रोत्साहन राशि प्रत्येक प्रोजेक्ट को प्रदान की गई। आदिवासी क्षेत्रों के बच्चों को वैज्ञानिक गतिविधियों से जोडने के उद्देश्य से इस वर्ष से 3 सर्वश्रेष्ठ प्रोजेक्टस का चयन पृथक से किया गया एवं रू. 5000/-, 3000/-, 2000/- की पुरस्कार राशि प्रदान की गई। चयनित छात्र-छात्राएं दिसम्बर 2017 मे होने वाली राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस मे मध्यप्रदेश का नेतृत्व करेंगें।

3. उद्देश्य

- राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद्, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार नई दिल्ली द्वारा निर्धारित विषय एवं उपविषयों पर स्थानीय समस्या को लेकर प्रोजेक्ट निर्माण करना एवं उनका प्रस्तुतीकरण स्लाइड, पोस्टर एवं प्रोजेक्ट फाइल के माध्यम से करना ।
- छात्र-छात्राओं में खोजी प्रवृति एवं सृजनात्मकता का विकास करना ।

4. सहयोगी/सहभागी संस्थायें

- साइंस सेंटर (ग्वालियर) म.प्र.।
- मध्यप्रदेश विज्ञान सभा, भोपाल।
- राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद्, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली।
- विज्ञान प्रसार, नई दिल्ली।

प्रदेश के शासकीय, अशासकीय विद्यालय एवं आदिवासी क्षेत्रों के विद्यालय।

5. कार्यक्रम विवरण

राज्य स्तरीय बाल विज्ञान कांग्रेस का आयोजन राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद्, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग नई दिल्ली के मार्गदर्शन में साइंस सेंटर (ग्वालियर) द्वारा किया जाता है,

जिसमें परिषद् बच्चों के मार्ग व्यय में वित्तीय सहयोग प्रदान करेगी, एवं बच्चों को प्रोत्साहन राशि प्रदान करेंगी ।

6. समय सारिणी

क्रमांक	प्रस्तावित कार्यक्रम	प्रस्तावित माह
1	राज्य स्तरीय बाल विज्ञान कांग्रेस की तैयारी हेतु शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम	मई
2	राज्य स्तरीय बाल विज्ञान कांग्रेस के आयोजन हेतु प्रस्ताव प्राप्त करना।	सितम्बर
3	प्रस्ताव का विशेषज्ञ समिति द्वारा मूल्यांकन एवं वित्तीय अनुदान प्रदान करना।	अक्टूबर
4	राज्य स्तरीय बाल विज्ञान क्रॉग्रेस के आयोजन के अवसर पर पुरस्कार वितरण	नवम्बर-दिसम्बर
5	राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस का आयोजन	दिसम्बर

7. अपेक्षित परिणाम

इस गतिविधि में बाल वैज्ञानिक ब्लॉक स्तर से आरंभ होकर राष्ट्रीय स्तर तक जाते हैं। अतः ब्लॉक स्तर से राष्ट्रीय स्तर तक प्रदेद्गा के करीब पॉच हजार छात्र/छात्राएं लाभान्वित हो सकेंगे।

5.6 स्वास्थ्य विज्ञान एवं स्वच्छता ज्ञान

अ. आरोग्य ज्ञान प्रतियोगिता

1. पृष्ठभूमि

शासन के अथक प्रयासों के बावजूद ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य की स्थिति संतोषजनक नहीं है। इतने विशाल देश में मात्र सरकारी साधनों से स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करना आसान नहीं है। स्वंय की स्वास्थ्य रक्षा करने के लिए व्यक्ति को शिक्षित/प्रशिक्षित होना आवश्यक है। तभी वह स्वयं की, परिवार की तथा समाज की स्वास्थ्य रक्षा कर सकेगा। इसी अवधारणा को ध्यान में रखते हुए सर्वप्रथम शिक्षकों एवं तत्पश्चात् छात्रों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक व उत्तरदायी बनाना है, जिससे वे समाज की स्वास्थ्य रक्षा में सहभागी बनें। इस उद्देश्य से शालेय विद्यार्थियों के बीच विद्गोष तौर से आदिवासी बाहुल्य जिलों में आरोग्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है।

परिषद् के सहयोग से आरोग्य भारती वर्ष 2008 से स्वास्थ्य ज्ञान प्रतियोगिता का संचालन सफलतापूर्वक कर ही है। मध्यप्रदेश के लगभग 40 जिलों में संचालित यह कार्यक्रम इतना लोकप्रिय हुआ कि हरियाणा, पंजाब, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश आदि राज्यों ने इस तरह के आयोजन किये।

2. समीक्षा/उपलब्धियॉ (2017-18)

स्वास्थ्य ज्ञान परीक्षा (अभियान चिरंजीव 2016-17)

आरोग्य भारती मध्यभारत द्वारा मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद के सहयोग से मध्यप्रदेश के 40 जिलों में विद्यालय स्वास्थ्य शिक्षा संस्था के कार्यक्रम के तहत अभियान चिरंजीव परियोजना का संचालन किया गया।

स्वास्थ्य ज्ञान परीक्षा मध्यप्रदेश के 40 जिलों में 3 स्तर पर आयोजित की गई जिसमें कुल 52,000 बालक एवं बालिकाओं ने भाग लिया और विद्यार्थियों को बाल आरोग्य मित्र स्वास्थ्य ज्ञान पुस्तिका निशुल्क वितरित की गई।

3. उद्देश्य

- पहले शिक्षकों को प्रशिक्षित करना फिर विद्यार्थियों को स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान कर उनकी स्वास्थ्य ज्ञान परीक्षा का आयोजन सैद्धांतिक व प्रायोगिक स्तर पर करना।
- प्रदेद्गा के जन सामान्य हेतु स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन करना।
- म.प्र में ब्लॉक स्तर पर ग्रासरूट लेवल पर यह कार्य करना, जिससे एक स्वस्थ्य समाज की स्थापना हो सके तथा ग्रामीण एवं गरीब तबके के लोगों को जागृत किया जा सके।

4. सहयोगी/सहभागी संस्थायें

- जनजातीय शिक्षा विभाग एवं आश्रम शालाएं/स्वास्थ्य विभाग, म.प्र. शासन।
- संबंधित क्षेत्र में संलग्न अशासकीय संस्थाएं जैसे आरोग्य भारती

5. कार्यक्रम विवरण

- स्वास्थ्य ज्ञान शिविरों का आयोजन
- स्वास्थ्य ज्ञान प्रतियोगिता।

6. समय सारिणी

प्रथम तिमाही	**द्वितीय तिमाही**	**तृतीय तिमाही**	**चतुर्थ तिमाही**
सर्वप्रथम प्रत्येक संभाग में 10 तहसीलों को चिन्हित कर उस क्षेत्र के मिडिल स्कूलों से एक एक द्गिाक्षक का चयन किया जायेगा। इस तरह प्रत्येक तहसील में दो दिन का प्रशिक्षण दिया जायेगा। प्रशिक्षण के उपरांत उन्हें एक अनुवर्ती कार्यक्रम का एक प्रोफार्मा दिया जायेगा। आगामी तीन माह में स्वास्थ्य जागरण संबंधी कार्यक्रम कराये जायेंगे तथा तीन से पांच माह की अवधि में मिडिल स्कूल स्तर के विद्यार्थियों को स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान कर उनकी स्वास्थ्य ज्ञान परीक्षा सैद्धांतिक व प्रायोगिक स्तर पर ली जायेगी।	प्रशिक्षण के दौरान ग्रामीण विद्यालयों के शिक्षकों को अध्ययन सामग्री, चार्ट, आरोग्य पेटी, जिसमें प्राथमिक स्वास्थ्य उपचार की किट एवं औषधियां सम्मिलित होगी, प्रदान की जायेंगी।	संस्था द्वारा किए गए कार्यो की कार्यशाला/बैठकों के माध्यम से मूल्यांकन करना।	रिपोर्ट, उपयोगिता प्रमाण पत्र प्राप्त करना, कार्यक्रम से दूरगामी प्रभाव हेतु संबंधित संस्था के साथ कार्ययोजना तैयार करना, समिति की बैठक का आयोजन करना।

7. अपेक्षित परिणाम

ब. राष्ट्रीय स्वच्छता मिशन

1. पृष्ठभूमि

विगत वर्षों से राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद् नई दिल्ली के सहयोग से गांधी जयंती से आरंभ कर एक माह तक स्चच्छता के लिए विज्ञान माह के रुप में मनाया जा रहा हैं। आज भी नगरीय झुग्गी- बस्ती क्षेत्र में एवं कस्बों के पुरानी बस्तियों में अच्छी सेनीटेशन की आदत नही हैं, जिसका कारण हैं जागरूकता में कमी। अक्टूबर - नवम्बर माह के दौरान साइंस फॉर सेनीटेशन मंथ के रुप में मनाकर विद्यार्थी, शिक्षकगण, नगरपालिका एवं पंचायत संस्था, ओपीनियन लीडर एवं डिसीजन मेकर्स के बीच हाइजीन, सेनीटेशन, वेस्ट ट्रीटमेंट, वाटर बार्न डिसीज जैसे तथ्यों को प्राथमिकता के आधार पर लेने के लिये सामाजिक दबाव बनाया जा सकता है। इसी उद्देश्य से परिषद् द्वारा स्वच्छता माह का आयोजन किया जा रहा है।

2. समीक्षा/उपलब्धियॉ (2017-18)

स्वच्छता मिशन पर शासकीय विद्यालयों, महाविद्यालयों द्वारा जल स्त्रोतों की सफाई, व्यक्तिगत सफाई, रैली, गॉव की सफाई, शौचालयों का निर्माण, ट्रेनिंग, जागरूकता कार्यक्र, कचरे का निष्पादन, गंदगी से होने वाली बीमारियों का बचाव पर कार्यशाला स्लोग्न, पोस्टर प्रतियोगिता का 7 दिवसीय आयोजन किया गया।

3. उद्देश्य

- नगरीय झुग्गी-बस्ती एवं ग्रामीण क्षेत्र में अच्छी सेनीटेशन की आदत डालना।
- विद्यार्थी, शिक्षकगण, म्यूनिसपल एवं पंचायत कार्यकर्त्ताओं के बीच हाईजीन, सेनीटेशन, वेस्ट ट्रीटमेंट, वाटर वार्न डिसीज आदि तथ्यों को प्राथमिकता के आधार पर लेने के लिए सामाजिक दबाव बनाना।

4. सहयोगी/सहभागी संस्थायें

- संबंधित क्षेत्र में संलग्न अद्गाासकीय संस्थाएं।
- विद्यालयों/महाविद्यालयों

5. कार्यक्रम विवरण

- इसके अंतर्गत स्वास्थ्य एवं स्वच्छता संबंधी विषयों पर विद्यालयों/महाविद्यालयों / अशासकीय संस्थाओं के माध्यम से व्याखयान प्रदर्शन, प्रदर्शनी एवं गांव के हाट में वाद-विवाद कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।
- कम-से-कम 5 कार्यक्रम आयोजित करना।

6. समय सारिणी

अक्टूबर-नवम्बर, 2018 में कार्यक्रम आयोजित करना।

7. अपेक्षित परिणाम

- नगरीय झुग्गी-बस्ती एवं ग्रामीण क्षेत्र में अच्छी सेनीटेशन की आदत डालने मे सफल हो सकेगें।
- विद्यार्थी, शिक्षकगण, म्युनिसपल एवं पंचायत कार्यकर्त्ताओं के बीच हाइजीन, सेनीटेशन, वेस्ट ट्रीटमेंट, वाटर वार्न डिसीज आदि तथ्यों को प्राथमिकता के आधार पर लेने के लिए सामाजिक दबाव बनाने मे सफल हो सकेगें।

5.7 विविध समारोह

1. पृष्ठभूमि

पूर्व पृष्ठों में दी गई गतिविधियां एवं कार्यक्रम विज्ञान लोकव्यापीकरण के क्षेत्र मे पर्याप्त नहीं हैं। अतः प्रदेश में कार्यरत अशासकीय संस्थायें स्वयं के स्तर पर स्थानीय समस्याओं, स्थानीय भाषाओं एवं विज्ञान के वर्तमान पहलुओं को लेकर नवीन कार्यक्रमों के आयोजन हेतु प्रस्ताव तैयार करती हैं। इन कार्यक्रमों को विविध योजनाओं के अन्तर्गत रखा गया है।

2. समीक्षा/उपलब्धियॉ (2017-18)

शासकीय एवं अशासकीय संस्थाओं के माध्यम से प्रशिक्षण, जागरूकता एवं नर्मदा जयंती एवं अन्य कार्यक्रम

विविध योजनायें

- आंचलिक विज्ञान केन्द्र भोपाल द्वारा शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिसमें मध्यप्रदेश के विभिन्न शासकीय हायरसकेंडरी स्कूल के 41 शिक्षकों ने प्रशिक्षण लिया। शिक्षकों द्वारा 140 लो कॉस्ट टीचिंग साइंस किट का निर्माण किया गया।
- आंचलिक विज्ञान केन्द्र, भोपाल द्वारा लेकसिटी साइंस मॉडल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसके 17 विदयालयों ने भाग लिया एवं 43 वर्किंग साइंस मॉडल प्रदर्शन किया गया। इस प्रतियोगिता में 96 प्रतिभागियों ने भाग लिया। चयनित प्रथम द्वितीय तृतीय विज्ञान मॉडलों को पुरस्कृत किया गया।
- आंचलिक विज्ञान केन्द्र, भोपाल द्वारा लेकसिटी साइंस डामा फेस्टिवल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 6 विदयालयों ने एवं 110 प्रतिभागियों ने भाग लिया। चयनित प्रथम द्वितीय तृतीय विज्ञान मॉडलों को पुरस्कृत किया गया।
- आंचलिक विज्ञान केन्द्र, भोपाल द्वारा राष्टीय विज्ञान दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें निबंध लेखन, स्वच्छता, रेली, चित्रकला, क्विज आदि गतिविधियों में 67 छात्र /छात्राओं एवं प्रतिभागियों ने भाग लिया। चयनित प्रथम द्वितीय तृतीय विज्ञान मॉडलों को पुरस्कृत किया गया।
- ओशिन एजुकेशन एंड सोशल वेलफेयर एसोसिएशन, भोपाल द्वारा रायसेन जिले में अक्षय उर्जा विषय पर जागरूकता कार्यक्रम 5 ग्राम (सलामतपुर, खोया, टुण्डा, दीवानगंज, सेमरा) आम जनता एवं स्कूली बच्चों के लिये आयोजित किया गया, जिसमें लगभग 418 बच्चों एवं आम जनता की भागी सुनिश्चित की गई। विशेषज्ञ द्वारा उक्त विषय से संबंधित जानकारी प्रदान कर निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई।
- श्री मां निर्मल शिक्षा एवं समाज कल्याण समिति, भोपाल द्वारा एक दिवसीय ग्राम सिलावटपुरा, जिला विदिशा में जल संरक्षण हमारी जिम्मेदारी विषय पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया । इस कार्यक्रम में कुल 127 सभी वर्ग के प्रतिभागियों ने भाग लिया।
- अंजनी जन कल्याण समिति, बीना, जिला सागर द्वारा एक दिवसीय कार्यक्रम जिला विदिशा के ग्राम मंडी बामौरा में मर्यादा बचाओं विषय पर आयोजित किया गया। कुल 175 सभी वर्ग के प्रतिभागियों ने भाग लिया।
- राधाकृष्ण सोसायटी ऑफ रिसर्च एवं डेव्हलपमेंट, भोपाल द्वारा जल संरक्षण के तरीके विषय पर दो दिवसीय कार्यक्रम जिला सांझापुर के ग्राम दिलवाद में आयोजित किया गया। सभी वर्ग के 200 प्रतिभागियों ने भाग लिया। जल संरक्षण एवं बचाव के तरीके के बारे में विशेषज्ञ द्वारा जानकारी प्रदान की गई।
- सारथी हेल्थ एवं एजुकेशन डेव्हलपमेंट आर्गेनाइजेशन, भोपाल द्वारा छिंदवाड़ा जिले के तामिया विकास खण्ड में एक दिवसीय 5 शासकीय विद्यालयों में राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान के अंतर्गत विभिन्न गतिविधियां - कार्यशाला, ड्राइंग, निबंध एवं नारा लेखन का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 813 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

- 104वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस 2017 में परिषद् की गतिविधियों की प्रदर्षनी का आयोजन श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरूपति, आंध्रप्रदेश में दिनांक 3 से 7 जनवरी को किया गया। इसमें लगभग 10000 हजार बच्चों एवं आम जनता द्वारा अवलोकन किया गया।
- चित्रांश ह्यूमन एण्डं वेलफेयर सोसाइटी, भोपाल द्वारा जल परीक्षण संरक्षण एवं प्रबन्धन विषय पर राजधानी के दस शासकीय अर्धशासकीय स्कूलों मे छात्र/त्राओं के लिये प्रशिक्षण एवं सेमिनार का सफलता पूर्वक आयोजन किया गया। विशेषज्ञों द्वारा उक्तश जानकारी प्रदान की गई। इसमें सभी वर्ग के 1100 छात्र/त्राओं ने भाग लिया।
- चन्द्रकांता शिक्षण सेवा संस्थान, भोपाल द्वारा जल संरक्षण विषय पर तीन दिवसीय कार्यक्रम ग्राम खुरचनी जिला भोपाल मे जन समुदाय के लिये आयोजित किया। विशेषज्ञों द्वारा जल संरक्षण के बारे में जानकारी एवं उपाय/बचाव के तरीकों को समझाया गया। इसमें सभी वर्ग के पत्र 140 सहभागियों ने भाग लिया।
- फेडरल फ्युचर इनफिनिर्रटी एजुकेशन वेलफेयर सोसाइटी, भोपाल द्वारा एक दिवसीय कार्यक्रम जल प्रदूषण समस्या एवं समाधान विषय पर जनसमूह एवं विद्यार्थी के लिए ब्यावरा जिला राजगढ़ मे आयोजित किया गया। विषय विशेषज्ञों को उक्त जानकारी प्रदान की गई। इसमें सभी वर्ग के 162 सहभागियों ने भाग लिया।
- मध्यंप्रदेश साइंस सेन्टर, भोपाल द्वारा पॉच दिवसीय स्कूली बच्चों के लिए नेचर स्टंडी कैम्प भोपाल जिले के आदिवासी स्कूालों मे जिसमें विभिन्न् स्कूलो से 57 प्रतिभागियों का चयन कर विशेषज्ञों द्वारा पर्यावरण संबंधी जानकारी से अवगत कराया गया।
- सहभागिता महिला मंडल, भोपाल द्वारा एक दिवसीय कार्यक्रम स्वच्छता अपनाओं जीवन खुशहाल बनाओं स्वच्छ भारत मिशन से प्रेरित ग्राम दाताग्राम जिला राजगढ़ मे जन समूह के लिये आयोजित किया गया। उक्त विषय की जानकारी प्रदान की गई। इसमे सभी वर्ग के कुल 119 सहभागियों ने भाग लिया।
- पद्मावती स्वास्थ्य सेवा समिति, भोपाल द्वारा दो दिवसीय नवजात शिशु एवं बच्चों मे बधिरपन हेतु परीक्षण एवं उनके पुर्नवास की जानकारी हेतु मंडीदीप जिला रायसेन मे शिविर का आयोजन किया गया। विशेषज्ञों द्वारा उक्तर विषय से सम्बधित जानकारी बच्चों को प्रदान की गई। इसमें सभी वर्ग के 512 बच्चों ने भाग लिया।
- वैकुण्ठ एजुकेशन एण्ड वेलफेयर सोसाइटी, भोपाल द्वारा दो वैज्ञानिक कार्यशाला का आयोजन विषय जल प्रदूषण समस्या एवं समाधान पर जिला सीहोर के विकास खंड इछावर ग्राम लसुड़िया कांगर एवं जोड़ ग्राम बस्तीय में ग्रामीण विद्यार्थी एवं जन सामान्यक के लिय के आयोजित किया गया। विशेषज्ञों द्वारा उक्त विषय की जानकारी से अवगत कराते हुये प्रदूषण समस्या के निराकरण संबंधी जानकारी प्रदान की गई। इस कार्यक्रम के माध्यम से कुल 249 छात्र/त्राओं ग्राम के सामान्य जन लाभान्वित हुये।
- वेलफेयर सोसाइटी फॉर सोशल अपल्फ्टि, भोपाल द्वारा तीन दिवसीय वैज्ञानिक कार्यशाला का आयोजन जिला सीहोर के ग्रामीण क्षेत्र बसंतपुर जिला सीहोर मे स्कूलों मे जल संरक्षण पर सेनीटेंशन विषय पर आयोजित किया गया। तीन दिवसीय कार्यक्रम के माध्यम से जल संरक्षण एवं जल शुद्धिकरण की विभिन्नत प्रोत्साहन गतिविधियां आयोजित की गई साथ ही विभिन्न रसायनों क्लोरीन फ्लोरीन आदि के माध्यम से जल स्त्रोतों के नमूनो का भौतिक व रासायनिक परीक्षण कर जल शुद्धिकरण भी किया गया तथा जल स्वच्छता का आयोजन भी उक्त तीन दिवसीय कार्यक्रम के माध्यथम से किया गया सभी वर्ग के 147 प्रतिभागियों ने भाग लिया
- अनुभूति मानव सेवा संस्थान समिति, भोपाल द्वारा शहरीकरण से होने वाले रासायनिक प्रदूषण के प्रति वैज्ञानिक कार्यशाला का आयोजन होशंगाबाद जिले के बाबई तहसील के पॉच शासकीय स्कूलों मे आयोजित उक्तय विषय की जानकारी छात्र/छात्राओं को प्रदान की गई। साथ ही निबंध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया कुल 236 स्कूली विद्यार्थियों ने भाग लिया।

- महिला जागरण एवं कल्याण परिषद्, सागर द्वारा तीन दिवसीय कंटूर ट्रेचेस तकनीक द्वारा जलसंग्रहण एवं संरक्षण जागरूकता कार्यशाला का आयोजन ग्राम गंभीरिया तहसील सागर जिला सागर मे ग्रामीण जन सामान्य के लिये किया गया। विशषज्ञों द्वारा उक्त विषय की जानकारी प्रदान की गई। इस कार्यशाला में 90 ग्रामीण सहभागिता में भाग लिया।
- नेशनल इनवॉयरामेन्ट फॉर डेवलपमेंट एक्शन एण्ड नेचर निदान, भोपाल द्वारा दो दिवसीय कार्यशाल सीहोर जैवविविधता एवं संरक्षण जागरूकता सीहोर जिले के स्कूल मे आयोजित किया गया। विशेषज्ञों द्वारा उक्त विषय की जानकारी स्कूली बच्चों एवं कालेज छात्र/छत्राओं को प्रदान की गई इस कार्यशाला मे 200 छात्र/छात्राओं ने भाग लिया।
- भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, भोपाल द्वारा खगोलीय रोबोटिक क्षेत्र मे एक दिवसीय वैज्ञानिक जागरूकता कार्यक्रम संस्थान के छात्र/छात्राओं के लिये आयोजित किया गया। जिसमें टेलिस्कोकप द्वारा खगोलीय विज्ञान की घटनाओं एवं आकाशीय दर्शन कराया गया। इस कार्यक्रम मे संस्थान के 697 छात्र/छात्राओं टीचिंग फेकल्टी एवं स्टाफ ने भाग लिया।
- सत्य समर्थ सोशल वेलफेयर सोसाइटी, भोपाल द्वारा तीन दिवसीय कार्यक्रम वाटर हार्वेस्टिंग एण्ड ग्राउण्ड वाटर रिचार्ज विषय पर जिला शाजापुर के तीन ग्रामों मे आयोजित किया गया। विशेषज्ञों द्वारा उक्तो जानकारी से ग्रामीणों जन सामान्या को अवगत कराया गया। इस कार्यक्रम मे सभी वर्ग के 248 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
- हर्षिता वेलफेयर सोसाइटी एण्ड एजुकेशन सोशल सोसाइटी समिति, भोपाल द्वारा दो दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम वर्षा जल संचयन जिला होशंगाबाद के ग्राम सोनतलाई विकास खंड इटारसी मे आयोजित किया उक्तं विषय पर विशेषज्ञों द्वारा आम जनता को जानकारी प्रदान कर जल संचयन की विधि बताई गई। इस कार्यक्रम मे 216 व्यक्तियों ने भाग लिया।
- सोशल वेलफेयर सोसाइटी, भोपाल द्वारा एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम जल का जीवन मे महत्व तथा जलसंरक्षण का विकास एवं वृक्षारोपण विषय पर न्यू हरिहर कान्वेंट हाईस्कूल फंदाकला भोपाल मे आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम मे उक्ता विषय की जानकारी एवं पेटिंग प्रतियोगिता एवं वृक्षारोपण का कार्यक्रम भी आयोजित किया। इस कार्यक्रम मे 100 प्रतिभागियों ने भाग लिया
- युसुफ इस्लामी एजुकेशन एण्ड् वेलफेयर सोसाइटी, भोपाल द्वारा 1 दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम विज्ञान और गणित का संबंध विषय पर भाषण विज्ञान और गणित के संबंध पर प्रश्नोरत्तरी तथा दैनिक जीवन मे उपयोग आने वाले वैज्ञानिक उपकरणों पर पोस्टर प्रतियोगिता का शासकीय कस्तूरबा कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय नार्थ टी टी नगर भोपाल मे आयोजित किया गया। विशेषज्ञों द्वारा उक्त विषय की जानकारी स्कूली बच्चों को प्रदान की गई। सभी वर्गो के 100 बच्चों ने इस कार्यक्रम मे भाग लिया।
- गौ रक्षा समिति, अमलाहा द्वारा तीन दिवसीय वैज्ञानिक कार्यशाला वाटर प्रोटेक्टिंग टेक्नीक विषय पर सीहोर जिले के तीन ग्रामों मे ग्रामीणों के लिये आयोजित की गई । विशेषज्ञों द्वारा उक्तज विषय की जानकारी से ग्रामीणों को अवगत कराया गया। जिसमें जल भागीदारी खेत का पानी खेत मे घर का पानी घर मे जल संरक्षण की तकनीक बताई गई। साथ पारम्परिक जल स्त्रोतों का पुनरूजीवनोकरण कैसे किया जाये सभी वर्ग के 165 प्रतियोगियों ने भाग लिया।
- अपूर्वा आकृति सामाजिक जन कल्यागण समिति, भोपाल द्वारा तीन दिवसीय वैज्ञानिक कार्यशाला विषय विज्ञान एवं समुदाय के लिये पत्रकारिता सोच पर होशंगाबाद जिले के विभिन्न स्थानों पर आयोजित की गई। जल संरक्षण के उपाय एवं स्वच्छता की जानकारी आम जनता को प्रदान की गई। सभी वर्ग के 200 प्रतिभागियों ने इस कार्यक्रम मे सम्मिलित हुये।
- न्यूटन एजुकेशन सोसाइटी, भोपाल द्वारा एक दिवसीय वैज्ञानिक कार्यशाला विषय रसायन का दैनिक जीवन मे उपयोग एवं जल प्रदूषण पर रायसेन जिले के मण्डीदीप औद्योगिक क्षेत्र मे आम जनता के लिये आयोजित की गई। विशेषज्ञों द्वारा आम जनता के लिए उक्त जानकारी प्रदान की गई। इस कार्यशाला मे सभी वर्ग के 225 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

- कनिष्का समाज कल्याण समिति, भोपाल द्वारा चार दिवसीय वैज्ञानिक जागरूकता कार्यक्रम विषय 'स्वच्छ विद्यालय, स्वच्ठ भारत' पर हरदा जिले के स्कूलों एवं स्थानीय आम जनता के लिये आयोजित किया गया। उक्त विषय की जानकारी प्रदान की गई। कार्यक्रम के अंतर्गत निबंध, प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, 80 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
- संवर्धन शिक्षा एवं समाज कल्याण समिति, भोपाल द्वारा दो दिवसीय वैज्ञानिक जागरूकता कार्यक्रम विषय मर्यादा अभियान, शौचालय निर्माण उपयोग एवं अनुप्रयोग ग्राम पोस्ट जासुंदी जिला बुरहानपुर में आयोजित किया गया। उक्त विषय की जानकारी से आम जनता को अवगत कराया गया। 250 प्रतिभागियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।
- भोजमंथन बेरोजगार उत्थान समिति, भोपाल द्वारा एक दिवसीय जल संरक्षण विषय पर वैज्ञानिक जागरूकता कार्यक्रम सिवनी जिले के लखनादौन ब्लाक के स्कूलों में आयोजित किया गया। विषेषज्ञों द्वारा उक्त जानकारी से आमजन एवं बच्चों को अवगत कराया गया।
- विद्यार्थी कल्याण न्यास, भोपाल द्वारा मां नर्मदा अध्ययन माला का आयोजन मध्यप्रदेश के 31 घाटों पर किया गया। इसमें नर्मदा नदी की बायो मानीटरिंग एवं नर्मदा को प्रदूषण से मुक्त करने हेतु प्रयास किये गये। नर्मदा के तट पर वृक्षारोपण एवं पानी के नमूने की जांच की गई। प्रगति प्रतिवेदन को परिषद की विशेषज्ञ समूह की बैठक दिनांक 27 जून 2017 के सम्मुख प्रस्तुतीकरण किया गया।
- विज्ञान भारती, मध्य भारत, भोपाल द्वारा "Combating Malnutrition through Ayurved Project" के अंतर्गत मध्यप्रदेश के रीवा जिले में कुपोषण के निर्मूलन के लिये कार्यक्रम किया गया। उक्त विषय पर रीवा जिले के विभिन्न स्थानों पर वैज्ञानिक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन कर आम जनता को उक्त जानकारी से अवगत कराया गया। साथ ही कुपोषित बच्चों एवं माताओं का सर्वेक्षण कर बचाव एवं रोकथाम के उपायों के बारे में आयुर्वेद डाक्टर द्वारा जानकारी प्रदान की गई। चार गांवों में 1127 परिवारों का सर्वे किया गया। परिषद की विशेषज्ञ समूह की बैठक दिनांक 27 जून 2017 के सम्मुख प्रगति प्रतिवेदन का प्रस्तुतीकरण किया गया।
- स्पंदन संस्थान, भोपाल द्वारा विज्ञान की बात जन जन के साथ विषय पर वैज्ञानिक जागरूकता हेतु चार कार्यशाला का आयोजन प्रदेश एवं देश की विभिन्न स्थानों पर किया गया। इस कार्यशालाओं में प्रदेश एवं देश की पत्रकारिता समुदाय ने भाग लिया। परियोजना का प्रगति प्रतिवेदन परिषद की विशेषज्ञ समूह की बैठक दिनांक 27 जून 2017 के सम्मुख प्रस्तुतीकरण किया गया।
- स्पाइस संस्थान, भोपाल द्वारा प्रदेश के छात्र / छात्राओं के लिये विषय विज्ञान पत्रकारिता पर आधारित दो दिवसीय चार कार्यशाला एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम उज्जैन, ग्वालियर, सागर एवं रीवा में आयोजित किया गया। उक्त कार्यशाला में 240 प्रतिभागियों ने भाग लिया। परियोजना का प्रगति प्रतिवेदन का परिषद की विशेषज्ञ समूह की बैठक दिनांक 27 जून 2017 के सम्मुख प्रस्तुतीकरण किया गया।
- मध्यप्रदेश क्रिश्यिन एसेम्बली, भोपाल द्वारा स्व्च्छता अपनाओ जीवन खुशहाल बनाओ स्वच्छ भारत मिशन से प्रेरितद् वैज्ञानिक जागरूकता अभियान विषय पर एक दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन ग्राम भैसदेही जिला बैतूल मे आम जनता के लिये किया गया। जिसमे नुक्कड़ नाटक संगोष्ठी एवं रैली के माध्ययम से आम जनता को उक्त विषय की जानकारी प्रदान की गई जिसमें सभी वर्ग के 200 से अधिक लोग उपस्थित हुये।
- विश्वास संस्था, भोपाल द्वारा दो दिवसीय वैज्ञानिक जागरूकता शिविर का आयोजन स्कूली बच्चों के बीच कुपोषण विषय पर तूमड़ा स्थित शासकीय हाईस्कूल एवं शासकीय हाईस्कूल पलासी करोद भोपाल मे आयोजित किया गया। विशेषज्ञों द्वारा उक्त विषय की जानकारी स्कूली बच्चों को प्रदान की गई। इसमें सभी वर्ग के 100 छात्र/छात्राओं ने भाग लिया।
- कामधेनु सेवा समिति, कोटरा, भोपाल द्वारा एक दिवसीय वैज्ञानिक जागरूकता कार्यक्रम जल बचाओं ग्राम बेरछा जिला शाजापुर में आमजनता के लिये आयोजित किया गया। विशेषज्ञों द्वारा उक्त विषय की जानकारी से आम जनता को अवगत कराया गया जिसमे सभी वर्ग के स्कूल 109 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

- दशमेश एजुकेशनल सोसाइटी, भोपाल द्वारा एक दिवसीय वैज्ञानिक कार्यक्रम जल परीक्षण तकनीक प्रदर्शन द्वारा शुद्ध/अशुद्ध जल की पहचान विषय पर ग्राम फराड़ जिला शाजापुर मे आयोजित किया गया। विशेषज्ञों द्वारा उक्त विषय की जानकारी से आम जनता को अवगत कराया गया जिसमें 153 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
- भोपाल, होशंगाबाद, छिन्दवाड़ा एवं रायसेन जिले के पन्द्रह स्कूलों मे वर्ल्ड स्पेस विक 2017 का आयोजन एन आर एस सी हैदराबाद के तत्वाधान मे ड्रांइग क्विज एवं स्पेस टैक्नोजलॉजी पर व्याख्यान माला का आयोजन किया गया जिसमे 9वीं एवं 10वीं 1000 हजार छात्र/छात्राओं ने भाग लिया। तदोपरांत राज्य स्तरीय क्विज प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 25 सितम्बर 2017 को मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी भोपाल मे किया गया जिसमें करीब 50 छात्र/छात्राओं एवं शिक्षक शामिल हुये सर्वश्रेष्ठ राज्य स्तरीय तीन ड्राइंग एवं तीन क्विज विजेता के नाम राष्ट्रीय स्तरीय प्रतियोगिता हेतु चयन कर दिनांक 8.9 अक्टूबर 2017 को राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केन्द्र इसरो हैदराबाद मे मध्यतप्रदेश से भाग लेने के लिये भेजा गया।
- एम्स, भोपाल के फॉरेंसिंक मेडिसिन और विष विज्ञान विभाग द्वारा तीसरा राष्टीय स्नातक प्रश्नोत्तर 'ऑटोप्सीक्विज फॉरेंस' का आयोजन किया गया। इसमें देश के 09 विभिन्न राज्यों गुजरात, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, बिहार, नई दिल्ली, छत्तीसगढ़, उडीसा, राजस्थान ओर मध्यप्रदेश से 24 विभिन्न मेडीकल कालेजो की क्विज और 44 टीमों की घोषणा के लिये भारी भागीदारी हुई। प्रत्येक टीम में 02 प्रतिभागियों और 88 छात्राओं ने इस प्रतियोगिताओं में भाग लिया। ज्यादातर टीमें भोपाल से बाहर की थी और रीवा की टीम को विजेता घोषित किया गया।

- नर्मदा जयंती पर दिनांक 24/11/2018 को प्रदेश के नर्मदा नदी के घाटों पर वैज्ञानिक कार्यक्रम आयोजित किय गये। परिषद् मे भी एक वैज्ञानिक कार्यशाला/परिचर्चा का आयोजन किया गया। जिसमें परिषद् के सभी कर्मचारी/ वैज्ञानिकों/अधिकारियों ने इस कार्यशाला परिचर्चा मे भाग लिया।
- पायनियर्स साइबर लॉ एजुकेशनल एंड वेलफेयर सोसाइटी, भोपाल द्वारा दो दिवसीय वैज्ञानिक जागरूकता कार्यशाला विषय (साइबर केयर) पर स्कूली बच्चों हेतु जवाहर लाल नेहरू कृषि महाविद्यालय, टीकमगढ तथा दूसरा माधवराव सप्रे शासकीय कालेज, पथरिया, दमोह जिले मे आयोजित की गई। विषय विशेषज्ञों द्वारा उक्त जानकारी से छात्र/छात्राओं को अवगत कराया गया। करीब 200 छात्रों ने भाग लिया।
- स्पार्क वेलफेयर सोसाइटी, भोपाल द्वारा अपरंपरागत उर्जा के स्त्रोतो के प्रति वैज्ञानिक जागरूकता तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन दो शासकीय एवं एक स्कूल जिला सीहोर मे किया गया। विशेषज्ञों द्वारा उक्त विषय की जानकारी स्कूली बच्चों को प्रदान की गई। 200 बच्चों ने इस कार्यशाला मे भाग लिया।
- जागृति जन कल्याण समिति, भोपाल द्वारा ई-वेस्ट मैंनेजमेंट विषय पर एक दिवसीय पॉच वैज्ञानिक कार्यशालाओं का आयोजन देवास जिले के विद्यालयों मे किया गया। विशेषज्ञों द्वारा ई-कचरा प्रबंधन की जानकारी स्कूली बच्चों को प्रदान की गई। 100 छात्र/छात्राओं ने उक्त कार्यक्रम मे भाग लिया।
- शासकीय विद्यालय, पुरैनाकला, बनखेडी, जिला होशंगाबाद मे औषधीय व फलदार पौधों का संश्लेषण क्रिया पर एक दिवसीय वैज्ञानिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उक्त विषय की जानकारी विशेषज्ञों द्वारा स्कूली बच्चों को दी गई। 300 छात्र/छात्राओं ने इस कार्यक्रम मे भागीदारी की।

3. उद्देश्य

- राज्य में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से जुड़े प्रयोगों को ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों एवं जनसामान्य तक पहुंचना।
- जनसामान्य में दैनिक जीवन से जुड़े वैज्ञानिक तथ्यों की समझ पैदा करना।

4. सहयोगी/सहभागी संस्थायें

- मध्यप्रदेश के सभी जिलों एवं दूरस्थ क्षेत्रों में विज्ञान लोकव्यापीकरण क्षेत्र में कार्यरत अशासकीय संस्थाएँ।

5. कार्यक्रम विवरण

- विभिन्न प्रस्तावों का परीक्षण परिषद् द्वारा निर्मित समितियों के माध्यम से किया जायेगाः-
  पांच लाख से अधिक के प्रस्ताव - कार्यकारी समिति समूह
  एक लाख से 5 लाख तक के प्रस्ताव - विशेषज्ञ समूह
  एक लाख से कम के प्रस्ताव - परिषद् कार्यदल
- कम-से-कम 35 प्रशिक्षण, जागरूकता एवं नवाचारी कार्यक्रम आयोजित करना।

6. समय सारिणी

निम्नानुसार कमेटियों की बैठक आयोजित की जायेगी :

- 1. कार्यकारी समिति समूह - 3 माह में
- 2. विशेषज्ञ समूह - 2 माह में
- 3. परिषद् कार्यदल की बैठक - 1 माह में

7. अपेक्षित परिणाम

प्रत्येक अशासकीय संस्थाओं के माध्यम से संबंधित क्षेत्र के विद्यार्थी एवं जनसामान्य लाभांवित हो सकेंगे।

5.8 विज्ञान उत्सव एवं विज्ञान मेलों का आयोजन

1. पृष्ठभूमि

प्राचीन समय से जनमानस में मेलों का अत्यन्त महत्व रहा है । स्थानीय स्तर पर वैचारिक, सांस्कृतिक एवं अनुभवों का आदान-प्रदान का यह सशक्त माध्यम है । विज्ञान मेलों के माध्यम से आमजनों विशेषकर ग्रामीणों के लिए विभिन्न क्षेत्रों में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का अनुप्रयोग से संबंधित अनेक तकनीकों को प्रदर्शित एवं प्रचारित किया जा सकता है जो उनके जीवन एवं व्यवसाय को सुगम, उन्नत एवं आर्थिक रूप से सुदृढ़ बना सकता है । संभाग, जिला एवं पंचायत स्तर पर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मेलों का आयोजन कर चिन्हित प्रौद्योगिकीयों का प्रदर्शन एवं उनके अनुप्रयोग की जानकारी दिया जाना लाभकारी होगा ।

माननीय मुखय मंत्री म.प्र.शासन के निर्देशानुसार विज्ञान के लोकव्यापीकरण हेतु की एक विशिष्ट योजना तैयार की गई है। इसके अन्तर्गत प्रदेश के शोध छात्रों, शिल्पियों, कारीगरों को उच्च कोटि के वैज्ञानिक विशेषज्ञों से संपर्क स्थापित करने उनकी योग्यता एवं क्षमता मे वृद्धि करने एवं उन्हें विकास के क्षेत्र मे सृदृढ़ बनाने के उद्देश्य से विज्ञान मेलों का आयोजन प्रारंभ किया गया है।

2. समीक्षा/उपलब्धियॉ (2017-18)

वर्ष 2017-18 मे दो विज्ञान मेले राजगढ़ एवं बालाघाट मे आयोजन किया गया। प्रत्येक मेले मे करीब 25000 छात्र/छात्राओं एवं आम जनता ने भाग लिया।

3. उद्देश्य

योजना का मुख्य उद्देश्य आम जन को विज्ञान से जोड़ना है, प्रदेश भर के कारीगर, शिल्पी (बढ़ई, आदिशिल्प, माटीकला, बांस इत्यादि) आदि की तकनीक को गांवो से शहर तक लाना आम जन को उनके कोशल से परिचित कराना हैं। साथ ही कारीगरों एवं शिल्पियों को देश, प्रदेश एवं विदेश के खयातिप्राप्त वैज्ञानिको से रुबरु कराना एवं उनके काम का कोशल उन्नयन करना।

4. सहयोगी/सहभागी संस्थायें

- म.प्र. हस्तशिल्प विकास निगम।
- म.प्र. फिशरिस डेव्लपमेंट कॉरपोरेशन।
- म.प्र. पर्यटन विकास निगम
- विश्वविद्यालय
- महाविद्यालय, इंजीनियरिंग विद्यालय
- प्रायवेट महाविद्यालय
- शासन के अन्य विभाग
- गैर शासकीय संस्थायें, आदि

5. कार्यक्रम विवरण

- प्रदेश स्तर पर प्रतिवर्ष एक वृहद् विज्ञान उत्सव का आयोजन किया जायेगा जिसमें प्रदेश के शैक्षणिक, औद्योगिक, व्यवसायिक संस्थानों के अतिरिक्त शिल्पी कारीगर भी विज्ञान के क्षेत्र में अर्जित उपलब्धियों को प्रदर्शित करेंगे । प्रदेश के बाहर हो रहे विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति को प्रदर्शित करने हेतु अन्य बाह्य संस्थाओं को भी आमंत्रित किया जायेगा ।

- मेले का आयोजन शासकीय /अशासकीय एवं स्वैच्छिक संगठनों के सहयोग से किया जाना प्रस्तावित है। इस योजना का क्रियान्वयन प्रदेश के सभी संभागों एवं जिला मुखयालयों पर किया जावेगा ।

6. समय सारिणी

आगामी वर्ष मे 2 विज्ञान मेलों का आयोजन विभिन्न जिलों मे किया जायेगा।

क्र.	समयाविधी	भौतिक लक्ष्य
1	अप्रेल,मई,जून	मेलों के लिए जिलों का चयन
2	जुलाई, अगस्त, सितम्बर	जिलों में लिये स्थान का चयन, स्थानीय नेटवर्किंग टेन्डर इत्यादि
3	अक्टूबर, नवम्बर, दिसम्बर	2 मेलों का आयोजन
4	जनवरी, फरवरी, मार्च	शेष बचे हुये मेलों का आयोजन

7. अपेक्षित परिणाम

- परिषद् द्वारा प्रायोजित परियोजनाओं मे तैयार किये गये उत्पादों उपकरणों एवं नवाचारी का प्रभावी प्रदर्शन के लिये प्लेटफार्म प्रदान किया जा सकेगा। कारीगरों, शिल्पियो का कौशल उन्नयन एवं उत्पादों के विक्रय हेतु बाजार की उपलब्धता सुनिश्चित हो सकेगी।
- प्रदेश के शोध छात्रों, शिल्पियों, कारीगरों को उच्च कोटि के वैज्ञानिक विशेषज्ञों से संपर्क स्थापित करने उनकी योग्यता एवं क्षमता मे वृद्धि करने एवं उन्हें विकास के क्षेत्र मे सृदृढ़ बनाया जा सकेगा।

5.9 मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् की उपलब्धियों का प्रदर्शनी के माध्यम से प्रदर्शन

1. पृष्ठभूमि

प्रदेश के सामाजिक एवं आर्थिक विकास हेतु मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् वर्ष 1981-82 से प्रयासरत है। इस हेतु परिषद् में सूदूर संवेदन उपयोग केन्द्र, विज्ञान लोकव्यापीकरण कक्ष, विज्ञान प्रोत्साहन कक्ष, अनुसंधान एवं विकासीय गतिविधियां, पेटेंट सूचना केन्द्र, जैव प्रौघोगिकी उपयोगिता केन्द्र, उज्जैन जिले प्लेनेटरियम, विज्ञान पार्क एवं वैघ शाला की स्थापना आदि प्रभाग कार्यरत है और प्रतिवर्ष उपलब्धियां अर्जित कर रहे है। इन उपलब्धियों को न केवल प्रदेश के बल्कि दूसरे प्रदेश के विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं आमजन तक पहुंचाने के लिए विभिन्न सम्मेलनों, सेमिनारों, कांग्रेसो में विज्ञान प्रदर्शनी आयोजित करने की योजना है।

2. समीक्षा/उपलब्धियॉ (2017-2018)

भोपाल विज्ञान मेले 2017-18 मे परिषद् की उपलब्धियों की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

3. उद्देश्य

प्रदेश के साथ अन्य प्रदेशों के विद्यार्थियों को परिषद् की उपलब्धियों से अवगत कराना।

4. लक्ष्य समूह

विद्यार्थी, शिक्षकगण, शोधार्थी, वैज्ञानिक, आमजन इत्यादि

5. सहयोगी/सहभागी संस्थायें

---

6. कार्यक्रम विवरण

समय- समय पर आयोजित विज्ञान सम्मेलनों, उत्सवों, मेलों, कांग्रेसों मे विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया जावेगा।

7. समय सारिणी

वर्ष भर प्रदर्शनी का आयोजन किया जायेगा।

8. अपेक्षित परिणाम

प्रदेश के साथ अन्य प्रदेशों के विद्यार्थी परिषद् की उपलब्धियों से अवगत होंगे।

5.10 विज्ञान प्रसार एवं जनसम्पर्क

1. पृष्ठभूमि

वैदिक युग से लेकर वर्तमान तक विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में भारत का उल्लेखनीय योगदान रहा है। भारतीय इतिहास में गुप्तकाल विज्ञान के स्वर्ण युग के रूप में याद किया जाता है। गणित, खगोल विज्ञान, धातु विज्ञान, जीव विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान में भारत का वैज्ञानिक योगदान अन्य राष्ट्रांे के लिए उदाहरण बना हुआ है।

इतिहास का पुनरावलोकन करने से पता चलता है कि मध्यप्रदेश में विज्ञान की समृद्ध परम्परा रही है। विक्रमादित्य, राजाभोज, अहिल्याबाई उन शासकों में शामिल है। जिन्होंने विज्ञान को बढ़ावा देने में अत्यधिक रूचि दिखाई। इसकी झलक उज्जैन, इंदौर, भोजपुर, धार, महेश्वर और अन्य स्थानों पर देखने को मिलती है। भौगोलिक दृष्टि से देश के केन्द्र में स्थित मध्यप्रदेश के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि

है। यहां की आबादी का एक हिस्सा आदिवासी है। यह प्रदेश प्राकृतिक संसाधनों तथा जैव-विविधता की दृष्टि से भी प्रमुख है।

स्वाधीनता के बाद प्रदेश के सामाजिक और आर्थिक विकास पर ध्यान केन्द्रित किया गया और इसका आधार विज्ञान और प्रौद्योगिकी को बनाया गया। प्रदेश में विज्ञान की औपचारिक शिक्षा के लिए महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय स्थापित किए गए है। वर्तमान में मध्यप्रदेश को उन राज्यों की बिरादरी में स्थान मिल चुका है, जहां आधुनिक विज्ञान को आधार बनाकर विकास के पथ पर बढ़ने का प्रयास किया गया है। विज्ञान के उन्नत विषयों जैसे सूचना प्रौद्योगिकी, नैनो प्रौद्योगिकी, कृत्रिम मेधा, जैव प्रौद्योगिकी आदि में शोध पर भी ध्यान केन्द्रित किया गया है।

2. समीक्षा/उपलब्धियॉ (2017-18)

33 वीं मध्यप्रदेश युवा वैज्ञानिक कांग्रेस का 15-16 मार्च 2018 के दौरान आयोजन किया गया। 28 फरवरी को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया गया। 09-12 फरवरी के दौरान सातवां भोपाल विज्ञान मेला आयोजित किया गया। 08 जनवरी को मध्यप्रदेश विज्ञान प्रतिभा सम्मान समारोह और 22-23 सितंबर को कारीगर विज्ञान कांग्रेस आयोजित की गई। ग्यारहवीं विज्ञान मंथन यात्रा 05-15 अक्टूबर के दौरान सम्पन्न हुई। टेक्नोलॉजी विजन: 2035 .मध्यप्रदेश कार्यशाला का आयोजन 29 अगस्त को किया गया। इन सभी कार्यक्रमों का समाचारपत्रों में कवरेज किया गया।

उज्जैन तारामंडल और खगोलीय वेधशाला, डोंगला में सितम्बर और नवम्बर में आयोजित बैठकों का स्थानीय समाचारपत्रों में कवरेज किया गया।

09-12 फरवरी 2018 के दौरान आयोजित सातवें भोपाल विज्ञान मेले के संदर्भ में सात फरवरी को प्रेस कांफ्रेंस आयोजित की गई। आंचलिक विज्ञान केंद्र में यूनाइटिंग इंडिया सरदार पटेल पर केंद्रित डिजिटल प्रदर्शनी के संदर्भ में 17 नवंबर 2017 को प्रेस कांफ्रेंस आयोजित की गई। गोंडी बोली में तैयार रेडियो विज्ञान धारावाहिक के प्रचार-प्रसार के लिए 21 जुलाई 2017 को प्रेस कांफ्रेंस आयोजित की गई।

परिषद् के जनसंपर्क कक्ष द्वारा मध्यप्रदेश माध्यम के जरिये विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की योजनाओं/ परियोजनाओं से संबंधित विज्ञापनों का प्रकाशन कराया गया।

रेडियो पर एफएम चैनलों के माध्यम से उज्जैन तारामंडल का जिंगल्स द्वारा प्रचार-प्रसार किया गया। समीक्ष्य अवधि के दौरान परिषद् की फोन डायरेक्टरी का प्रकाशन किया गया।

3. उद्देश्य

- प्रदेशवासियों को वैज्ञानिक रूप से साक्षर बनाने हेतु समुचित प्रयास करना।
- वैज्ञानिक सोच एवं जागरूकता विकसित करना।
- विज्ञान की प्रगति को आम आदमी से जोड़ना।
- क्षेत्रीय/स्थानीय भाषा में विज्ञान का प्रचार-प्रसार।
- विज्ञान संचार के माध्यम से आम जनजीवन को समृद्ध, स्वस्थ एवं सार्थक बनाना।

4. सहयोगी/सहभागी संस्थायें

- केन्द्र सरकार के विभिन्न विभाग
- राज्य शासन के संबंधित विभाग
- मध्यप्रदेश माध्यम
- जनसंपर्क संचालनालय
- स्वयंसेवी संस्थाएं

- राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद्, नई दिल्ली
- विज्ञान प्रसार, भारत सरकार, नई दिल्ली

5. कार्यक्रम विवरण

वैज्ञानिक गतिविधियों के प्रचार-प्रसार हेतु निम्नलिखित कार्य सम्मिलित किए गए हैं :

(क) आन्तरिक गतिविधियां

- परिषद् की गतिविधियों पर त्रैमासिक न्यूजलेटर का प्रकाशन।
- परिषद् की विभिन्न योजनाओं/गतिविधियों का ब्रोशर तैयार करना।
- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से संबंधित गतिविधियों एवं कार्यक्रमों को प्रिंट एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया के द्वारा प्रदेश में प्रचार एवं प्रसार करना।
- विभिन्न गतिविधियों एवं विज्ञान संबंधी फीचर लिखने के लिए वैज्ञानिकों को प्रेरित करना एवं समाचार पत्रों में प्रकाशन करना।

(ख) बाह्य गतिविधियां

- परिषद् में सम्पन्न होने वाले सम्मेलनों/कार्यक्रमों का विज्ञापन द्वारा प्रचार-प्रसार।
- लोकप्रिय विज्ञान को प्रदेश के जन-जन तक पहुंचाना।
- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से संबंधित नई उन्नत तकनीक एवं शोध को प्रदेश के महाविद्यालयों/विश्वविद्यालयों तथा शासन के संबंधित विभागों मंे विकास हेतु प्रचारित करना।
- राज्य शासन के उपक्रमों से विज्ञान प्रसार के संदर्भ में जनसंपर्क।
- केन्द्र शासन के उपक्रमों से विज्ञान प्रसार के संदर्भ में जनसंपर्क।
- विविध ललित कलाओं से जुड़े व्यक्तियों से संपर्क स्थापित कर परिषद् की वैज्ञानिक गतिविधियों को कलात्मकता का पुट देना।
- वैज्ञानिक तथा तकनीकी संस्थाओं से विज्ञान की प्रचार-प्रसार सामग्री के आदान-प्रदान हेतु समन्वय स्थापित करना।
- वैज्ञानिक गतिविधियों के कवरेज हेतु प्रमुख समाचार पत्रों के संवाददाता को सुविधा उपलब्ध कराना।

6. समय सारिणी

अप्रैल 2018 से मार्च 2019 तक कार्य जारी रहेगा।

7. अपेक्षित परिणाम

- परिषद् की गतिविधियों एवं कार्यक्रमों के प्रचार प्रसार से नई दिशा एवं विकास को गति मिलेगी।
- विज्ञान प्रसार एवं जनसंपर्क से विज्ञान के क्षेत्र में प्रदेश का समुचित विकास होगा।

5.11 पुस्तकालय- सह-प्रलेखन केन्द्र

1. **पृष्ठभूमि**

म.प्र विज्ञानंएव प्रोद्योगिकी परिषद् भोपाल द्वारा वर्ष 1983-84 में पुस्तकालय सह प्रलेखन केन्द्र की स्थापना राज्य के विद्यार्थी/शिक्षको/शोधकर्ताओं को विज्ञानं विषयों पर उत्क्रिस्ट एवं अधतन जानकारी उपलब्ध कराने के उदेश्य से की गयी है

2. **समीक्षा/ उपलब्धिया**

- विज्ञानं विषयों एवं अन्य विषयों की पुस्तको का क्रय किया गया
- आनलाईन विस्तृत लिटरेचर सर्च पुस्तकालय मेंउपलब्ध तथा जर्नल के डेटाबेस को म.प्र विज्ञानं एव प्रोद्योगिकी परिषद् की वेबसाइट पर वेब ओपेक द्वारा उपलब्ध कराया गया है

- एन आई सी के e-granthalya consortia के अंतर्गत परिषद् के पुस्तकलय को भी शामिल किया गया है इसके अंतर्गत 3235 सदस्य पुस्तकालय (National/International) के संग्रह के सर्च की सुविधा पाठको के लिए उपलब्ध है के e-granthalya consortia के अंतर्गत Computer Science के 224 Access Journals उपलब्ध है ISRS online journal (Journal of Indian Society of Remote Sensing) accessible है
- पुस्तकालिन सेवाये जेसे - पुस्तको का आदन प्रदान, पटको को संधर्ब सेवाए, शोध पत्रों की छायाप्रति प्रद्य, ई जर्नल्स एक्सेस, इन्टरनेट सुविधा एवम् सेवाए उपलब्ध करायी गयी
- देश के महत्वपूर्ण पुस्तकालय नेटवर्क की सदस्यता लेकर पाठको को संबधित पुस्तकालयों की पाठय सामग्रियों /जर्नल्स की सर्च सुविधा उपलब्ध करायी गयी है इस हेतु डेवेलोपिंग लायब्रेरी नेटवर्क (डेल्नेट) नई दिल्ली की सदस्यता निरंतर है
- पुस्तकालय में विभिन्न विषयों जेसे Agricultre, GIS,Dot.Net Technologies, Databases, Hacking, Linux, MSWindows, Networking, Server, Remotesensing, Programming, Religion आदि पर E-Book उपयोग हेतु उपलब्ध है
- विज्ञानं मंथन यात्रा के प्रतिभागी विद्यार्थीयो एवम् शिक्षको को विज्ञानं से संबधित रोचक एवम् ज्ञानवर्धक 5117 पुस्तके, 573 सीडी – मेंहु इंडिया, 407 रसायनिक गतिविधि किट का वितरण किया गया तथा चार प्रकार की पत्रिकाओ (Science Reporter, VigyanPragti, Sroteतथा Science India) का एक वर्ष हेतु सब्सक्रिप्शन किया गया
- परिषद् के प्रकाशनों का वितरण (3019) एवम् (06) किया गया

3. **उद्देश्य**

- पाठको को विज्ञानं एव प्रोद्योगिकी से संबधित उत्कृष्ट एवम् नवीनतम पाठय सामग्री उपलब्ध करना
- पाठको को लिटरेचर सर्च के लिए गाइड करना
- आनलाइन पुस्तकों / जर्नल्स उपलब्ध कराना
- महत्वपूर्ण अन्य पुस्तकालयों के नेटवर्क के अंतर्गत पाठको को अन्य पुस्तकालयों के उपयोग की सुविधा उपलब्ध कराना
- पाठको को फोटोकॉपी सुविधा उपलब्ध कराना

4. **सहयोगी संस्था**

.....

5. कार्यक्रम विवरण

पुस्तकों का क्रय, जर्नल्स का सब्सक्रिप्शन, न्यूज़पपेर/मेग्ज़िन क्रय किया जायेगा

6. समय सरणी :

प्रथम त्रेमास	दितीय त्रेमास	त्रितय त्रेमास	चतुर्थ त्रेमास
-सर्वर कंप्यूटर आदि का रखरखाव -जर्नल्स का सब्सक्रिप्शन -डेल्नेट की सदस्यता	- विज्ञानं एवं अन्य विषयों की पुस्तको का क्रय - निरन्तर	- निरन्तर	- निरन्तर

9. आपेक्षित परिणाम:-

- पुस्तकालय द्वारा प्रदाय की जाने वाली पुस्तकालीन सेवाओ से पाठको, शोधकर्ताओ को उनके विषय से सम्बंधित अधतन तथा प्रमाणिक जानकारी प्राप्त होगी ।
- पुस्तकालय का आटोमेशन किये जाने से पाठको को शीग्रता एवम् सुगमता से उनकी वांछित जानकारी उपलब्ध हो सकेगी ।
- पुस्तकालय को देश के महत्वपूर्ण लायब्रेरी नेटवर्क से संबध किये जाने से पाठको को महत्वपूर्ण पुस्तकालयो में उपलब्ध पाठ्य सामग्रिय उपलब्ध होंगी।

A-6 मिशन एक्सीलेंस ऑफ एम.पी. ह्यूमन रिर्सोस

विज्ञान मंथन यात्रा

1. पृष्ठभूमि

म.प्र. के युवाओं में उत्कृष्टता, नवाचार एवं उद्यम को प्रोत्साहित करने के लिए 11 वीं पंचवर्षीय योजना में एक विशेष योजना प्रारम्भ की गई है। माननीय मुख्यमंत्री जी ने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की बजट मांगों पर विधानसभा में चर्चा का समापन करते हुए वर्ष 2007 में यह घोषणा की थी कि उत्कृष्टता मिशन का शुभारंभ किया जायेगा तथा 11 वीं पंचवर्षीय योजना अवधि में 10 लाख विद्यार्थियों एवं युवाओं को इस कार्यक्रम से लाभान्वित किया जायेगा। वर्ष 2018-19 में योजना जारी हैं।

2. समीक्षा/उपलब्धियॉ 2017-18

- विज्ञान मंथन यात्रा वर्ष 2017-18 में राज्य के 51 जिलों के कुल 6741 विद्यार्थियों ने ऑनलाइन आवेदन किया जिसके आधार पर उनका चयन किया गया।
- कक्षा 8 वीं से 12 वीं तक के विद्यार्थियों ने आवेदन प्रपत्र ऑनलाइन भरे, जिसमें 11 वीं व 12 वीं के विज्ञान समूह के विद्यार्थी शामिल किये गये।
- विद्यार्थियों का चयन वर्ग वार व क्षेत्रवार किया गया व सभी वर्गो में न्यूनतम प्रतिशत 75 प्रतिशत रखा गया। म.प्र. बोर्ड के 75 प्रतिशत विद्यार्थियों व सी.बी.एस.ई. व अन्य बोर्ड के 25 प्रतिशत विद्यार्थियों को शामिल किया गया।
- कुल 625 विद्यार्थियों का चयन किया गया, जिसमें कुल 525 विद्यार्थियों व 48 चयनित शिक्षकों ने विज्ञान मंथन यात्रा में भाग लिया।
- विद्यार्थियों व शिक्षकों का परिषद में पंजीयन उपरान्त कक्षावार 5 दिशाओं में - चेन्नई , हैदराबाद, हैदराबाद, पुणे, देहरादून एवं अहमदाबाद की प्रयोगशालाओं एवं संस्थानों के भ्रमण एवं अवलोकन हेतु परिषद में पंजीयन उपरान्त 5 दिशाओं 05 अक्टूबर से 15 अक्टूबर 2017 को भोपाल से प्रस्थान किया।
- पंजीयन में प्रत्येक को ट्रेवल किट, पुस्तकें व अन्य सामग्रियाँ प्रदाय की गई। गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले विद्यार्थियों को टी.ए. परिषद द्वारा प्रदाय किया गया।
- वर्ष 2017-18 के 525 विद्यार्थियों की 15 अक्टूबर 2017 को आंकलन परीक्षा आयोजित की गई व अन्य निर्धारित माप दण्डों के आधार पर 100 विद्यार्थियों का चयन छात्रवृति के लिये किया गया, जिनको माह अप्रेल 2018 से छात्रवृति आगामी पॉच वर्ष प्रदाय की जावेगी।
- वर्ष 2016-17 के चयनित 100 विद्यार्थियों को छात्रवृति प्रदाय करने हेतु दस्तावेंज प्राप्त किये। माह अप्रैल 2017 से सितम्बर 2017 तक की छात्रवृति माह नवम्बर 2017 में प्रदान की गई
- वर्ष 2010-11, 2011-12, 2013-14 एवं 2015-16 के चयनित विद्यार्थियों को छात्रवृति माह नवम्बर 2017 में प्रदान की गई। वर्ष 2017-18 की छात्रवृति माह अक्टूबर नवम्बर 2018 में प्रदाय की जायेगी। जिसकी पूर्व प्रक्रिया विद्यालय आरम्भ उपरान्त अप्रैल 2018 से की गई।

3. उद्देश्य

केन्द्र सरकार और म.प्र.शासन के साथ ही अन्य संस्थाओं की योजनाओं एवं प्राथमिकताओं को दृष्टि में रखतें हुये उत्कृटता मिशन कार्यक्रम विकसित किया गया है। इसके अन्तर्गत प्रतिवर्ष 2.00 लाख विद्याथियों एवं युवाओं में उत्कृष्टता, नवाचार एवं उद्यमिता को प्रोत्साहित करने का लक्ष्य है।

4. सहयोगी/सहभागी संस्थाएं

- स्कूली विद्यार्थियों के लिये राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान, जबलपुर, स्कूल शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन एवं अन्य संस्थायें जैसे एन.सी.ई.आर.टी. सीबीएसई ।
- महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के लिये उत्कृष्टता शिक्षा संस्थान, भोपाल राज्य के प्रतिष्ठित अभियांत्रिकी महाविद्यालय एवं पॉलीटेकनिक आदि।
- कारीगर एवं कृषक के लिये हस्तशिल्प विकास निगम, म.प्र. शासन ग्रामीण एवं पंचायत विभाग, म.प्र. शासन तथा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान आदि ।

5. कार्ययोजना का विवरण

- म.प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् द्वारा उपरोक्त विषय में कार्ययोजना का मुख्य विवरण इस प्रकार है
- उत्कृष्टता मिशन हेतु परिषद में मानव संसाधन समूह के अंतर्गत एक विशेष प्रकोष्ठ 'उत्कृष्टता मिशन प्रकोष्ठ' कार्य कर रहा है। इस प्रकोष्ठ का कार्य सभी संबंधित एजेन्सियों से सम्पर्क, संवाद एवं समन्वय स्थापित करते हुए विस्तृत योजनाएं बनाना तथा इसका समयबद्ध कार्यान्वयन सुनिश्चित करना है। ।
- उत्कृष्टता मिशन के महत्व एवं 10 लाख युवाओं को लाभान्वित करने का लक्ष्य दृष्टि में रखते हुए सक्षम एजेन्सियों अथवा प्रतिष्ठित विशेषज्ञों को इस मिशन से जोड़ा जायेगा।
- म.प्र. के तकनीकी संस्थानों में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में नवाचार शोध एवं अनवेषण को प्रोत्साहन दिया जायेगा।
- राज्य के सभी जिलों के विद्यालयों से 2.00 लाख विद्यार्थियों में से विज्ञान उत्कृष्टता को बढ़ावा देते हुये चयनित 100 मेधावी विद्यार्थियों को वर्ष 2017-18 में विशेष छात्रवृति विज्ञान मंथन यात्रा के तहत चयन किया । वर्ष 2018-19 के लिये विज्ञान मंथन यात्रा में 125 विद्यार्थियों के पॉच समूह (कुल 625 विद्यार्थी) में विभक्त कर देश के पॉच विभिन्न अंचलों का दौरा करने हेतु चयन किया जायेगा।
- राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले म.प्र. के विद्यार्थियों को विशेष प्रोत्साहन तथा अच्छा प्रदर्शन करने वालो को विशेष पुरस्कार व छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। यह स्कूली विद्यार्थियों एवं महाविद्यालयों के विद्यार्थियों पर लागू है।
- ग्रामीण क्षेत्रों के किसानों स्वसहायता समूह की महिलाओं एवं कारीगरों में दक्षता में प्रोत्साहन तथा प्रमाणीकरण/मान्यता प्रदान करने हेतु 'सृजन यात्रा' का आयोजन किया जायेगा। ।
- अनुसंधान यात्रा के तहत विद्यार्थियों को अनुशंधान एवं शोध पत्र हेतु प्रोत्साहन राशि दी जाती है।

6. समय-सारिणी

प्रथम तिमाही	द्वितीय तिमाही	तृतीय तिमाही	चतुर्थ तिमाही
अगली यात्रा 2018-19 हेतु कार्ययोजना की बैठक विद्यार्थियों की ज़िावन मंथन यात्रा 2018-19 का आयोजन माह अक्टूबर नवम्बर 2018 में करने हेतु इसकी प्रांरभिक तैयारियां माह अप्रेल से आरम्भ की जायेगी।	विज्ञान मंथन यात्र 2018-19 हेतु विज्ञापन, टेन्डर स्टेशनरी, किताबें, प्रिन्टींग, प्रलेखन की प्रक्रिया । 625 विद्यार्थियों एवं शिक्षकों का चयन माह जुलाई से सितम्बर 2018 तक पूर्ण किया जायेगा।	विज्ञान मंथन यात्र 2018-19 का शुभारंभ किया जायेगा। माह अक्टूबर नवम्बर में विद्यार्थियों के समूह का भोपाल से पॉच दिशाओं में प्रस्थान करेंगे। विद्यार्थियो की छात्रवृति हेतु आकलन परीक्षा एवं विज्ञान मंथन यात्रा का	विज्ञान मंथन यात्रा 2018-19 के विद्यार्थियों का छात्रवृति हेतु परीक्षा फल घोषित कर परिषद बेव-साइट में डालना। छात्रवृति हेतु नई प्रीरिस्प्ट को वेब-साइट में डालना

पूर्व के चयनित विद्यार्थियों से वर्ष 2017-18 की छात्रवृति हेतु दस्तावेंज प्राप्त किये जयेगे। विद्यार्थियों को छात्रवृति जून 2018 मे प्रदान की जायेगी।	सहभागी संस्थाओं से समन्वय व संपर्क तथा विभिन्न प्रयोगशालाओं से समन्वय का कार्य जुलाई से सितम्बर 2018 तक पूर्ण किया जायेगा।	समापन यात्रा की फोटो एवं रिर्पोट एकत्रित करना एवं देयको का समायोजन करना। वर्ष 2017-18 के चयनित विद्यार्थियों को माह अप्रैल 2018 से सितम्बर 2018 तक की छात्रवृति माह नवम्बर 2018 में प्रदान की जायेगी जिसकी पूर्व प्रक्रिया विद्यालय आरम्भ उपरान्त अप्रैल 2018 से किया गया।	छात्रवृति हेतु 2018-19 के विद्यार्थियों को सूचनार्थ की प्रक्रिया । विज्ञान मंथन यात्रा 2018-19 के देयको का समायोजन करना।

7. अपेक्षित परिणाम

- उत्कृष्टता मिशन के अंतर्गत् उपरोक्त तीनों समूहों में करीब 2.00 लाख विद्यार्थियों एवं युवाओं में उत्कृष्टता का विकास होगा।
- विद्यार्थियों का बौद्धिक एवं मानसिक विकास होगा।
- संबंधित तीनों कार्यक्रमों में विद्यार्थियों एवं युवाओं के बीच उत्कृष्टता के लिये प्रेरणा का संचार होगा
- प्रदेश के विद्यार्थियों को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कार्यक्रमों के संबंध में जागरूकता का विकास होगा।
- प्रदेश के मानव संसाधन राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर की प्रतिस्पर्धाओं एवं परीक्षा हेतु तैयार किया जा सकेगा तथा उनके चयन की संभावनायें बढ़ेगी
- प्रदेश के कारीगर शिल्पियों, किसानों एवं महिलाओं में नवाचार का प्रादुर्भाव होगा एवं उद्यमिता का विकास होगा।
- राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर की गुणवत्ता अर्जित कर उनके उत्पादों को बाजार में अच्छी कीमत मिल सकेगी।
- महाविद्यालयीन युवाओं में प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी एवं राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विज्ञान से जुड़े संस्थानों में प्रदेश का प्रतिनिधित्व बढ़ेगा।

नवीन योजना

युवाओं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने हेतु देश की उत्कृष्ट वैज्ञानिक संस्थानों का भ्रमण

पृष्ठभूमि

परिषद द्वारा विद्यालयीन छात्रों के लिए वर्ष 2007 से विज्ञान मंथन यात्रा निरन्तर है। माननीय मुख्यमंत्री जी की घोषणा क्रमांक B3782 दिनांक 10.09.2017 द्वारा प्रदेश के युवाओं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने हेतु देश के विभिन्न उत्कृष्ट विज्ञान संस्थानों जैसे ISRO, BARC, HAL, AIIMS, IIT एवं IIM आदि का भ्रमण कराया जाना है। यह नवीन योजना वित्तीय वर्ष 2018-19 में प्रारंभ की जायेगी।

उद्देश्य

प्रदेश के महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की देश के उत्कृष्ट वैज्ञानिक संस्थानों का भ्रमण करा कर उन्नत तकनीक/अनुसंधान/नवाचार से परिचित कराना एवं ख्यातिप्राप्त वैज्ञानिकों से संवाद स्थापित कर वैज्ञानिक सोच को विकसित करना ।

सहयोगी/सहभागी संस्थाएं

- BARC, मुम्बई
- HAL, बैगुलुरू, हैदराबाद, लखनउ
- IIT, दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, कोकाता, खड्गपुर, कानपुर
- AIIMS, नई दिल्ली
- IIM, अहमदाबाद, बैगुलुरू, कोलकाता

लक्ष्य

महाविद्यालयीन स्नातक स्तर के अभियांत्रिकी, चिकित्सा, विज्ञान विषय में चयनित 375 विद्यार्थी

कार्ययोजना

शासन के आरक्षण नियमों के अनुसार प्रदेश के विज्ञान एवं अभियांत्रिकी महाविद्यालयों से आनलाईन आवेदन प्राप्त कर मेरिट (75 प्रतिशत से अधिक प्राप्तांक वाले) के आधार पर 375 विद्यार्थियों का चयन किया जावेगा। तत्पश्चात देश के विभिन्न उत्कृष्ट संस्थानों का भ्रमण कराया जावेगा।

अपेक्षित परिणाम

उत्कृष्ट राष्ट्रीय संस्थानों के भ्रमण एवं ख्यातिप्राप्त वैज्ञानिक से संवाद उपरांत उनमें वैज्ञानिक सोच एवं जागरूकता बढेगी, जिससे भविष्य में उनके द्वारा उच्च स्तर के शोध को बढावा मिलेगा।

A-7 पेटेंट सूचना केन्द्र

1. पृष्ठभूमि

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी किसी देश की प्रगति एवं आधुनिकीकरण के लिए एक बहुमूल्य हथियार है। किसी राष्ट्र की आर्थिक उन्नति उसकी बौद्धिक सम्पदा को संरक्षित करने का सूचकांक है। नई आर्थिक नीति में भारत भी बहुव्यापार प्रणाली में प्रवेद्गा कर चुका है। भारत को भी बौद्धिक सम्पदा के अधिकारों की रक्षा हेतु कठोर प्रणाली की आवश्यकता है, जिससे वह प्रतियोगी बाजार में अपने आप को जीवित रख सके। नवीं पंचवर्षीय योजना में प्रौद्योगिकी सूचना पूर्वानुमान एवं मूल्यांकन परिषद (टाइफेक) के द्वारा आर्थिक एवं तकनीकी सहयोग के साथ म. प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् में पेटेन्ट सूचना केन्द्र की स्थापना वर्ष 1997 में कर एक नई दिशा में कदम उठाया गया है।

2. समीक्षा/उपलब्धियॉ (2017-18)

- आई आई आई टी डी एम, जबलपुर में दिनांक 20 जनवरी, 2017 को ''बौद्धिक सम्पदा अधिकार'' विषय पर दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया ।
- टैगोर पब्लिक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, सिवनी मालवा में दिनांक 24 जनवरी, 2017 को ''बौद्धिक सम्पदा अधिकार'' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- नमामी देवी नर्मदे कार्यक्रम के अंतर्गत दिनांक 2 से 17 जनवरी, 2017 तक प्रदेश के नर्मदा क्षेत्र के सभी 16 जिलों (होशंगाबाद, हरदा, खण्डवा, खरगौन, बडवानी, अलीराजपुर, धार, देवास, सीहोर, रायसेन, नरसिंहपुर, जलबपुर, सिवनी, मण्डला, डिण्डौरी, अनूपपुर) में जिला कलेक्ट्रेट/जिला पंचायत कार्यालय में संबंधित अधिकारियों एवं कर्मचारियों आदि को बौद्धिक सम्पदा अधिकार पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया।
- प्रदेश के शाजापुर, ग्वालियर, रायसेन, बैतूल, जबलपुर एवं भोपाल जिलों के शैक्षणिक संस्थानों में ''बौद्धिक सम्पदा अधिकार'' विषय पर एक-एक दिवसीय 12 कार्यशालाओं का आयोजन का आयोजन किया गया।
- भोपाल के दो इंजीनियरिंग संस्थानों ऑरियण्टल इन्स्टीटयूट के शिक्षक एवं एल एन सी टी कालेज के विद्यार्थी द्वारा वर्ष 2016 में आवेदित डिजाइन स्वीकृत हुए।
- 32 वीं युवा वैज्ञानिक कांग्रेस एवं सहयोगी कार्यक्रम के अंतर्गत परिषद में दिनांक 07 मार्च, 2017 को ''बौद्धिक सम्पदा अधिकार एवं परम्पारिक ज्ञान'' विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में प्रदेश के विश्वविद्यालयों, शैक्षणिक संस्थानों के 30 शिक्षकों ने भाग लिया।
- परिषद् एवं मित्तल इन्स्टीटयूट ऑफ टेक्नोलॉजी, भोपाल के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 26 अप्रैल, 2017 को ''विश्व बौद्धिक सम्पदा दिवस'' के उपलक्ष्य में "बौद्धिक सम्पदा अधिकार जागरूकता कार्यशाला" का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में 150 से अधिक विद्यार्थी, 40 शिक्षक आदि सम्मिलित हुए ।
- सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम विकासीय संस्थान, इन्दौर द्वारा भोपाल में दिनांक 23 जून, 2017 को ''बौद्धिक सम्पदा अधिकार'' पर एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
- म.प्र. शासन के आदेशानुसार दिनांक 2 जुलाई, 2017 को नर्मदा सेवा मिशन के अंतर्गत आवंटित सीहोर जिले के बुदनी क्षेत्र में महावृक्षारोपण कार्यक्रम के अंतर्गत 1100 से अधिक वृक्ष लगाये गये।
- परिषद् द्वारा स्वीकृत एवं आई टी एम विश्वविद्यालय, ग्वालियर द्वारा दिनांक 05 जुलाई, 2017 को "बौद्धिक सम्पदा अधिकार जागरूकता कार्यशाला" का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में 150 से अधिक विद्यार्थी, 20 शिक्षक आदि सम्मिलित हुए ।
- परिषद् द्वारा स्वीकृत एवं शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, खजरी जिला छिन्दवाड़ा में दिनांक 03 अगस्त, 2017 को "बौद्धिक सम्पदा अधिकार जागरूकता कार्यशाला" का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में 150 से अधिक विद्यार्थी, 15 से अधिक शिक्षक आदि सम्मिलित हुए।

- शासकीय हाई स्कूल डांडीवाड़ा विकास खण्ड केसला जिला होशंगाबाद द्वारा दिनांक 04 सितम्बर, 2017 को "बौद्धिक सम्पदा अधिकार जागरूकता कार्यशाला" का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में 110 से अधिक विद्यार्थी, 05 शिक्षक आदि सम्मिलित हुए।
- सी आई आई, यूरोपीयन यूनीयन बौद्धिक सम्पदा कार्यालय एवं भारतीय पेटेंट कार्यालय, भारत सरकार के संयुक्त तत्वाधन में दिनांक 09 सितम्बर, 2017 को भोपाल में Specialized Seminar on Madrid Protocol: Best Practices and Strategies for Brand Protection in India & Abroad विषय पर सेमीनार का आयोजन हुआ ।
- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा दिनांक 5 एवं 6 अक्टूबर, 2017 को भुवनेश्वर, ओडिशा में पेटेंट सूचना केन्द्रों के नीति निर्धारण संबंधित पीआईसी विशेषज्ञ समूह की बैठक आयोजित की गई, परिषद द्वारा पिछलें पांच वर्षों की गतिविधियों के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की एवं भविष्य की कार्ययोजनाओं के बारे में जानकारी प्रदान की।
- संत हिरदाराम कन्या महाविद्यालय, संत हिरदाराम नगर, भोपाल में दिनांक 28 अक्टूबर, 2017 को "बौद्धिक सम्पदा अधिकार" विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। इस जागरूकता कार्यक्रम में लगभग 80 से छात्राओं एवं 10 से अधिक प्राध्यापक, सहायक प्राध्यापक आदि सम्मिलित हुए ।
- इण्डो यूरोपीयन चेम्बर ऑफ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्री, भोपाल द्वारा दिनांक 17 नवम्बर, 2017 को एक दिवसीय ''IPR in ICT with focus on Start ups and MSMEs'' विषय पर सेमीनार का आयोजित किया गया। सेमीनार में पेटेंट सूचना केन्द्र, मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद्, भोपाल के प्रभारी एवं वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक द्वारा ''ट्रेडमार्क'' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।
- ''बौद्धिक सम्पदा अधिकार'' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन दिनांक 15 जनवरी, 2018 को शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, दामजीपुरा जिला बैतूल में हुआ। उक्त कार्यशाला में 100 से अधिक विद्यार्थी सम्मिलित हुए।
- मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् एवं पीएचडी चेम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री, भोपाल (क्षेत्रीय कार्यालय) के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 25 जनवरी, 2018 को ''बौद्धिक सम्पदा अधिकार प्रबंध'' विषय पर एक दिवसीय सेमीनार का आयोजन किया गया। उक्त सेमीनार में परिषद के पेटेंट सूचना केन्द्र के प्रभारी द्वारा बौद्धिक सम्पदा अधिकार पर व्याखयान प्रस्तुत किया।
- टी.आई.टी., भोपाल द्वारा दिनांक 03 फरवरी, 2018 को "बौद्धिक सम्पदा अधिकार जगारूकता कार्यशाला" का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में 100 से अधिक विद्यार्थी, शिक्षक आदि सम्मिलित हुए । पेटेंट कार्यालय, मुम्बई से डॉ अजय ठाकुर, अस्सिटेंट कन्ट्रोलर ऑफ पेटेंट मुख्य व्यक्ता के रूप में उपस्थित हुए।
- श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय, इन्दौर द्वारा दिनांक 28 मार्च, 2018 को "बौद्धिक सम्पदा अधिकार जगरूकता राष्ट्रीय सेमीनार" का आयोजन किया गया। इस सेमीनार में 184 से अधिक विद्यार्थी, शिक्षक आदि सम्मिलित हुए ।
- पेटेंट सूचना केन्द्र के तकनीकी सहयोग एवं मागदर्शन से 58 बौद्धिक सम्पदा अधिकार (कॉपीराइट, ट्रेडमार्क, डिजाइन सहित) आविष्कारकर्ताओं को उनके आविष्कारों को भारतीय पेटेंट कार्यालय, मुम्बई से पेटेंट एवं कॉपीराइट कार्यालय, नई दिल्ली में आवश्यक कार्यवाही (आवेदन) करने में तकनीकी सहयोग प्रदान किया।
- पेटेंट सूचना केन्द्र के तकनीकी सहयोग एवं मार्गदर्शन से 9 प्रोवीजनल पेटेंट, 02 कम्पलीट पेटेंट, 01 अर्ली (शीघ्र) पब्लिकेशन एवं 01 रिक्वेस्ट फॉर एक्जामिनेशन भारतीय पेटेंट कार्यालय मुम्बई में आवेदनों की फाइलिंग कराई गई।

3. उद्देश्य

- बौद्धिक सम्पदा अधिकारों का प्रचार प्रसार करना एवं विद्गवविद्यालयों, शोध संस्थानों, उद्योगों एवं शासकीय विभागों को मॉग के आधार पर पेटेंट सर्च की सुविधा उपलब्ध करवाना।
- पेटेंट सूचनाओं का परीक्षण एवं अनुसंधान एवं विकास से जुड़ी संस्थाओं को नयी योजनाओं के निर्धारण में सहायता देना।
- बौद्धिक सम्पदा की नीतियों पर शोध विकास अध्ययन आयोजित करना।
- अन्वेषकों को उनके कार्य का पेटेंट दिलवानें हेतु मार्गदर्शन करना।
- प्रदेश में उपलब्ध बौद्धिक सम्पदा की सुरक्षा के उपाय करना।
- विभिन्न प्रचार माध्यमों के द्वारा पेटेन्ट के अधिकारों के प्रति अधिकाधिक लोगों को जागरूक करना।
- पेटेन्ट सूचना केन्द्र से संबंधित जानकारी परिषद की वेबसाइट पर उपलब्ध कराना।
- प्रदेश के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के लोगों को नये अन्वेषण करने हेतु प्रोत्साहन देना। उनके अन्वेषणों को पेटेन्ट कराने के लिये तकनीकी सहयोग प्रदान करना।
- प्रदेश में उपलब्ध संसाधनों पर आधारित अन्वेषण कार्य प्रोत्साहित करना तथा समाज के हित में महत्वपूर्ण अन्वेषकों का पेटेन्ट कराने के लिये आवश्यक तकनीकी सहायता प्रदान करना।
- प्रदेश के हित में किये जा रहे अन्वेषणों हेतु आर्थिक रूप से कमजोर प्रतिभाओं को उनका अन्वेषण कार्य पूरा करने तथा उसका पेटेन्ट हासिल करने हेतु उन्हें शासन से आर्थिक सहायता प्रदान करने हेतु उनकी अनुशांसा करना।
- प्रदेश के उत्कृष्ट पेटेन्ट अन्वेषणों को पुरस्कार प्रदान करने हेतु राज्य शासन से अनुरोध करना।
- प्रदेश से अधिकाधिक संखया में अन्वेषकों एवं वैज्ञानिकों को पेटेन्ट फाइल करने हेतु प्रयास करना।
- प्रदेश में स्थित विभिन्न शैक्षणिक, औद्योगिक एवं शोध संस्थानों (राज्य शासन एवं केन्द्र शासन) के साथ समन्वय स्थापित करना।
- पेटेन्ट से संबंधित पुस्तके, जर्नल्स, समाचार एवं राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पेटेन्ट डेटाबेस पेटेन्ट सूचना केन्द्र में उपलब्ध कराना, ताकि अन्वेषकों को पेटेन्ट डाटा की अद्यतन जानकारी प्राप्त हो सके।

4. सहयोगी/सहभागी संस्थाएँ

- प्रौद्योगिकी सूचना पूर्वानुमान एवं मूल्यांकन परिषद् (टाइफेक), विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली
- पेटेन्ट कार्यालय, मुम्बई
- नेशनल रिसर्च डेवलपमेंट कारपोरेशन, भारत सरकार, नई दिल्ली
- भारत के अन्य राज्यों के पेटेन्ट सूचना केन्द्र
- सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग, भारत सरकार, नई दिल्ली
- सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग-विकासीय संस्थान, इन्दौर
- मध्यप्रदेश के समस्त विद्यालय,
- मध्यप्रदेश के समस्त विश्वविद्यालय,
- उज्जैन अभियांत्रिकी महाविद्यालय, उज्जैन;
- जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर
- राष्ट्रीय विधि संस्थान विश्वविद्यालय (एनएलआईयू), भोपाल
- अनुसंधान एवं विकास से संबंधित संस्थाएं
- गैर सरकारी संगठन एवं जन सामान्य
- भारतीय उद्योग संघ, इन्दौर एवं भोपाल
- लघु उद्योग निगम, भोपाल

- सेडमेप, भोपाल
- लघु वनोपज प्रसंस्करण एवं अनुसंधान केन्द्र, भोपाल
- राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर

5. लक्ष्य

- बौद्धिक संपदा के अधिकार पर कार्यशाला - संख्या 10
- बौद्धिक संपदा के अधिकार पर जागरूकता कार्यक्रम - संख्या 13
- प्रदेश के विभिन्न विद्यालयों एवं महाविद्यालयों एवं स्वयं सेवी संस्थाओं द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में व्याख्यान एवं प्रदर्शनी - 08
- विभिन्न संचार माध्यमों के द्वारा बौद्धिक सम्पदा अधिकारों का प्रदेश में प्रचार-प्रसार करना।
- महिला वैज्ञानिकों को प्रोत्साहन प्रदान करना।
- बौद्धिक सम्पदा अधिकार के क्षेत्र में रोजगार की संभावनाओं की जानकारी प्रदान करना।
- बौद्धिक सम्पदा अधिकार के फाइलिंग के लिए विशेषज्ञों से तकनीकी एवं कानूनी सलाह लेना एवं संबंधित को प्रदान कराना।
- प्रदेश के आविष्कारकर्ताओं/अन्वेषणकर्ताओं को बौद्धिक सम्पदा अधिकार के अंतर्गत पेटेंट, कॉपीराइट, भौगोलिक संकेतक, ट्रेडमार्क, डिजाइन आदि का सर्वेक्षण कर उनको फाईल करने में तकनीकी सहयोग प्रदान करना।
- ऑनलाइन राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय डेटाबेस की सदस्यता प्राप्त करना तथा उससे संबंधितों को लाभान्वित कराना।
- प्रदेश के विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों, औद्योगिक संस्थाओं द्वारा बौद्धिक सम्पदा अधिकार के अंतर्गत पेटेंट, कॉपीराइट, भौगोलिक संकेतक, ट्रेडमार्क, डिजाइन आदि को फाईल करने में तकनीकी सहयोग प्रदान करना।
- प्रदेश के ग्रामीण, सुदूर अंचल, अनुसूचित जाति/जनजाति/महिला बहुल क्षेत्रों व शहरी क्षेत्रों के अन्वेष्णकर्ताओं को बौद्धिक सम्पदा अधिकार लेने हेतु प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन प्रदान कर उनकी सहायता करना।
- हिन्दी विषय में बौद्धिक सम्पदा अधिकार पर पाठ्य सामग्री तैयार कर प्रदेश के अधिकतम संबंधित लोगों तक पहुंचाना। प्रदेश के अधिक से अधिक लोगों व संस्थाओं द्वारा विभिन्न बौद्धिक सम्पदा अधिकारों को आवेदन कराकर उनके पंजीकरण हेतु कार्य करना।
- कक्ष में आधारभूत सुविधाएँ जैसे फर्नीचर, कम्प्यूटर, प्रिन्टर, फोटोकॉपीयर, एलसीडी, कैमरा आदि को क्रय कर उनकी स्थापना करना।

6. कार्यक्रम विवरण

- बौद्धिक सम्पदा से संबंधित राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय पेटेंट डाटा सर्च करना।
- बौद्धिक संपदा के अधिकार पर कार्यशाला एवं कार्यक्रम आयोजित करना।
- बौद्धिक सम्पदा अधिकार पर व्याखयान आयोजित करना।
- प्रदेश के विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में प्रदर्शनी आयोजित करना।
- विभिन्न प्रचार माध्यमों के द्वारा पेटेन्ट के अधिकारों के प्रति अधिकाधिक लोगों को जागरूक करना।
- प्रदेश के सुदूर क्षेत्रों, आदिवासी एवं पिछड़े क्षेत्रों तथा महिला आबादी बहुल क्षेत्रों में पेटेन्ट से संबंधित कार्यक्रम आयोजित करना।
- युवा विद्यार्थियों तथा ग्रामीण कौद्गाल को प्रोत्साहित करने के लिये तकनीकी एवं वित्तीय सहायता प्रदान करना।
- म.प्र. के भौगोलिक संकेतकों एवं अन्य बौद्धिक सम्पदाओं का चिन्हन तथा संरक्षण कराना।

7. समय-सारिणी

कार्यक्रम गतिविधियाँ	प्रथम तिमाही	द्वितीय तिमाही	तृतीय तिमाही	चतुर्थ तिमाही
कार्यशालाएं	02	03	03	02
जागरूकता कार्यक्रम	01	05	05	02
व्याखयान	01	03	02	02
आई पी आर जागरूकता हेतु परामर्श	25	30	35	25
आई पी आर आवेदन के पंजीयन हेतु तकनीकी सहायता प्रदान करना	05	08	12	07

8. अपेक्षित परिणाम

- बौद्धिक संपदा अधिकार पर 10 कार्यशालायें एवं 15 जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया जायेगा।
- राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पेटेन्ट आंकड़ा खोज हेतु (लगभग 20 व्यक्तियों को) सुविधा प्रदान की जावेगी।
- राज्य के शोधकर्ताओं, वैज्ञानिकों एवं युवा प्रतिभाओं को नई आविष्कार करने हेतु एवं आविष्कार का पेटेन्ट कराने हेतु (लगभग 60 व्यक्तियों को) प्रोत्साहित किया जावेगा।
- युवाओं एवं छात्रों को पेटेन्ट के क्षेत्र में (जैसे पेटेन्ट एजेन्ट, पेटेन्ट एटर्नी एवं पेटेन्ट सलाहकार आदि) अपना केरियर बनाने हेतु (लगभग 30 व्यक्तियों को) प्रोत्साहित किया जावेगा।
- प्रदेश की छात्राओं एवं महिलाओं को पीएफसी, टाइफेक, नई दिल्ली द्वारा जारी महिला वैज्ञानिक योजना के अंतर्गत अपना भविष्य बनाने हेतु (लगभग 30 महिलाओं को) प्रोत्साहित किया जावेगा।
- प्रदेश में उपलब्ध ज्ञान का प्रलेखीकरण हेतु प्रोत्साहन एवं कार्य।
- बौद्धिक संपदा पर प्रदेद्गा की अद्यतन जानकारी को वेबसाइट पर प्रस्तुत किया जावेगा।
- केन्द्र की गतिविधियों पर ब्रोशर का प्रकाशन किया जावेगा।
- पेटेन्ट से संबंधित पुस्तके, जर्नल्स, संदर्भ ग्रन्थों का क्रय किया जाना तथा उन्हें विषय से संबंधित लोगों को पठन तथा परामर्द्गा हेतु उपलब्ध कराना।

A–8 उज्जैन जिले में प्लेनेटेरियम, वेधशाला एवं विज्ञान पार्क की स्थापना (डोंगला) एव जबलपुर एवं उज्जैन में उप-क्षेत्रिय विज्ञान केन्द्र की स्थापना

1. पृष्ठभूमि

एक लंबे समय से प्रदेश के विद्यार्थियों, शिक्षाविदों, शोधार्थियों तथा जनसामान्य द्वारा तारामंडल एवं खगोलीय वेधशाला की आवश्यकता महसूस की जा रही थी। इसको ध्यान में रखते हुये मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् द्वारा उज्जैन में प्लेनेटोरियम एवं डोंगला में वेधशाला स्थापित की गई हैं।

परिषद् द्वारा विज्ञान में शोध एवं प्रचार-प्रसार की अन्य गतिविधियों के साथ प्राचीन वेधशाला एवं उज्जैन/डोंगला पर विशेष ध्यान केन्द्रित किया गया हैं। उज्जैन वेधशाला का निर्माण सन् 1719 में जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंह द्वारा किया गया था। महाराजा सवाई जयसिंह द्वारा चार अन्य वेधशालाओं का निर्माण दिल्ली, जयपुर, काशी एवं मथुरा में भी किया गया था। उज्जैन/डोंगला में कर्क रेखा एवं याम्योत्तर रेखा का कटाव बिन्दु होने की वजह से खगोल शास्त्र में इस स्थान का विशिष्ट वैज्ञानिक महत्व है। वेधशाला में स्थापित शंकु यंत्र, नाड़ी, वलय यंत्र, इत्यादि के द्वारा दिन, समय, ग्रह, नक्षत्र आदि का अध्ययन किया जाता है। इस प्राचीन वेधशाला में उपरोक्त यंत्रो के अलावा आधुनिक रुप देने हेतु टेलिस्कोप तथा आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराने की दिशा में परिषद् द्वारा विचार-विमर्श किया गया है। डोंगला/उज्जैन के समीप एक छोटा सा गांव है, जिसका महत्व काल गणना की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसे ध्यान में रखकर परिषद् द्वार ग्राम डोंगला में खगोलीय वेधशाला की स्थापना की गई है।

2. समीक्षा/उपलब्धियॉ (2017-18)

- 3-डी प्रोजेक्शन थिएटर के मापदण्ड का निर्धारण कर इ-टेण्डर किया गया।
- खगोलीय शोध कार्य को प्रोत्साहित किया गया।
- खगोलीय घटना से संबंधित जागरूकता कार्यक्रम एवं प्रचार-प्रसार कार्यक्रम आयोजित किये गये।
- तारामंडल, वेधशाला एवं आडिटोरियम के शेष कार्यो को प्रगति पर।
- 3 डी प्रोजेक्शन थिएटर के निर्माण हेतु 3 डी प्रोजेक्शन थिएटर के टेण्डर का प्रकाशन किया जा चुका है।
- डोंगला में आडिटोरियम के भवन के आंतरिक अधोसंरचना का कार्य पूर्ण करना एवं डोंगला परिसर का विकास कार्य पूर्ण प्रगति पर।
- तारामण्डल परिसर मे लेण्डस्केपिंग का कार्य प्रगति पर है।
- तारामण्डल के लिए नवीन फिल्मों का क्रय किया गया।

जबलपुर में उप क्षेत्रीय विज्ञान केन्द्र की स्थापना करने का कार्य।

- जबलपुर में उप-क्षेत्रिय विज्ञान केन्द्र की स्थापना हेतु भेडाघाट में 3 हेक्टेयर भूमि आवंटन का कार्य पूर्ण ।
- उप-क्षेत्रिय विज्ञान केन्द्र की स्थापना हेतु आवंटित भुमि के एक मीटर कन्टूर सर्वे का कार्य पूर्ण कर जानकारी एन.सी.एस.एम. कोलकाता भेजी गई।
- भूमि पर निर्मित होने वाले भवन का साइट प्लान, लोकेशन प्लान, भवन की ड्राइंग एवं डिजाइंगि इत्यिादि की जानकारी एन.सी.एस.एम. कोलकाता से अपेक्षित है।

3. उद्देश्य

तारामंडल -

खगोल विज्ञान के जटिल सिद्धांत तथा ब्रम्हाण्ड के गूढ़ रहस्यों को जन सामान्य तक पहुंचाना। ब्रम्हाण्ड में घटित होने वाली प्राकृतिक घटनाओं की जानकारी प्रदान करना। खगोल विज्ञान के माध्यम से जन सामान्य को समाज में फैली भ्रांतियां/अंधविश्वास को दूर करने का प्रयास करना।

खगोलीय वेधशाला -

खगोलविदों तथा विश्वविद्यालय/महाविद्यालय के शोध विद्यार्थियों को अनुसंधान सुविधा उपलब्ध कराना।

4. सहयोगी/सहभागी संस्थायें

खगोलीय वैधशाला की स्थापना से प्रदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों, खगोल विज्ञान के क्षेत्र में विद्यार्थियों को शोध कार्य करने के अवसर प्राप्त होंगे। इस क्षेत्र में कार्यरत राष्ट्रीय संस्थान जैसे नेहरू साईंस सेंटर, मुंबई, आर्यभट्ट खगोलीय वैद्यशाला, नैनीताल, राष्ट्रीय खगोलीय संस्थान, बैगलोर, नेशनल काउंसिल ऑफ साइंस म्यूजियम, कोलकाता आदि वेधशाला/प्लेनेटोरियम के सहभागी होंगे।

5. कार्यक्रम विवरण

- खगोलीय शोध कार्य को प्रोत्साहित किया जायेगा।
- खगोलीय विज्ञान से संबंधित प्रशिक्षण आयोजित करना।
- खगोलीय घटना से संबंधित जागरूकता कार्यक्रम एवं प्रचार-प्रसार कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे।
- खगोलीय ज्ञान से संबंधित अंग्रेजी फिल्म को हिन्दी में बनाया (डब) जायेगा।
- नेटवर्किंग एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बाईलेटरल कार्यक्रम आरंभ किया जायेगा।
- तारामंडल, वेधशाला एवं आडिटोरियम के शेष कार्यो को एवं पूर्ण किया जायेगा।
- 3 डी प्रोजेक्शन थिएटर के निर्माण का कार्य किया जावेगा।
- डोंगला में आडिटोरियम के भवन के आंतरिक अधेसंरचना का कार्य पूर्ण करना एवं डोंगला परिसर का विकास कार्य पूर्ण करना।
- डोंगला में आडिटोरियम की आंतरिक साज.सज्जा का कार्य पूर्ण किया जावेगा।
- डोंगला परिसर में बाहरी विद्युतिकरण , रोड़ एवं मेन गेट का कार्य पूर्ण किया जावेगा।
- वराहमिहिर खगोलीय वेधशाला, परिसर ग्राम डोंगला, तहसील महिदपुर, जिला उज्जैन में होस्टल एवं रहवासी आवास का निर्माण।
- तारामण्डल परिसर मे, लेण्डस्केपिंग का कार्य पूर्ण करना है।
- तारामण्डल में आंतरिक विज्ञान प्रादर्श स्थापित करना।
- तारामण्डल के लिए नवीन फिल्मो का प्रदर्शन करना।
- तारामण्डल परिसर उज्जैन मे उप क्षेत्रिय विज्ञान केन्द्र की स्थापना।

जबलपुर में उप क्षेत्रिय विज्ञान केन्द्र की स्थापना करने का कार्य।

- भूमि पर र्निमित होने वाले भवन का साइट प्लान, लोकेशन प्लान, भवन की ड्राइंग एवं डिजाइनिंग इत्यिादि की जानकारी एन.सी.एस.एम., कोलकाता से आपेक्षित है।
- एन.सी.एस.एम., कोलकाता से आपेक्षित जानकारी प्राप्त होने के उपरान्त भेडाघाट में आवंटित 3 हेक्टेयर भूमि के भूमि उपयोग परिवर्तन (उपांतरण) का कार्य किया जावेगा।
- जबलपुर में उप क्षेत्रिय विज्ञान केन्द्र की स्थापना हेतु भेडाघाट में आवंटित 3 हेक्टेयर भूमि पर भूमि पूजन का कार्य किया जावेगा।

6. समय-सारिणी

प्रस्तावित सभी कार्यक्रम वर्ष 2018-19 में सम्पन्न करना।

7. अपेक्षित परिणाम

खगोलीय विज्ञान के प्रचार-प्रसार एवं शोध कार्य को प्रोत्साहित करने हेतु उज्जैन जिले में खगोलीय वेधशाला एवं प्रदेश के आधुनिक तारामंडल जनमानस के लिये उपलब्ध हो सकेगा। इस सुविधा के क्रियान्वयन से प्रदेश के लाखों विद्यार्थियों एवं जनसमुदाय को लाभान्वित होगी। विश्वविद्यालयीन तथा महाविद्यालीयन स्तर के विद्यार्थियों को खगोल विज्ञान अनुसंधान हेतु सुविधा प्राप्त हो सकेगी। जनसमुदाय में विज्ञान के प्रति उत्पन्न जिज्ञासा के निराकरण में सहायता मिलेगी एवं समाज से अंधविश्वास रूपी कुरीतियों को दूर किया जा सकेगा।

A-9 ग्रामीण प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग केन्द्र

1. पृष्ठभूमि

इस केन्द्र का मूलभूत उद्देश्य ग्रामीण नवाचारी मस्तिष्कों एवं उनके कार्यो की पहचान, संरक्षण तथा प्रोत्साहन होना, जिनका वैज्ञानिक तरीके से समाज हितों में उपयोग किया जायेगा। इसके साथ ही यह केन्द्र दीर्घ परम्पराओं एवं कार्यो में मूल्यवर्धन के उद्देश्यो की पूर्ति हेतु परम्परागत एवं प्राचीन प्रौद्योगिकी एवं कार्यो को आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान आधार के साथ तालमेल का प्रयास करेगा। केन्द्र में सहभागिता के जरिये कार्य पर जोर दिया जाएगा।

2. उपलब्धियाँ (2017-18)

- परिषद् के ओबेदुल्लागंज स्थित ग्रामीण प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग केंद्र में सी एफ टी आइ आगरा के तकनीकी सहयोग एवं उन्नत मशीनों की सहायता से चर्म पादुका निर्माण पर 21 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 1 से 21 मई 2017 तक किया गया। कार्यक्रम में जबलपुर एवं रायसेन जिले के कुल 30 चर्म शिल्पियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण दौरान शल्पियों ने विभिन्न प्रकार की चर्म पादुकाओं का निर्माण करना सीखा तथा आगरा स्थित छोटे-बडे चर्म उद्योगों का भ्रमण भी किया।
- म.प्र.विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् एवं म.प्र.राज्य बांस मिश्न के संयुक्त तत्वाधान में प्रदेश् के असंगठित बांस शिल्पयों के कौश्ल उन्नयन हेतु बैतूल, अनुपपूर एवं मण्डला जिलों में प्रथम चरण बांस शिल्पी प्रतिभा खोज 3 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन जुलाई एवं अगस्त माह में किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य उपरोक्त जिलों से प्रतिभा के आधार पर बांस शिल्पियों का चयन कर कार्यक्रम के द्वितीय चरण में उन्हें परिषद् के रूटेक केन्द्र ओबेदुल्लागंज स्थित बांस शिल्प आधारित कार्यशाला में उन्नत प्रशिक्षण प्रदान करना था। उपरोक्त प्रथम चरण कार्यशालाओं में लगभग 100 बांस शिल्पियों ने प्रतिभागिता की जिनमें से 60 कुशल कारीगरों का चयन किया गया।
- म.प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् भोपाल परिसर में दिनांक 22 एवं 23 सितम्बर 2017 को म.प्र.कारीगर विज्ञान कांग्रेस 2017 का आयोजन किया गया। कार्यक्रम मुख्यतः 4 विधाओं बांस षिल्प, चर्म शिल्प, लाख शिल्प एवं माटी शिल्प पर आधारित था। कार्यक्रम में 4 विधाओं के लगभग 160 शिल्पियों ने प्रतिभागिता की तथा 14 विषय विशेषज्ञों ने कारीगरों को उनके शिल्प से संबधित उचित मार्गदर्शन आयोजित तकनीकी सत्र दौरान प्रदान किया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य असंगठित क्षेत्र में कार्यरत् कारीगरों को उनके शिल्प से जुड़ी बुनियादी जानकारी प्रदेश स्तर पर कार्यरत् शिल्प विशेषज्ञों के माध्यम से प्रदान करना है। जिससे शिल्पियों को उनके शिल्प संबधित कार्यो हेतु के उन्नयन हेतु नवीन दिशा मिल सके।
- म.प्र.विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् एवं म.प्र.राज्य बांस मिशन के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित प्रथम चरण प्रशिक्षण कार्यशालाओं में चयनित कारीगरों को परिषद् के ग्रामीण प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग केन्द्र, ओबेदुल्लागंज में बांस शिल्प आधारित उत्पाद डिजाइन एवं निर्माण विषय पर दिनांक 30.11.2017 से 09.12.2017 तक 10 दिवसीय उन्नत प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें प्रदेश के कुल 23 बांस शिल्पियों ने प्रतिभागिता की प्रशिक्षण दौरान समस्त परपंरागत कारीगरों ने बांस आधारित उन्नत उत्पादों की डिजाइन एवं निर्माण की विभिन्न तकनीकों पर प्रशिक्षण प्राप्त किया।
- प्रदेश एवं राष्टीय स्तर पर विभिन्न शिल्प संबंधित प्रदर्शनियों में रूटेक केन्द्र से जुड़े विभिन्न शिल्प संबधित कारीगरों को प्रतिभागिता हेतु भेजा गया जिसका मुख्य उद्देश्य कारीगरों को उनके शिल्प उत्पादों हेतु उचित बाजार उपलब्ध कराना है। आयोजनों में मुख्यतः तृतीय विश्व वेद सम्मेलन एवं परिषद् द्वारा आयोजित विज्ञान मेले जो कि राजगढ, भोपाल एवं बालाघाट जिलों में

आयोजित किये गये कार्यक्रमों में चयनित शिल्पियों ने अपने शिल्प उत्पादों का प्रदर्शन एवं विक्रय किया।

- म.प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् भोपाल एवं केन्द्रीय पादुका प्रशिक्षण संस्थान, आगरा के संयुक्त तत्वाधान में प्रदेश के युवा चर्म शिल्पियों हेतु चर्म पादुका डिजाइन एवं निर्माण पर परिषद् के रूटेक केन्द्र ओबेदुल्लागंज में दिनांक 26.03.2018 से 2 माह का प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है। जिसके अंतर्गत प्रदेश के 20 युवा शिल्पियों को चर्म पादुका की विभिन्न डिजाईनो तथा उनके उद्यमिता विकास एवं निर्माण पर प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है।

3. उददेश्य

प्रदेश के दूरस्थ ग्रामीण अंचलों से आने वाले प्रशिक्षणार्थी परिषद् द्वारा प्रदत्त आधुनिक वर्कशाप सुविधा का लाभ उठावेंगे। प्रशिक्षण दौरान उनके ठहरने का प्रबंध भी परिसर में ही सुनिश्चित हो सकेगा।

4. सहयोगी/सहभागी संस्थाऐं

- ❖ केन्दीय पादुका प्रशिक्षण संस्थान आगरा।
- ❖ म; प्र; राज्य बांस मिशन भोपाल।
- ❖ केन्दीय कांच और सिरेमिक अनुसंधान संस्थान, नरोडा, अहमदाबाद।
- ❖ प्रगत पदार्थ तथा प्रक्रम अनुसंधान संस्थान (AMPRI). भोपाल।

5. प्रस्तावित कार्यक्रम

आरटीएसी के उद्देशो को प्राप्त करने के लिये निम्न्लिखित कार्य योजना प्रस्तावित है।

- **विकासात्मक मानकों के स्टॉक-टेकिंग हेतु ग्राम स्तर पर व्यापक सर्वेक्षण**

स्थानीय एवं क्षेत्रीय लोगों की वर्तमान सामाजिक-आर्थिक स्थिति के आधार पर ग्रामों/जिलों की प्राथमिकता निर्धारित की जायेगी एवं विश्ष रूप से ग्रामीण प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में इनका समाधान विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के उपयोग से किया जायेगा। प्रदेश के एससी/एसटी एवं वंचितों को प्राथमिकता दी जायेगी। मेक्रो एवं माइक्रो स्तर पर विकासात्मक योजना हेतु उपलब्ध संसाधनों का सर्वेक्षण अनिवार्य रूप से आवश्यक है। ग्राम स्तर पर वर्तमान संसाधनों के स्टॉक हेतु प्राकृतिक संसाधन क्षेत्र का सर्वेक्षण, जिसमें जियोलॉजी, जियोमारफोलॉजी, भूजल, सतही जल, वन क्षेत्र, भू उपयोग एवं मृदा, डेमोग्राफिक सेक्टर, जिसमें स्थिति एवं सम्मिलित है, विस्तृत सर्वेक्षण किया जायेगा। इसी प्रकार कृषि आर्थिक क्षेत्र यथा - फसल, सिंचाई, सामाजिक आर्थिक क्षेत्र यथा - आय पेयजल, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता तथा अधोसंरचना क्षेत्र जैसे संचार, परिवहन, विद्युत आदि का भी विस्तृत सर्वेक्षण किया जायेगा। इससे समस्याग्रस्त क्षेत्रों के निर्धारण तथा हाथ में ली जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता प्रदान करने में सहायता मिलेगी।

- **जल एवं ऊर्जा संरक्षण एवं सतत समाधान की खोज**

ऊर्जा की आवश्यकताओं एवं उपलब्धता के आंकलन हेतु ग्रामों का विस्तारपूर्वक अन्वेषण किया जायेगा और सतत समाधान हेतु सुझाव भी दिये जायेंगे। अपरम्परागत ऊर्जा जैसे सौर-ऊर्जा एवं पवन ऊर्जा पर विशेष जोर दिया जायेगा। इसी प्रकार जल संसाधनों को प्राप्त करने हेतु परम्परागत विधियों को बढ़ावा दिया जायेगा, जिससे संरक्षण एवं अन्वेषण में संतुलित तालमेल स्थापित किया जा सके।

- **नवाचारी व्यक्तियों, दक्षताओं एवं कार्यों को प्रोत्साहन एवं मूल्य संवर्धन**

मध्यप्रदेश् के ग्रामीण क्षेत्र विशेष रूप से जनजातीय क्षेत्र मुख्य रूप से औषधीय वनस्पतियों, मृदा/जल संरक्षण तकनीकों, परम्परागत खेती आदि के परम्परागत ज्ञान तथा दक्षता में अत्यधिक समृद्ध है।

इस परम्परागत ज्ञान का प्रलेखीकरण, प्रोत्साहन करते हुए उपयुक्त आधुनिक प्रौद्योगिकी के साथ मिश्रित किया जायेगा। नवाचारी व्यक्तियों, दक्षताओं एवं कार्यों को पहचान कर उनके ज्ञान को बौद्धिक सम्पदा अधिकार (आई.पी.आर.) के अंतर्गत लाया जायेगा।

- **पर्यावरण अनुकूल जीवन शैली का विकास**

  स्वास्थ्य, स्वच्छता, पौध रोपण द्वारा हरियाली, वन सुरक्षा एवं संरक्षण, जल संरक्षण आदि पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति जागरूकता के लिए लोगों को संवेदनशील बनाना एक महत्वपूर्ण गतिविधि है। इस कार्य को निर्धारित क्षेत्रों में नियमित रूप से किया जायेगा। जागरूकता बढ़ाने के साथ ही ग्रामीणों को सामुदायिक सहभागिता द्वारा ऐसी गतिविधियों को अपने हाथ में लेने के लिए प्रोत्साहित किया जायेगा। इसके परिणामस्वरूप प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यावरण अनुकूल जीवन शैली का विकास हो सकेगा।

- **स्थानीय स्तर पर कृषि, उद्यानिकी, वन उपज, कला एवं विरासत के जरिए उद्यमशीलता का विकास एवं आजीविका अवसरों का सृजन**

  वर्तमान संसाधनों एवं कौशल/कार्यों का सर्वेक्षण संसाधन आंकड़ें प्रदान करेगा तथा विकासात्मक गतिविधियों की प्राथमिकता निर्धारित करने में सहायता करेगा। स्थानीय संसाधनों का उपयोग एवं रोजगार अवसरों को उपलब्ध कराने के उद्देश्य से स्थानीय स्तर पर उपलब्ध संसाधनों जैसे वन एवं वन उत्पादों आदि पर आधारित उद्यमशीलता कार्यक्रम हाथ में लिया जायेगा।

PROPOSED TRAININGS IN 2018-19

Leather Craft

S.No.	Training On	No. of trainees	Proposed Date & Duration	Place/District
01	Leather footwear Designing & Making skill development advanced training for Men & Women artisans at RUTAC workshop Obedullaganj	20	26.3.2018 to 25.05.2018 Functioning	RuTAC workshop Obedullaganj
02	Leather footwear Designing & Making skill development advanced training for Men & Women artisans at RUTAC workshop Obedullaganj	30-50	Proposed	RuTAC workshop Obedullaganj

One Year Diploma Course on Leather Footwear Technology

S. No.	Training On	No. of trainees	Proposed Date & Duration	Place/District
01.	One Year Diploma Course on Leather Footwear Technology (Joint Collabration with CFTI, Agra)	15	August 2017 (प्रस्तावित)	RuTAC workshop Obedullaganj

Bamboo Craft

S. No.	Training On	No. of trainees	Proposed Date & Duration	Place/District

01	BAMBOO Craft product Design and making (Joint Collabration with MP State Bamboo Mission)	30-50	June 2018 date Proposed	RuTAC workshop Obedullaganj
02.	BAMBOO Craft product Design and making (Joint Collabration with MP State Bamboo Mission)	30-50	August 2018 Proposed	To be decided
03	BAMBOO Craft product Design and making (Joint Collabration with MP State Bamboo Mission)	30-50	December 2018 Proposed	To be decided

Natural Color

S. No.	Training On	No. of trainees	Proposed Date & Duration	Place/District
01	Natural color making & its application	20-30	date yet to be decided	RuTAC workshop Obedullaganj

Pottery craft

S. No.	Training On	No. of trainees	Proposed Date & Duration	Place/District
01	Terracotta Product Design & Development Training Programs	30	date yet to be decided	To be decided

Bell metal craft

S. No.	Training On	No. of trainees	Proposed Date & Duration	Place/District
01	Bell metal craft based tradition technique advancement training program	20-30	Date yet to be decided	Rutac Obaidullaganj

LED & CFL Making

S. No.	Training On	No. of trainees	Proposed Date & Duration	Place/District
01	LED & CFL MAKING with the technical support of EID Bhopal	20-30	Date yet to be decided One month	RuTAC workshop Obedullaganj

कार्यशाला / प्रशिक्षण कार्यक्रम

6. ग्रामीण प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग केन्द्र कार्य योजना वर्ष 2018-19

कार्यक्रम प्रोजेक्ट	प्रथम तिमाही	द्वितीय तिमाही	तृतीय तिमाही	चतुर्थ तिमाही
केन्द्र में प्रशिक्षण कार्य हेतु मशीनों की व्यवस्था। औबेदुल्लागंज स्थित प्रशिक्षण केन्द्र में उन्नत मशीनों/ उपकरणों के माध्यम से प्रशिक्षणों का आयोजन (सूची संलग्न)	प्रशिक्षणार्थियों की चयन प्रक्रिया का निर्धारण चयन एवं 02 प्रशिक्षण	02 प्रशिक्षण	02 प्रशिक्षण	02 प्रशिक्षण
- प्रदेश के विभिन्न जिलों में उन्नत प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन (सूची संलग्न)	01 प्रशिक्षण	01 प्रशिक्षण	01 प्रशिक्षण	01 प्रशिक्षण
- म.प्र. कारीगरी विज्ञान कांग्रेस।	तैयारी	कारीगरी विज्ञान कांग्रेस का आयोजन	फॉलोअप	फॉलोअप
चयनित ग्रामों का समग्र सर्वेक्षण तथा एक्शन प्लान का निर्माण।	ग्रामों का चयन	सर्वेक्षण	सर्वेक्षण	एक्शन प्लान तैयार करना

7. अपेक्षित परिणाम

- परम्परागत कार्यो का मूल्य संवर्धन एवं आधुनिकीकरण किया जायेगा।
- ग्रामीण नवचारीं, कौशल एवं कार्यो का उपयोग करके उद्यमशीलता का विकास किया जायेगा।
- पर्यावरण अनुकूल जीवन एवं सतत आजीविका का विकास किया जायेगा।
- ग्रामीण प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग केन्द्र के माध्यम से प्रदेश स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र के परम्परागत कारीगरों के कौशल उन्नयन एवं दक्षता विकास हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किये जा रहे है।

A-10 मध्यप्रदेश संसाधन एटलस प्रभाग

1. पृष्ठभूमि

इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों भूमि, वन, कृषि, जल, खनिज एवं पशुधन के साथ-साथ मानव संसाधन आधारभूत संरचना जैसे शिक्षा, उद्योग, परिवहन, संचार, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक संरचना की प्राथमिक जानकारी को मानचित्रों एवं चार्ट के रूप में दर्शाते हुए प्राकृतिक संसाधन एटलस तैयार करना है। पायलट परियोजना के रूप में मध्यप्रदेश के राज्य स्तरीय मध्यप्रदेश संसाधन एटलस का जिला स्तर पर झाबुआ संसाधन एटलस, सीधी एवं सिंगरौली जिला संसाधन एटलस का प्रकाशन किया गया है। इसी आधार पर मध्यप्रदेश के सभी जिलों में इस कार्यक्रम का विस्तार किया गया है।

2 समीक्षा उपलब्धिया (वर्ष 2017-18)

- मध्यप्रदेश भू एटलस पोर्टल पर मध्यप्रदेश के सभी जिलों का वर्ष 2014-15 के **भू-उपयोग के अंतर्गत** इतर भूमि, ऊसर अकृष्य भूमि, पड़ती भूमि, स्थायी और गोचर भूमि, शुद्ध बोया गया क्षेत्र, अन्य पड़ती भूमि, सकल जोता गया क्षेत्र, **सिंचाई के अंतर्गत-**स्त्रोतानुसार शुद्ध सिंचित क्षेत्र, **फसलों के अंतर्गत-**प्रमुख फसले, दालें , अनाज, तिलहन एवं अन्य फसले एवं उनका तहसीलानुसार प्रमुख फसले दालें, अनाज, तिलहन एवं अन्य फसलों का क्षेत्रफल एवं पशुधन के अंतर्गत-गाय, बैल, भैसें , बकरियां, कुक्कुट पक्षी एवं भेड़ें वर्ष 2012 का डाटा अद्तन का कार्य किया गया।
- दमोह जिला संसाधन दिग्दिर्शिका प्रकाशित की गयी।
- छतरपुर एवं पन्ना जिला संसाधन दिग्दिर्शिका की पाण्डुलिपी मुद्रण हेतु म.प्र. माध्यम को भेजी गई।

3. उद्देश्य

इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य मध्यप्रदेश के संसाधन एटलस को राज्य एवं जिला स्तर पर तैयार करना है। यह एटलस सरकार के विभिन्न विभागों एवं अन्य एजेंसियों के विकास कार्यक्रमों की योजना गतिविधियों को सहायता प्रदान करेगा।इसके माध्यम से विद्यार्थी, शिक्षक एवं जन सामान्य, राज्य, जिला अथवा क्षेत्र की जानकारियों से अवगत हो सकेंगे। परिषद् द्वारा इस योजना के अंतर्गत म.प्र. के राज्य, संभाग एवं जिला स्तर पर कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। जिससे अधिक से अधिक लोगों की भागीदारी सुनिश्चित की जा सके।

4. सहयोगी/सहभागी संस्थाये

.....

5. लक्ष्य

- 08 जिला संसाधन मानचित्रकोश का लेखन कार्य पूर्ण कर प्रकाशन हेतु भेजी जावेगी ।
- संसाधन एटलस के वेब पोर्टल में आंकड़ों का अद्यतन

6. कार्यक्रम विवरण

इस परियोजना के अंतर्गत मध्यप्रदेश संसाधन एटलस, झाबुआ, सीधी एवं सिंगरौली, टीकमगढ़ (हिन्दी एवं अंग्रेजी संस्करण), दतिया (हिन्दी एवं अंग्रेजी संस्करण), एवं झाबुआ एंव अलीराजपुर जिला संसाधन एटलस (हिन्दी संस्करण) जिला संसाधन एटलस एवं म.प्र. कृषि मानचित्रावली का प्रकाशन किया गया है। इसके साथ ही सागर, सिवनी, दमोह एवं शिवपुरी जिला संसाधन दिग्दर्शिका का

प्रकाशन किया गया एवं अन्य जिलों के एटलस का कार्य प्रगति पर है। छत्तरपुर एवं पन्ना जिला संसाधन दिग्दर्शिका मुद्रण हेतु तैयार की गयी।

जिला, संभाग एवं राज्य स्तर पर कार्यशाला का आयोजन कर विभिन्न महाविद्यालयों/ विश्वविद्यालयों एवं मध्यप्रदेश शासन के विभिन्न विभागों को इस कार्यक्रम से जोड़कर जिला स्तर पर द्वितीयक आंकड़ों का कम्प्यूटर द्वारा टेबुलेशन कर चार्ट एवं मानचित्र तैयार करने का कार्य प्रगति पर है। सुदूर संवेदन तकनीक से विभिन्न प्राकृतिक संसाधन में मानचित्र तैयार किये गये हैं एवं इन मानचित्रों से सांख्यिकी तैयार की गयी। इन मानचित्रों के निरंतर अद्यतन का कार्य भी प्रगति पर है। म.प्र. के सभी 51 जिलों के प्राकृतिक संसाधनों, अद्योसंरचना, फसल और मौसम प्रतिवेदन के वर्ष 2014-15 तक के आंकड़ें तथा जनसंख्या (वर्ष 2011) संबंधी आंकड़ें एकत्र कर इनके विश्लेषण के उपरांत मानचित्र एवं माड्यूल्स तैयार किया गया। इन आंकड़ों के निरंतर अद्यतन का कार्य जारी है। इन्हें उपयोगकर्ता विभागों को सुगम रूप से उपलब्ध कराने हेतु वेब पोर्टल तैयार है।

7. समय सारणी

प्रथम तिमाही	द्वितीय तिमाही	तृतीय तिमाही	चतुर्थ तिमाही
02 जिला संसाधन दिग्दिर्शिका एटलस का कार्य पूर्ण किया जायेगा।	02 जिला संसाधन दिग्दिर्शिका एटलस का कार्य पूर्ण किया जायेगा।	02 जिला संसाधन दिग्दर्शिका का प्रकाशन करना एक दिवसीय जिला स्तरीय कार्यशाला का आयोजन।	02 जिला संसाधन दिग्दर्शिका का प्रकाशन एवं एक दिवसीय जिला स्तरीय कार्यशाला का आयोजन।
जिला संसाधन दिग्दिर्शिका एटलस के लिए जिले का भ्रमण, फोटोग्राफी एवं भू आंकड़ों का एकत्रीकरण एवं संसाधन एटलस का लेखन कार्य।	जिला संसाधन एटलस के लिए जिले का भ्रमण, फोटोग्राफी एवं भू आंकड़ों का एकत्रीकरण एवं संसाधन एटलस का लेखन कार्य।	जिला संसाधन दिग्दिर्शिका एटलस के लिए जिले का भ्रमण, फोटोग्राफी एवं भू आंकड़ों का एकत्रीकरण एवं संसाधन एटलस का लेखन कार्य।	जिला संसाधन दिग्दिर्शिका एटलस के लिए जिले का भ्रमण, फोटोग्राफी एवं भू आंकड़ों का एकत्रीकरण एवं संसाधन एटलस का लेखन कार्य।
म.प्र. संसाधन एटलस के वेब पोर्टल 'भू-एटलस' का लोकापर्ण।		संसाधन एटलस के वेब पोर्टल में आंकड़ों का अद्यतन	संसाधन एटलस के वेब पोर्टल में आंकड़ों का अद्यतन।

8. अपेक्षित परिणाम

परिषद् द्वारा म.प्र. संसाधन एटलस कार्यक्रम की शुरूआत की गयी है। जिसके अंतर्गत पायलट परियोजना के रूप में मध्यप्रदेश के राज्य स्तरीय मध्यप्रदेश संसाधन एटलस एवं जिला स्तर पर झाबुआ संसाधन एटलस, टीकमगढ़, दमोह, दतिया, सीधी एवं सिंगरौली जिला संसाधन एटलस एवं म.प्र. कृषि मानचित्रावली का भी प्रकाशन किया गया है । झाबुआ एवं अलीराजपुर, टीकमगढ़ एवं दतिया जिला संसाधन एटलस का हिन्दी संस्करण का प्रकाशन किया गया है। सागर, सिवनी, दमोह, शिवपुरी, जिला संसाधन दिग्दर्शिका का प्रकाशन किया गया ।

इस वर्ष 08 जिला संसाधन दिग्दर्शिका प्रकाशित किया जाना प्रस्तावित है। कार्यक्रम में प्रदेश के सभी जिलों के तहसील स्तर पर विभिन्न प्राकृतिक, मानव संसाधन एवं अद्योसंरचना का उल्लेख मानचित्र, चार्ट डाइग्राम के रूप में तैयार कर मॉड्यूल तैयार कर लिये गये है। इन सभी जिले बद्ध मानचित्रों, सारणियों एवं चार्टस् को उपयोगकर्ता विभागों को वेब पोर्टल के माध्यम से उपलब्ध कराने हेतु वेब पोर्टल तैयार कर लोकापर्ण किया जाना प्रस्तावित है।

इस कार्यक्रम में इच्छुक व्यक्ति/संस्थाओं में जागरूकता लाने हेतु जिला, संभाग एवं राज्य स्तर पर कार्यशाला आयोजित कर प्रतिभागियों को शामिल करना है। कार्यक्रम में सम्मिलित प्रतिभागियों से प्राप्त सुझावों को एटलस में समाहित करने का प्रयास किया जाता है एवं जिला/तहसील स्तर पर आंकड़ें संग्रहित करने का कार्य एवं स्थल सत्यापन/भ्रमण के दौरान सहयोग लिया जाता है।

यह कार्यक्रम शोधकर्ताओं एवं संस्थाओं महाविद्यालयों एवं विस्वविद्यालय को शोध में सहायता तथा जिला/संभाग स्तर पर जिले के अधिकारियों द्वारा विकास योजनाएं तैयार करने में सहयोगी एवं उपयोगी है।

अन्य परियोजनाएं

1. मध्यप्रदेश पुलिस हेतु डायल 100 एवं सिटी सर्विलेंस सिस्टम हेतु कॉन्सेप्ट नोट तैयार कर परियोजना हेतु डाटाबेस एवं तकनीकी सहयोग प्रदाय करना।

उद्देश्य

मध्यप्रदेश पुलिस के आधुनिकीकरण एवं सिटी सर्विलेंस सिस्टम हेतु परिषद द्वारा पुलिस अधिकारियों के साथ मिलकर एक तकनीकी कॉन्सेप्ट नोट तैयार किया गया। जिसके आधार पर म.प्र. पुलिस, मध्यप्रदेश शासन द्वारा डायल 100 एवं सी.सी.टी.वी. नेटवर्क तैयार करने का कार्य प्रारम्भ किया गया। इन परियोजनाओं के क्रियान्वयन हेतु परिषद द्वारा म.प्र. पुलिस को जीआईएस संबंधित तकनीकी विशेषज्ञता प्रदाय की जा रही है। साथ ही इसका जीआईएस डाटाबेस तैयार करने हेतु परिषद द्वारा वेब एप्लीकेशन तैयार कर पुलिस विभाग में डाटा संकलन का कार्य किया जा रहा है।

समीक्षा उपलब्धियां (वर्ष 2017-18)

- 32 प्रशिक्षण राज्य/जिला स्तरीय प्रशिक्षण/ कार्यशाला में 2495 पुलिस अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया गया।
- म.प्र. डायल 100 परियोजना के अंतर्गत 20 जिलों की सभी शहरों तथा कालोनियों का सीमांकन सीमांकन का कार्य किया गया।
- इन्दौर एवं आगर मालवा जिलों के लिए विलेज बाउंड्री अपडेशन एवं सेटलमेन्ट पाइंट अपडेशन का कार्य किया गया।
- मध्य प्रदेश के 09 संभाग के सभी जिलों के सेटेलाईट इमेज मैप थानों के अनुसार प्रिटिंग कर म.प्र. पुलिस विभाग को प्रदाय किया गया।
- म.प्र. पुलिस के द्वारा एमडीटी के माध्यम से संग्रहण किये गये जिलों की पीओआई डाटा जिनमें अशोकनगर, मुरैना, विदिशा इन्दौर खरगौन ग्वालियर, सीहोर गुना एवं ग्वालियर जिलों के पीओआई डाटा में करेक्न का कार्य किया गया।
- डिंडौरी, दतिया, ग्वालियर, उमरिया, मुरैना, विदिशा, भोपाल एवं अलीराजपुर जिलों के लिए विलेज बाउंड्री अपडेषन एवं सेटलमेन्ट पाइंट अपडेशन का कार्य किया गया।

- डायल 100 परियोजना को **Esri India द्वारा "Special Achievement in GIS Award" ESRI User Conference** में दिनाक 13-14 दिसंबर 2017 को नई दिल्ली में दिया गया ।
- परिषद् के मध्यप्रदेश संसाधन एटलस प्रभाग की टीम द्वारा डायल 100 परियोजना में सराहनीय कार्य के लिये म.प्र. पुलिस विभाग द्वारा प्रंशसा पत्र प्रदान किया गया ।
- परिषद् को Geospatial World Excellence Award for Application of Geospatial Technology in Public Security for state-wide Dial 100 Police Emergency Response System के लिए प्रदान किया गया।

कार्ययोजना 2018-19

- प्रदेश के सभी थानों के थाना प्रभारियों एवं थाने के चयनित व्यक्तियों को जीआईएस एवं पीओआई डाटा संग्रहण का प्रशिक्षण प्रदाय करना।
- नवीन थानों का सीमांकन।
- प्रदेश के सभी जिलों के अधिक से अधिक पीओआई डाटा संग्रहण करना एवं डाटा सर्वर में स्थापित करना।
- समय- समय पर मध्यप्रदेश पुलिस को तकनीकी सहयोग प्रदान करना।

2. राज्य आपदा कमांड प्रतिक्रिया एवं निगरानी प्रणाली

उद्देश्य

राज्य आपदा प्रबंधन एवं प्रतिक्रिया प्रणाली का उद्देश्य राज्य में होने वाली आपदा के निवारण में लगने वाले प्रतिक्रिया के समय को कम करना है। आपदा घटित होने पर उसकी सूचना मिलने पर यह स्टेट कमांड सेन्टर पर मोनीटर प्रणाली पर दिखने लगेगी इससे आपदा स्थल पर बहुत कम समय में सहायता की प्रक्रिया शुरू की जा सकेगी। आपदा घटित होते ही स्टेट कमांड सेन्टर के द्वारा उस स्थान के निकटवर्ती सभी सिविल डिफेन्स स्वंय सेवको को एप्लीकेशन द्वारा संदेश जारी कर आपदा स्थल पर पहुंचने के लिए निर्देश दिया जा सकेगा। गंभीर स्थिति में वहां के एनजीओ, सामाजिक संस्थाओं एवं धार्मिक संस्थाओं को भी सहायता पहुंचाने के लिए निर्देशित किया जा सकेगा।

समीक्षा उपलब्धियां (वर्ष 2017-18)

- फोन, एसएमएस, वेब चेतावनी के माध्यम से आपदा/आपातकालीन की रिपोर्टिंग।
- केंद्रीकृत प्रणाली के माध्यम से आपदा /इमरजेंसी के जवाब।
- संबंधित अधिकारियों को चेतावनी की जानकारी।
- आपातकालीन प्रतिक्रिया टीमों की निगरानी।
- इस परियोजना के अंतर्गत 14 से 20 जुलाई 2017 को स्टेट कमांड सेन्टर भोपाल में 6 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें सैनिक, प्लाटून कमांडर, कंपनी कमांडर एवं जिला सैनानी, डीआईजी स्तर के अधिकारियों ने भाग लिया। इनकी कुल संख्या 80 थी।
- इस परियोजना के अंतर्गत वेब पोर्टल में आपदा प्रबंधन की प्रतिदिन एवं मासिक की रिपोर्ट को डाउनलोड करने का टूल जोड़ा गया।
- इस परियोजना को स्टेट ई गर्वनेस अवार्ड 2017 के लिए भेजा गया।

कार्ययोजना 2018-19

- राज्य आपदा प्रबंधन कंमाड केंद्र के अधिकारियों का प्रशिक्षण एवम् जिआइएस डेटा का अधथन करना

3. Mapping of Biodiversity and Development of GIS Based Web Portal for Madhya Pradesh State Biodiversity Board

उद्देश्य

इस परियोजना के अंतर्गत म.प्र. के सभी जिलों में उपलब्ध वन, कृषि, जल, एवं पशु जैव विविधता की जियो मैपिंग की जाना है। जिससे जैवविविधता का संरक्षण हो सके एवं उसका समय-समय पर मॉनीटर किया जा सके। इसके लिए जीआईएस आधारित वेब पोर्टल का निर्माण कर उस पर यह जैवविविधता मानचित्र एवं डाटाबेस प्रदर्शित किया जाना है, जिससे उनकी वास्तुस्थिति का पता लगाया जा सके एवं संरक्षित किया जा सके। परियोजना के अंतर्गत प्रथम चरण में छिंदवाड़ा एवं सिवनी जिला लिया गया है।

समीक्षा उपलब्धियां (वर्ष 2017-18)

- मध्य प्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड] भोपाल द्वारा वन विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों हेतु प्रशासनिक एकेदमी में दिनांक 14 फरवरी 2017 को एक दिवसीय वानिकी जैवविविधता जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसके अंतर्गत जीआईएस आधारित जैवविविधता वेब पोर्टल का प्रदर्शन किया गया।
- सिवनी जिले के वन संपदा का डाटा संग्रहण का कार्य दिनांक 3 से 12 मार्च 2017 तक किया गया। जिसके अंतर्गत मध्य प्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड द्वारा सिवनी जिला वन अधिकारी के समक्ष जिले में जैवविविधता डाटा संग्रहण से संबंधित कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- सिवनी जिले की जैवविविधता एटलस तैयार कर दिनांक 22 मई 2017 को प्रशासनिक अकादमी मे मध्य प्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड भोपाल द्वारा आयोजित एक दिवसीय संगोष्ठी के दोरान विमोचन किया गया साथ ही छिन्दवारा जिले का ड्राफ्ट एटलस भी तैयार किया गया ।
- जैवविविधता विभाग के लिए छिन्दवाड़ा एवं सिवनी जिले के सभी क्रमश: 11 और 8 जनपद की सीमाएं एवं ग्राम पंचायतों की सीमाएं बनायी गई। छिन्दवाड़ा एवं सिवनी जिले का भूमि उपयोग नदी एवं जलाशय तथा सड़क मार्गो के मानचित्र बनाये गये। इसके अतिरिक्त म.प्र. बायो-डाइवसिटी जियो एटलस वेब पोर्टल का आधार रूप डिजाइन तैयार किया गया एवं उसमें उपरोक्त मानचित्र अपलोड किये गये।
- मध्य प्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड एवम परिषद् द्वारा जैवविविधता मानचित्रण के पुनरीक्षण पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन दिनांक 31.10.2017 को छिन्दवारा जिले मे किया गया, जिसमे वन विभाग के अधिकारियों ने भाग लिया ।

कार्ययोजना 2018-19

- मध्य प्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड, मध्य प्रदेश विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी परिषद् भोपाल द्वारा राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर मे उपलब्ध डाटा को एकीकृत कर डाटा संग्रहित का कार्य किया जायेगा

4. IWRM based development plan for water security in four districts of Bundelkhand region in India

उद्देश्य

इस परियोजना का उद्देश्य आजीविका के मुद्दों पर जल विज्ञान, जलवायु परिवर्तन एवं समन्वित जल संसाधन प्रबंधन का एकीकरण जल अल्पता वाले बुंदेलखंड क्षेत्र के लिए कार्यपद्धति और निर्णय सहयोग तंत्र का विकास ग्राम परिचय एवं ग्राम में आजीविका संवर्धन की संभावनाओं का विश्लेषण करना है। इस परियोजना में बुन्देलखण्ड क्षेत्र के अंतर्गत मध्यप्रदेश के दो जिलों टीकमगढ़ एवं छतरपुर तथा उत्तरप्रदेश के दो जिले ललितपुर एवं झांसी लिये गये है। यह परियोजना राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान, रूड़की, भारत सरकार एवं उ.प्र. सुदूर संवेदन उपयोग केन्द्र, उ.प्र. सरकार के साथ क्रियान्वित की जा रही है।

समीक्षा उपलब्धियां (वर्ष 2017-18)

- समन्वित जल संसाधन प्रबंधन बुंदेलखण्ड परियोजना के अंतर्गत मानचित्रों का निर्माण किया गया जैसे-मृदाक्रम, मृदा गठन, भूमि उपयोग एवं आवरण (रवी एवं खरीफ) मानचित्र तैयार किये गये। समन्वित जल संसाधन प्रबंधन बुंदेलखण्ड परियोजना के अंतर्गत ग्रामीण आजीविका के लिए बांस एवं जूट प्रशिक्षणों का 15 दिवसीय आयोजन ग्राम (करीं एवं बिलगाय) में किया गया और जैविक खेती एवं मशरूम उत्पादन का प्रशिक्षण तीन दिवसीय (चोरटानगा एवं समर्रा) में दिया गया। दोनो प्रशिक्षणों में लगभग 140 हितग्राहियों को प्रशिक्षित किया गया।
- परियोजना के अंतर्गत मृदा की अधिकतम गहराई, मृदा की औसत गहराई, भूमि क्षमता एवं छतरपुर तथा टीकमगढ का नाव मानचित्रण का कार्य किया गया।
- आईआईटी रूड़की में बुन्देलखंड़ संसाधन सूचना प्रणाली वेब पोर्टल को आईआईटी रूड़की के सर्वर पर स्थापित (डिप्लॉय) किया गया एवं इसका प्रस्तुतीकरण भी किया गया।
- जल जन जीवन के वेब पोर्टल में एट्रिब्यूट क्वेरी में सुधार करने के लिए लेयर अपडेशन का कार्य किया गया।
- जल जन जीवन के वेब पोर्टल में नया डाटा सर्वर पर अपलोड किया गया।
- उत्तरप्रदेश के दो वाटरशेड की लेयर को अपडेट किया गया। उन्हीं वाटरशेड लेयर के लिए एट्रीब्यूट क्यूरी पर कार्य किया गया।
- म.प्र. के वाटरशेड का फसल अनुसार एवं रैनफाल डाटा वेब पोर्टल पर प्रदर्शित किया गया।
- बुन्देलखण्ड के अंतर्गत आने वाले उत्तरप्रदेश के दो जिलों की लेयर अपलोड की गई एवं वेब पोर्टल पर प्रदर्शित किया गया। उत्तरप्रदेश भाग के भूमि संसाधन प्रबंधन पर काम किया गया तथा वर्षावार फसल को वेब पोट्रल पर प्रदर्शित किया गया।

कार्ययोजना 2018-19

- मध्यप्रदेश संसाधन एटलस प्रभाग द्वारा जीआईएस आधारित वेब पोर्टल "जल जन जीवन विकसित" किया है । इसके अन्तर्गत विकसित नई क्वेरी मॉड्यूल और डेटाबेस संरचना को रुड़की में स्थित एनआईएच सर्वर पर अपलोड और अनुकूलित किया जाना है।
- माह अप्रैल 2018 मे परियोजना का मूल्यांकन NIH रूरकी मे किया जाना प्रस्तावित है ।

A-11 जलवायु परिवर्तन शोध केन्द्र

1. पृष्ठभूमि

जलवायु परिवर्तन आज एक प्रमुख वैश्विक पर्यावरणीय चुनौती है। इसके अनेकों प्रकार के प्रभावों को समझने एवं आकलन करने का प्रयास पूरे विश्व में हो रहा है। ऐसा माना जा रहा हे कि जलवायु परिवर्तन का प्रभाव प्राकृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों पर हो रहा है। जिसे समझना एवं उसके निदान का उपाय ढूंढना अत्यंत आवश्यक है। म.प्र. के संदर्भ में इस तरह के अध्ययन की और अधिक आवश्यकता है क्योंकि इस प्रदेश में भारत का सर्वाधिक वन क्षेत्र होने के साथ ही साथ सह प्रदेश खनिज एवं मानव संपदा की दृष्टि से भी अत्यंत ही महत्वपूर्ण है।

म.प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् विगत 30 वर्षो से जलवायु परिवर्तन संबंधी आंकडे एकत्रित कर रहा है। पिछलें कुछ वर्षो में परिषद् ने म.प्र. संसाधन एटलस, म.प्र. फसल पूर्वानुमान परियोजना मध्यप्रदेश जलाशय मानचित्रण परियोजना, म.प्र. स्वचलित मौसम प्रणाली परियोजना मध्यप्रदेश पडत भूमि मानचित्रण परियोजना आदि के माध्यम से मौसम परिवर्तन से संबधित आंकडे संकलित किए है। इन आंकडों का विस्तृत अध्ययन म.प्र की खाद्यान्न सुरक्षा, पर्यावरण सुरक्षा, आर्थिक सुरक्षा आदि के संदर्भ में किया जाना आवश्यक है। इन्ही तथ्यों के मददेनजर परिषद में जलवायु परिवर्तन शोध केन्द्र की स्थापना की गई है।

2. समीक्षा उपलब्धियां (2017-18)

कृषि एवं मुद्रा के क्षेत्र में जलवायु प्रभाव के अध्ययन के लिए आंकडे वैज्ञानिक उपकरणों Photosynthesis System, Spectroradiometer System, Line Quantum Sensor, Sun photometer and Leaf Area index meter से ऐत्रित किये गये है।

- TL/OSL Dating के लिए डार्क रूम निर्माण कार्य किया गया एवं संबंधित वैज्ञानिक उपकरणों की स्थापना की गई। षेष सहायक उपकरणों के क्रय की प्रक्रिया अंतिम चरण में है।
- प्रदेश के चिन्हित स्थानों से एकत्रित खनिज (र्काटज/फेल्डसपार) एवं पुरातात्विक महत्व के नमूनों की डेटिंग के लिए परियोजना प्रस्ताव तैयार करने हेतु Field survey तैयार किया गया ।
- इपको द्वारा दिनांक 22 - 23 मार्च, 2018 को आयोजित National conference on Global Warming and climate change –A Way Out में परिषद् द्वारा सक्रिय भागीदारी की गई।
- दिनांक 22 मार्च 2018 को परिषद् द्वारा पुरस्कृत युवा वैज्ञानिकों एवं विज्ञान प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार के वैज्ञानिकों द्वारा परिषद् की ओर से जलवायु परिवर्तन विषय पर Brain Storming Session का आयोजन किया गया ।
- National conference on Global Warming and climate change –A Way Out में जलवायु परिवर्तन विषय पर दो शोध पत्र प्रस्तुत किये गये ।

3 कार्यक्रम वितरण (2018-19)

- जलवायु परिवर्तन शोध केन्द्र में मुख्य रूप से मौसम विज्ञान कृषि जल संसाधन भूमि विषयों पर शोध एवं अध्ययन करना ।
- कृषि एवं मृदा के क्षेत्र में जलवायु प्रभाव के अध्ययन के लिए आंकडे वैज्ञानिक उपकरणों Photosynthesis System, Spectroradiometer System, Line Quantum Sensor, Sun photometer and Leaf Area index meter से एकत्रित करना।
- म.प्र. हेतु तहसील स्तर पर Drought Vulnerability का Prioritization विगत 20 वर्षों के उपग्रह चित्रों,वर्षा एवं कृषि क्षेत्र के आंकडों आदि का उपयोग कर किया जायेगा।
- प्रदेश के चिन्हित स्थानों से एकत्रित खनिज (कार्टज/ फेल्डसपार) एवं पुरातात्विक महत्व के नमूनों की डेटिंग हेतु परियोजना तैयार करना।

B - सामान्य मान्य प्रशासन एवं केन्द्रीय अधोसंरचना

B—1 परिषद् की स्थापना, निर्देशन एवं प्रशासन

1. पृष्ठभूमि

परिषद् के स्थापना में कुल 218 पद स्वीकृत हैं, जिसमें से 165 पद भरे हुए हैं तथा कुल 53 पद रिक्त हैं।

परिषद् की गतिविधियों का प्रदेश स्तर पर सफल क्रियान्वयन हेतु ग्वालियर, जबलपुर एवं इंदौर में क्षेत्रीय विस्तार केन्द्र खोले गये हैं। इन विस्तार केन्द्रों में 3 अधिकारी तथा 2 कर्मचारी पदस्थ हैं। भविष्य में विस्तार केन्द्रों की गतिविधियों को सुचारू रूप से कार्यान्वयन हेतु आवश्यकतानुसार अतिरिक्त अधिकारी/वैज्ञानिक/कर्मचारियों की पदस्थापना की जायेगी इसके अतिरिक्त उज्जैन तारामंडल उज्जैन में दो अधिकारी पदस्थ हैं। परिषद् के स्थापना के अंतर्गत आयोजनेत्तर, आयोजना तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, भारत सरकार से प्रोफेशनल सेक्रेटेरिएट एवं परिषद् के आंतरिक स्त्रोत से प्राप्त राशि मद के अन्तर्गत बजट राशि स्वीकृत की जाती है। परिषद् के स्थापना व्यय का वहन स्वीकृत बजट राशि से किया जाता है।

कार्यालय की अन्य प्रस्तावित व्यवस्थाएं

1. डाक आवक एवं वितरण व्यवस्था

परिषद् कार्यालय में एक पृथक आवक कक्ष है जिसमें परिषद् कार्यालय में आने वाली डाक प्राप्त की जाती है। प्रत्येक दिन प्राप्त डाक को आवक कक्ष में पदस्थ कर्मचारी द्वारा पंजी में उसी दिन इन्द्राज कर सायं 5.30 बजे तक प्रशासन कक्ष में उपलब्ध करा दी जाती है। प्रशासन कक्ष द्वारा दूसरे कार्य दिवस में प्रत्येक डाक को चिन्हित कर संबंधित शाखा प्रभारी को कक्षवार पंजी में इन्द्राज कर संबंधित कक्ष को प्रदान की जाती है। संबंधित कक्ष द्वारा भी उक्त डाक प्राप्त करने हेतु किसी कर्मचारी को अधिकृत किया जाता है, जिसकी सूचना लिखित में प्रशासन कक्ष को देना अनिवार्य है। अति आवश्यक पत्र आवक कक्ष द्वारा प्रशासन कक्ष को तुरंत उपलब्ध कराई जाती है।

2. शासकीय पत्र

शासकीय पत्र महानिदेशक कक्ष द्वारा प्राप्त किये जाते है एवं उन्हें चिन्हित कर संबंधित शाखा प्रभारी को एक पंजी में इन्द्राज कर उसी दिन प्रदाय किये जाकर उनकी पावती ली जाती है। संबंधित कक्ष द्वारा शासकीय पत्र के अनुक्रम में भेजे गए पत्र की एक प्रति महानिदेशक कक्ष को भी उपलब्ध कराई जाती है।

3. जावक कक्ष

परिषद् कार्यालय में एक पृथक जावक कक्ष है। समस्त कक्षों द्वारा भेजे जाने वाले पत्रों में संबंधित शाखा द्वारा यह स्पष्ट निर्देशित किया जाता है कि पत्र को साधारण डाक, पंजीकृत डाक अथवा स्पीड पोस्ट से भेजा जाना है। प्रत्येक शाखा का यह भी दायित्व है कि भेजे जाने वाले पत्र की कार्यालयीन प्रति के साथ ही एक मास्टर कॉपी जावक कक्ष को उपलब्ध कराये। जावक कक्ष द्वारा दिन भर में भेजे गए पत्रों की मास्टर कापी को एकत्र कर एक नस्ती में दिनांकवार संधारण किया जाता है और प्रत्येक माह के मास्टर कापी की एक नस्ती तैयार की जाती है जो जावक कक्ष में ही सुरक्षित रखी जाती है।

4. वाहन व्यवस्था

अ) वाहन व्यवस्था के संबंध में प्रशासन कक्ष द्वारा प्रपत्र निर्धारित किए गए हैं। निर्धारित प्रपत्रों में संबंधित शाखा की आवष्यकता के अनुरूप ही वाहन उपलब्ध कराए जाते हैं तथा उनमें इधन व मरम्मत कार्य कराए जाते हैं। परिषद् में कुल 09 वाहन उपलब्ध हैं (05 कार, 01 वेन, 02 ऑटो एवं 01 मिनी बस) इनमें से 02 कार वरिष्ठ अधिकारी को आवंटित है। 07 वाहन पूल में संचालित हैं (03 कार, 01 वेन, 02 ऑटो एवं 01 मिनी बस)। 01 आटो कण्डम (खराब) हालत में है। आवंटित वाहनों के लिये 60 लीटर डीजल मासिक सीमा, पूल वाहनों में 04 स्टाफ कार को 120 लीटर पेट्रोल मासिक सीमा, 01 ऑटो को 60 लीटर पेट्रोल मासिक सीमा। मिनी बस की मासिक सीमा निर्धारित नहीं है। रूपये 20,000 वार्षिक की सीमा वाहन मरम्मत के लिये प्रति वाहन निर्धारित हैं। इससे अधिक खपत डीजल/पेट्रोल/रिपेरिंग पर व्यय होने पर जिस संबधित परियोजना के अंतर्गत वाहन का उपयोग किया जा रहा हैं, व्यय उसी परियोजना के अंतर्गत सक्षम अनुमति के पश्चात वहन किया जाता है।

(ब) परिषद में योजना/परियोजना के कार्यो की प्रकृति/आवश्यतानुसार किराये पर वाहन निर्धारित प्रक्रिया के अंतर्गत अनुबंधित हैं उन वाहनों के उपयोग हेतु निम्नानुसार प्रक्रिया का निर्धारण हैः वाहन किराये पर उपयोग करने हेतु उपयोगकर्ता योजना/परियोजना के प्रभारी को आकलन करना आवश्यक है कि यात्रा हेतु नियमानुसार रेल अथवा सड़क, सार्वजनिक सुविधा उपलब्ध न होने की स्थिति में, कार्य के स्वरूप के अनुसार व पात्रतानुसार वाहन किराये पर लिया गया है। वाहन की श्रेणी का निर्धारित यात्रा नियमों में निर्धारित पात्रता अनुसार सुनिश्चित कर अधिकारी के स्तर तथा कार्य की अनिवार्यता एवं आवश्यकतानुसार ही वाहन पर न्यूनतम व्यय करने का सक्षम अनुमोदन लिया जाता है।

5. विज्ञान विमर्श वीथिका एवं विज्ञान विश्राम वीथिका

विज्ञान विमर्श वीथिका में 315 सीटों का ऑडिटोरियम, 100 सीटर कान्फ्रेन्स हॉल, 50 सीटर लेक्चर हॉल संचालित है तथा विज्ञान विश्राम वीथिका में कुल 30 कमरे, सभी वातानुकूलित कमरे संचालित है।

6. बैठक व्यवस्था

समय-समय पर परिषद् व योजना/परियोजनाओं की होने वाली बैठक व्यवस्था एवं आयोजनों के सफल व्यवस्था हेतु कक्ष द्वारा व्यवस्था के संबंध में एक प्रपत्र निर्धारित किया गया है। उसी प्रपत्र के अनुरूप ही बैठक व्यवस्था संबंधी व्यवस्थाएं की जाती हैं।

7. क्रय प्रक्रिया

योजनाओं-परियोजनाओं के क्रियान्वयन के संबंध में क्रय की जाने वाली सामग्री के अनुमोदन हेतु संबंधित कक्षों द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली नस्ती में स्वीकृति हेतु सक्षम अधिकारी का उल्लेख किया जाता है तथा समस्त क्रय परिषद की क्रय समिति के माध्यम से एवं क्रय नियमों के अंतर्गत किया जाता है।

8. दूरभाष

परिषद कार्यालय में कुल 31 लेंडलाइन दूरभाष 03 डब्लू एल एल स्थापित हैं एवं 120 लाइन का एक्सचेंज, जिसमें लैण्ड लाइन एवं इंटरकॉम की सुविधा उपलब्ध है। कुल 03 दूरभाष प्रथम श्रेणी एवं द्वितीय श्रेणी अधिकारियों के निवास स्थान पर स्थापित हैं, जिनका भुगतान नियमानुसार किया जाता हैं। इसके अतिरिक्त कार्य की दृष्टि से अधिकारियों को उनके निजी दूरभाष की प्रतिपूर्ति निर्धारित सीमा के अंतर्गत की जाती है।

B – 2 ई-गर्वनेंस ई-प्रोक्योरमेंट तथा कम्प्यूटर अधोसंरचना

ई-गवर्नेंस ई-प्रोक्योरमेंट कम्यूनिकेशन

1. पृष्ठभूमि

परिषद् का क्रय ई-प्रोकोरमेंट द्वारा करवाना ट्रेनिंग/वर्कशाप हेतु कम्प्यूटर सेवा प्रदाय करना, सूचना प्रौद्योगिकी में नई तकनीक को विकसित करना परिषद् की मांग के अनुसार नये पोर्टल का बनवाना परिषद् की योजनाओं का प्रदेश में सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से दूरदराज तक फैलाना परिषद् के कर्मचारियों/अधिकारियों को ई-मेल सुविधा वेबसाइट अपडेशन नई वेबसाइट का निर्माण करना व अन्य संबंधित कार्य कक्ष द्वारा किया जाता है।

2. उद्देश्य एवं लक्ष्य

- परिषद् के अधिकारी/कर्मचारियों हेतु कम्प्यूटर सुविधाएं, इंटरनेट सुविधाएं, मेन्टेनेन्स सुविधा प्रदाय करना।
- ई-मेल सुविधा, वेबसाइट का निर्माण एवं अपडेशन।
- शासन से संबंधित समस्त पोर्टल जैसेः सीएम समीक्षा, सीएम घोषणाएं, समाधान, जन संकल्प इत्यादि में विभाग की जानकारी दर्ज कराना।
- विभिन्न प्रभागो में आईटी से संबंधित परियोजनाओं में तकनीकी सहयोग करना एवं हार्ड वेयर एवं साफट वेयर का मेन्टेनेन्स करना।
- इंफॉरमेशन टेक्नालॉजी से संबंधित ट्रेनिंग आयोजित करना।
- मिशन एक्शीलेन्स, युवा वैज्ञानिक कांग्रेस इत्यादि के अभ्यार्थी का डाटा मेनेजमेन्ट करना, लेखा कक्ष से जुड़े ऑन लाइन कार्य आदि कार्य कक्ष द्वारा किये जाते हैं।
- लीज लाइन, स्वान का रखरखाब।

इसरो कन्टीन्यूड मेडिकल एजूकेशन

1. पृष्ठभूमि

कन्टीन्यू मेडिकल एजूकेशन प्रभाग के द्वारा दूर दराज के अस्पताल, मेडिकल कॉलेजो व अन्य प्रतिष्ठित संस्थानों को उपग्रह से जोड़कर, आधुनिक चिकित्सा तकनीकी व गंभीर स्थिति में मरीज के स्वास्थ्य संबंधी सलाह लेना नेटवर्क का मुख्य उद्देश्य है। वर्तमान में 10 जिला चिकित्सालय, 3 मेडिकल कॉलेज व दो ट्रस्ट अस्पताल इस हेतु शामिल किया गया है। इन सभी को जोड़ने हेतु नेटवर्क कनेक्टिविटी हब की स्थापना म.प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद्, भोपाल में है।

2. समीक्षा उपलब्धिया (वर्ष 2017 -18)

- वर्तमान में 07 टेलीमेडिसीन केन्द्र तकनीकी रूप से कार्यरत् हैं।
- इसरो द्वारा समय-समय पर आयोजित कुल 06 कन्टीन्यू मेडिकल एजूकेशन में केन्द्रों की सहभागिता की गई।

3. सहयोगी/सहभागी संस्थायें

परियोजना कार्यान्वयन में स्वास्थ्य विभाग, म.प्र. शासन, वित्तीय सहयोग राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन, म.प्र. शासन, भोपाल एवं तकनीकी सहयोग विकास एवं शैक्षिक संचार यूनिट, अंतरिक्ष उपयोग केन्द्र, अहमदाबाद एवं भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, बैंगलूर द्वारा दिया जा रहा है।

4. प्रस्तावित लक्ष्य

इसरो द्वारा प्रसारित कन्टीन्यू मेडिकल एजूकेशन कार्यक्रमों को सभी कार्यरत् केन्द्रों को सहभागिता हेतु समन्वय करना।

5. अपेक्षित परिणाम

प्रदेश के 15 चिन्हित अस्पतालों के चिकित्सक देश के सुपरस्पेशिलिटी श्रेष्ठ अस्पतालों के विशेषज्ञ चिकित्सकों से परामर्श कर मरीजों के जटिल रोगों की चिकित्सा सेटेलाइट के माध्यम से कर सकेगें। भविष्य में इस सुविधा का विस्तार होने पर प्रदेश के सभी जिलों में इसका लाभ पहुंच सकेगा।

B – 3 मानव संसाधन विकास

1. पृष्ठभूमि

इस प्रकोष्ठ द्वारा परिषद की विभिन्न योजनाओं के प्रभारियों के समन्वय से कार्यरत तकनीकी एवं गैर तकनीकी अमले को आवश्यकता अनुसार प्रशिक्षण एवं क्षमतावर्धन हेतु सुविधा उपलब्ध कराई जाती है। मानव संसाधनों के विकास में प्रशिक्षण का महत्वपूर्ण योगदान है। किसी कर्मचारी की कार्य दक्षता उसे उचित प्रशिक्षण देकर बढ़ाई जा सकती है। प्रदेश में विज्ञान के क्षेत्र में उपलब्ध व्यक्तियों को उनसे संबंधित उच्च स्तरीय प्रयोगशालाओं व संस्थाओं के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भेजना और उनके द्वारा अर्जित ज्ञान को प्रदेश के विकास कार्यक्रमों में उपयोग करना ही इस प्रकोष्ठ (एच.आर) का उद्देश्य है।

2. समीक्षा उपलब्धिया (वर्ष 2017 -18)

- अप्रेल 2017 से मार्च 2018 तक एच.आर.डी कक्ष द्वारा 14 प्रशिक्षण कार्यक्रमो का समन्वयन किया गया
- पी.जी. डिप्लोमा हेतु कार्यक्रम हेतु परिषद के 02 वैज्ञानिको को आई.आई आर एस देहरादून (प्रमंख प्रशासन) एच.आर डी. द्वारा भेजा गया।
- सूदूर संवेदन उपयोग केन्द्र सी.ई.बी.टी लेब एंव क्यु.ए.एल में लगभग 35 छात्र छात्राओ को (जनवरी जून) में इन्टर्नशिप कर्य कराया गया।
- परिषद की सी.ईबी.टी लैब में (जनवरी-जून) 20 छात्र/ छात्राओ को लधु शोध प्रोजेक्ट डेजरटेशन कार्य करवाया गया।
- परिषद की प्रयोगशालाओ में प्रदेश के महाविधालयों, विश्वविधालयो संस्थाओं के लगभग 320 छात्र/छात्राओ कों लेब भ्रमण करवाया गया।
- सेमिनार/ कान्फेंस/ वर्कशाप में (जनवरी जून) 08 वैज्ञानिकों को नामाकिंत किया गया।
- पी. एच. डी. एवं शोध कार्यो हेतु प्रयोगशाला में 01 छात्र-छात्रों को सुविधाएं उपल्बध करायी गई।
- ग्रामीण प्रौधौगिकी केन्द्र ओवेदुल्लागंज के प्रशिक्षण हेतू आवेदन मगांकर समन्वयन किया गया।
- फरवरी 2018 मे प्रभारी एच.आर.डी को बैठक हेतु प्रशासन अकादमी भेजा गया।

3. उद्देश्य

- परिषद् के मानव संसाधन के विकास के समुचित नियोजन, विकास एवं प्रबंधन में सहयोग
- विज्ञान के क्षेत्र में हुए नवीनतम तकनीकी शोधों से अवगत कराना
- प्रदेश के विद्यार्थियों की तकनीकी दक्षता बढ़ाना
- शोधर्थियो एंव अन्य विर्धाथियो के लिये इन्टर्नशिप को प्रोत्साहित करना

4. सहयोगी संस्थाऐं

- केन्द्र सरकार के विभिन्न विभाग
- राज्य शासन के विभिन्न विभाग
- प्रशासन अकादमी
- विश्वविद्यालय महाविद्यालय एवं शैक्षणिक संस्थाएं

5. लक्ष्य (वर्ष 2018 -19)

1. लैब आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रमो का आयोजन (10 कार्यक्रम)
2. सुदूर सवेंदन तकनीक एंव जी.आई.एस. विद्यार्थियों के लिये प्रशिक्षण आयोजन करना। (05 कार्यक्रम))
3. विज्ञान विषयो पर व्याख्यानो का आयोजन (संख्या -10)
4. विधालय एंव महाविधालयो संस्थानो के छात्र/छात्राओ के लिये प्रयोगशाला में भ्रमण एंव डिमांस्ट्रेशन कराया जाना । (लगभग 300 छात्र)
5. विज्ञान विषय में इन्टर्नशिप कार्य कराया जाना।

6. कार्यक्रम विवरण

इन्टर्नशिप प्रशिक्षण व्याख्यान प्रयोगशाला भ्रमण एंव विश्लेषण कराया जाना।

7. समय सारिणी

कार्यक्रम	प्रथम तिमाही	द्वितीय तिमाही	तृतीय तिमाही	चतुर्थ तिमाही
प्रयोगशाला भ्रमण	100	100	100	100
इन्टर्नशिप	03	02	03	02
प्रशिक्षणों का आयोजन	02	03	05	04
व्याख्यान	02	03	02	01
विश्लेषण	20	30	20	20

8. अपेक्षित परिणाम

- परिषद् में कार्यरत् कर्मचारियों की कार्यदक्षता व कार्य गुणवत्ता बढ़ेगी।
- प्रदेश में मानव संसाधन का विज्ञान के क्षेत्र में समुचित विकास होगा।

B – 4 मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी नेटवर्क

विश्वविद्यालय प्रकोष्ठ तथा प्रशिक्षण

1. पृष्ठभूमि -

म.प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद द्वारा म.प्र. के विश्वविद्यालयों/महाविद्यालयों अभियांत्रिकी एवं चिकित्सा महाविद्यालयों में समन्वय सेल की स्थापना 1984 में की गई। इन प्रकोष्ठों का गठन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से संबंधित योजना/परियोजनाओं का प्रचार-प्रसार विश्वविद्यालय/ महाविद्यालय स्तर पर करने के लिए किया गया है। वर्ष 2006 में इस प्रकोष्ठ को महानिदेशक सचिवालय में समन्वय एवं नेटवर्किंग प्रकोष्ठ की स्थापना कर इस प्रकोष्ठ के कार्यक्षेत्र का विस्तार किया है। वर्तमान में 22 कोऑडीनेटर सेल मध्यप्रदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में कार्यरत है। विश्वविद्यालय, चिकित्सा

महाविद्यालय में प्रकोष्ठ तथा परिषद की स्थापना मद (म.प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी नेटवर्क) के अंतर्गत इस योजना हेतु बजट का प्रावधान रखा गया है।

2. समीक्षा/उपलब्धियॉ (2017-2018)

- मेथडोलॉजी फॉर प्रेजेंटेशन ऑफ हाई क्वालिटी रिसर्च प्रपोजल एवं विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों से नेटवर्किंग पर एक दिवसीय कार्यशाला दिनांक 16 जनवरी 2018 को आयोजित की गई। कार्यशाला में 14 विश्वविद्यालयों का प्रतिनिधित्व होकर 170 विद्वानों ने भाग लिया। इस कार्यशाला में प्रकोष्ठ के संचालन पर कई सुझाव प्राप्त हुए।
- परिषद के नेटवर्क के विस्तार के लिए सम्पूर्ण प्रदेश के विश्वविद्यालयों से सम्पर्क स्थापित कर लगभग 22 विश्वविद्यालय समन्वयकों की नियुक्ति की गई।
- नवनियुक्त समन्वयकों की परिषद कार्यालय में महानिदेशक महोदय के साथ जनवरी में बैठक आयोजित की गई।

3. उद्देश्य

- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विभिन्न विषयों में शोध, प्रयोग एवं जागरूकता से जुडे हुए प्रकल्प गतिविधियों का संचालन विश्वविद्यालयों के माध्यम से संचालित करना।
- विश्वविद्यालयों में विज्ञान दिवस कार्यक्रमों का आयोजन करना।
- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से संबंधित योजना/परियोजनाओं का प्रचार-प्रसार विश्वविद्यालय/ महाविद्यालय स्तर पर करना।

4. सहयोगी/सहभागी संस्थायें

म.प्र. के विश्वविद्यालय, तकनीकी विश्वविद्यालय, कृषि विश्वविद्यालय, उत्कृष्ट महाविद्यालय, मॉडल महाविद्यालय एवं अन्य शैक्षणिक संस्थानों, शोधार्थी एवं छात्र-छात्राएं ।

5. लक्ष्य

- समन्वयक प्रकोष्ठों को प्रभावी बनाना।
- सभी स्थापित प्रकोष्ठों में परिषद के कार्यक्रमों का विस्तार करना।
- क्षेत्र आधारित विकास के लिए नई तकनीक एवं परियोजना प्रस्तावों को प्रोत्साहन देना।
- विज्ञान आधारित दिवसों एवं भारतीय वैज्ञानिकों पर कार्यक्रमों का आयोजन।

6. कार्यक्रम विवरण

- राज्य के विकास में योगदान के लिए उपयुक्त विकास परियोजनाओं और नई तकनीक की अनुशंसा करना।
- परिषद् द्वारा विज्ञान प्रसार से संबंधित नेटवर्क को मजबूत करने में सहयोग प्रदान करना।
- अंतर्विभागीय संबंध स्थापित करना ।
- श्रृंखलाबद्ध तरीके से प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करना परिषद में उपलब्ध संसाधनों को विद्यार्थियों तक पहुँचाना।
- विज्ञान आधारित विषयों पर व्याखयानों का आयोजन।
- निर्धारित कार्यक्रमों के संचालन हेतु समस्त प्रकोष्ठों को अनुदान राशि का वितरण करना।
- प्रकोष्ठ की वार्षिक बैठक का आयोजन करना।
- प्रदेश के शेष बचे विश्वविद्यालयों में समन्वयक प्रकोष्ठ का गठन।
- बौद्धिक सम्पदा पर फाइलिंग एवं जागरूकता कार्यक्रम।
- राष्ट्रीय विज्ञान दिवस एवं तकनीकी दिवस पर कार्यक्रमों का आयोजन।
- शोधार्थी छात्रों एवं प्राध्यापकों को विज्ञान शोध गतिविधिओं हेतु प्रोत्साहित एवं पुरस्कृत करना।

7. समय सारिणी

प्रथम तिमाही	द्वितीय तिमाही	तृतीय तिमाही	चतुर्थ तिमाही
समस्त प्रकोष्ठों की बैठक का आयोजन करना। कार्यक्रमों के लिए प्रकोष्ठों को अनुदान राशि वितरित करना। तकनीक दिवस पर कार्यक्रमों का आयोजन (11 मई)। पेटेन्ट दिवस कार्यक्रम (24 अप्रैल)।	जल संरक्षण विषय पर व्याख्यान। सुदूर संवेदन तकनीक का प्रशिक्षण। प्रथम तिमाही के कार्यक्रमों की समीक्षा	विश्वविद्यालयों में स्थानीय मुद्दो पर चर्चा एवं उनका वैज्ञानिक समाधान। युवा वैज्ञानिक सम्मेलन हेतु प्रचार करना। परिषद स्तर पर उपकरणों पर आधारित कार्यशाला का आयोजन करना।	राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का आयोजन।

8. अपेक्षित परिणाम

प्रकोष्ठ के सक्रिय क्रियान्वयन के फलस्वरूप विश्वविद्यालयों से प्रत्यक्ष एवं क्रियाशील संपर्क स्थापित हो सकेगा। विज्ञान के आधारभूत शाखाओं में परियोजना प्रस्तावों के माध्यम से शोध को प्रोत्साहन मिलेगा। म.प्र. के उत्कृष्ट शोधार्थी अंतर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग ले सकेंगे एवं अपने अनुसंधान कार्य को उत्कृष्ट बना सकेंगे। परिषद् के सभी विश्वविद्यालय, चिकित्सा महाविद्यालय, महाविद्यालय जुड़ सकेंगे और अपने अनुसंधान एवं विज्ञान के क्षेत्रों का प्रचार-प्रसार कर सकेंगे। परिषद् विज्ञान के क्षेत्र में प्रचार-प्रसार एवं अनुसंधान को निचले स्तर तक कार्यान्वित कर सकेंगे। परिषद् के लिये बेहतर नेटवर्क की स्थापना हो सकेगी।

C निर्माण योजना

1. समीक्षा उपलब्धिया (2017-2018)

मुख्य द्वार निर्माण, टिश्यू कल्चर लैब ओबेदुल्लागंज नवीनीकरण, विज्ञान भवन में पारर्टीशन का कार्य, सीपीए एवं गौतम नगर आवासीय परिसर में नवीनीकरण कार्य हेतु पीडब्ल्यूडी को आदेश जारी कर राशि आबंटित की गई है।

2. समय सारणी

प्रथम तिमाही	द्वितीय तिमाही	तृतीय तिमाही	चतुर्थ तिमाही
• परिष्द मुख्यालय की छत पर सोलर प्लांट की स्थापना। • आडिटोरियम, 100 सीटर, 50 सीटर सभाग़हो में नवीनीकरण कार्य। • समस्त भवनों में टर्माइट टीटमेंट। • समस्त भवनों में अग्नि सुरक्षा गमन यंत्रों की स्थापना। • अजंता काम्पलेक्स में नवीनीकरण एवं पुताई का कार्य।	• परिष्द मुख्यालय की टूटी बाउन्ड्री वाल का निर्माण। • गेस्ट हाउस नवीनीकरण कार्य। • परिष्द मुख्यालय की टूटी सीवेज लाइनों का नवीनीकरण कार्य।	• ओबेदुल्लागंज केन्द्र में बाउन्डीवाल सुधारकार्य। • आवासीय भवनों में नवीनीकरण सुधार कार्य।	उर्जा विकास निगम से क्रय किये गये अधुरे निर्माण को पूर्ण कराया जाना।

D केन्द्र, राज्य एवं अन्य संस्थाओं द्वारा प्रायोजित परियोजनाएं

Projects sponsored by Govt. of India

S. No	Project Name	Project Cost (in Lakh)	Year	Sponsoring Agency
1	Application of Remote Sensing & GIS in Sericulture Development Phase-II	11.00	2016 ongoing	North East Space Applications Centre, Deptt. of Space, Govt. of India
2	Calibration and Validation Project	14.50	2015-16 ongoing	Space Application Centre, DoS, Ahmedabad
3	Promotion of Environmental Friendly Plasma Nitriding/Nitro-Carburizing Process for Waer and Corrison Resistance of Industrial Components.	97.84	2013-14 Ongoing	Department of Science & Technology (DST), Govt. of India, New Delhi
4	Land degradation aping 2nd Cycle on 1:50,000 scale	51.884	2017 Ongoing	National Remote Sensing Agency Hydrabad
5	Coordinated Horticulture Assessment & Management Using Geoinformatics (CHAMAN) Project	5.00	2016-17 Ongoing	Space Application Centre Ahmadabad, DOS, GOI
6	Drought Vulnerability Assessment of M.P. State	4.10	2016-17 Upto Jun 2017 Ongoing	National Remote Sensing Centre Hydrabad
7	Natural Resource Census (NRC) Landuse Land cover analysis 2015-16	83.75	2016 Ongoing	NRSC (ISRO)
8	IWRM based development plan for water security in four districts of Bundelkhand region in India	100.06	2016 Ongoing	National Institute of Hydrology, MOWR, GOI, Roorkee
9	"Mapping of High Fluoride Concentration Areas and Prevalence of Dental Fluorosis among Primary and Secondary Schools Children's of District Sheopur (A scheduled tribe district), Madhya Pradesh)"	16.96 Lakhs	Three Years (2016-19) Ongoing	Department of Science and Technology (DST-NRDMS), GOI, New Delhi

S. No	Project Name	Project Cost (in Lakh)	Year	Sponsoring Agency
10	Empowering Panchayat Raj Institutions Spatially (EPRIS)	122.26	2018-19	National Remote Sensing Centre, Hydrabad
11	Monitoring and evaluation of IWMP projects	110.30	2018-22	National Remote Sensing Centre, Hydrabad
12	Use of Chandrayaan-1 HySI data to understand the spectral signature/lunar rocks	14.80	2018-2020	SAC, Ahmedabad
13	National Wasteland 10K	90.00	2018-19	NRSC, Deptt. of Space
14	Pradhanmantri Gramin Sarak Yojna	110.00	2018-19	NIRD, GoI and NRSC, Deptt. of Space

Projects sponsored by State Govt. Dept.

S No	Project Name	Project Cost (in Lakh)	Year	Sponsoring Agency
1	Forecasting Agri-cultural output using Space, Agro meteorology and Land-based observations (FASAL-MNCFC)	10.00	2014-15 ongoing	Department of Farmer Welfare and Agriculture Development, Madhya Pradesh.
2	Integrated spatial Digital Planning support system for Tribal Area Badwani Distt MP	35.30	2017	Unicef – Planning Commission
3	Bhopal Capital Regional (10 K)	43.58	2016 ongoing	Town & Country Planning
4	Dial 100 and CCTV		2014 ongoing	M.P. Police
5	Remote Sensing & GIS Based Planning for Watershed Development Activities in M.P.	160.38	2015 ongoing	RGMWM, P&RD, Govt of MP
6	GIS based web portal of "State Disaster Command, Response and Monitoring System" SDCRMS for Home Guard, Civil Defense and SDERF	5.00 as seed money	2015 ongoing	Director General, Home Guard, SDERF, Civil defense, Ministry of Home, Govt. of M.P.
7	Development of android based mobile application for State Election Commission	2.60	2016 (on going)	Madhya Pradesh State Election Commission
8	Mapping of Biodiversity and Development of GIS Based Web Portal for Madhya Pradesh State Biodiversity Board	20.40	2017 (on going)	Madhya Pradesh State Biodiversity Board Kisan Bhawan, Arera Hills, Bhopal - 462011
9	Development of GIS enabled Web based Public Warning and Broadcast System	Internal as technical support	2017 (on going)	CEO, MAPIT, Department of Science & Technology, Govt. of M.P.
10	Preparation of remote Sensing GIS based thematic maps of Panna Amarkantak Biosphere	13.87	2018-19	EPCO, Bhopal